1984 - 85

11

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसन्धान परिषद

Dr. S... Singh
(आयु०)
Research Officer (Ay)
C.C.R.A.S., New Delhi

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार)

वार्षिक प्रतिवेदन
1984 - 85
एवं लेखापरीक्षा विवरण

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसन्धान परिषद

(11)

वार्षिक प्रतिवेदन १९८४-८५

एवं

लेखापरीक्षा विवरण

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार)
नई दिल्ली

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
I	प्रस्तावना	1—2
II	प्रशासनिक प्रतिवेदन	3—17
III	तकनीकी प्रतिवेदन	23—238
(अ)	आयुर्वेद	
1.	संस्थानों/केन्द्रों/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर चिह्न	18—22
2.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एवं स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम	25—61 63—76
3.	औषध अनुसंधान	77—129
	(क) औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण	77—85
	(ख) भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन	87—89
	(ग) औषध पादप कृषि कार्यक्रम	91—100
	(घ) रासायनिक अनुसंधान अध्ययन	101—106
	(ङ) भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन	107—116
	(च) भैषजिक अनुसंधान	117—125
	(छ) कस्तूरी मृग वंश वृद्धि कार्यक्रम	127—129
4.	वाङ्मय एवं आयुर्विज्ञान इतिहास अनुसंधान	131—136
5.	परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम	137—142
6.	प्रकाशन/संगोष्ठियों में सहयोग	143—168

क्रमशः

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
(ब)	सिद्ध	
1.	संस्थानों/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर चिह्न	171
2.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एवं	173—198
	स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम	199—201
3.	औषध अनुसंधान	
	(क) औषध वानस्पतिक अनुसंधान	203—206
	(ख) भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन	207—210
	(ग) रासायनिक अध्ययन	211—214
	(घ) भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन	215—223
	(ङ) औषध मानकीकरण अनुसंधान	225—228
4.	वाङ्मय अनुसंधान	229—231
5.	प्रकाशन/संगोष्ठियों में सहयोग	233—238
VI	आभार	239
V	लेखापरीक्षा विवरण	(वार्षिक प्रतिवेदन के परिशिष्ट को देखें)

प्रस्तावना

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् ने इस वर्ष में निदान-चिकित्सात्मक, औषध अनुसंधान, औषध पादप गर्भ निरोधक औषधियों का परीक्षण, आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान सहित स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य-रक्षा-अनुसंधान तथा वाङ्मय और आयुर्विज्ञान इतिहास अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किया। जैविक-चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में परियोजना एवं कार्यक्रमों को नए बीस-सूत्री कार्यक्रम के अनुसार ग्रामीणोन्मुखी बनाकर नई दिशा प्रदान की गई जिससे कि अनुसंधान की उपलब्धियों का लाभ समस्त जनसाधारण को पहुंचाया जा सके। परिषद् ने राष्ट्रीय महत्व के रोगों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न रोगों पर जिनको राष्ट्रीय महत्व के आधार पर चुना गया है उन पर निदान-चिकित्सात्मक परियोजनाएं निर्धारित की हैं जिससे कि अनुसंधान कार्य द्वारा राष्ट्रीय आवश्यकताओं एवं हितों की पूर्ति की जा सके। परिषद् के संस्थानों/केन्द्रों/एककों ने बड़े पैमाने पर रोगों पर अनुसंधान कार्य किया जिनमें पक्षाघात, मधुमेह, अपस्मार, परिणामशूल, ग्रहणी, मेदोरोग, अश्मरी, श्वित्र, कृमिरोग, त्वक्रोग, उन्माद, संधिवातशूल, विषमज्वर तथा श्लीपद और मलेरिया जैसे रोग सम्मिलित हैं। सिद्ध चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत पुत्तुनोई, कलंजपाड़ाई, संधिवातवाद-शूलाई, वलिगुन्मम, मंजलकामलाई, वेंकुट्टम, मीरामिु, कक्काई वलिप्पु आदि जैसी नैदानिक-व्याधियों पर अनुसंधान कार्य किया गया। परिषद् ने अपने संस्थानों/केन्द्रों में आयुष-64 का विषमज्वर से पीड़ित रोगियों पर परीक्षण किए हैं। प्रतिवेदन के आगामी पृष्ठों से यह ज्ञात किया जा सकता है कि जो अध्ययन किए गए वे उत्साहवर्द्धक रहे है और इससे बड़े पैमाने पर इस औषध को प्रयोग में लाने का मार्ग प्रसस्त होता हैं। निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान के अतिरिक्त स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम पर भी विशेष ध्यान दिया गया। इन कार्यक्रमों का लक्ष्य स्थानीय स्वास्थ्य समस्याओं से संबंधित विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करना ही नहीं, अपितु वहां के लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली चिकित्सा विधि के विषय में ज्ञान प्राप्त करना और उन्हें उपयुक्त विधि एवं माध्यमों के विषय में जानकारी देना भी हैं। इन परियोजनाओं के दल स्थानीय लोगों से घनिष्ठ संबंध रखते हैं और स्वास्थ्य के सिद्धांतों से उन्हें शिक्षित

करते हैं। प्रतिवेदन से यह भी अवगत किया जा सकता है कि इन दलों द्वारा सामान्य रोगों की पहचान तथा स्थानीय रूप से उपलब्ध औषधियों एवं अन्य संसाधनों के उपयोग करने के विषय में स्थानीय लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से अनेक ग्रामों एवं सामुदायिक स्तरों पर सामूहिक विचार-विमर्श किया।

परिषद् ने औषध-वानस्पतिक सर्वेक्षण, संबद्ध-चिकित्सा विज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रमों को भी संपादित किया जिनमें भेषज अभिज्ञानीय, रासायनिक एवं भेषजगुण-विज्ञानीय अध्ययन तथा भारत सरकार की भेषज संहिता में सम्मिलित आयुर्वेदीय औषधियों के लिए मानक निर्धारित करने से सम्बन्धित अध्ययन भी सम्मिलित हैं। परिषद् ने परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम के विषय में विशेष ध्यान दिया है। इन क्षेत्रों में किए गए अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप उपयुक्त, मितव्ययी एवं औषध पादप से निर्मित ऐसी स्वीकार्य औषध निकालने की आशा है जिसमें प्रजननरोधी गर्भनिरोधक क्षमता होगी। कुछ औषध पादप योगों से उत्साहवर्द्धक परिणाम मिले हैं और परिषद् विशेष रूप से इस प्रकार के राष्ट्रीय हित एवं महत्व के विषय में कोई निश्चित अभिमत निर्धारित करने से पूर्व इसके विषय में विस्तृत रूप से अध्ययन करना आवश्यक समझती है। परिषद् "बंभौरी" नामक एक लोक प्रसिद्ध औषध का गहन परीक्षण अध्ययन कर रही है। इसका उद्देश्य परिवार कल्याण कार्यक्रम में, इसकी प्रभाव-क्षमता का मूल्यांकन करना है, क्योंकि ज्ञात हुआ है कि अनेक आदिवासी दीर्घ-कालीन प्रजननरोधी प्रभाव के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

परिषद् इस वर्ष में आयुष-64 के व्यापारिक उपयोग को बढ़ाने में सफल रही है। परिषद् ने अभी कुछ दिनों में **सोलेनम ट्राईलोबेटम** के पत्रों से **सोलामरीन** को वियुक्त करने की प्रक्रिया का अन्वेषण किया है। परिषद् ने त्वक् विकारों एवं जठर विकारों में लाभकारी कतिपय औषध-योगों के एकस्व प्रस्तुत किए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में किए गए अनुसंधान कार्यों का विवरणात्मक उल्लेख आगामी पृष्ठों में किया गया है।

शिवकुमार मिश्र

दिनांक 13.3.1986

(शिव कुमार मिश्र)
निदेशक

प्रशासनिक प्रतिवेदन

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् 1860 के संस्था पंजीकरण अधिनियम 21 के अधीन 30 मार्च, 1978 को पंजीकृत है। परिषद के नियम-विनियमों के नियम 19 के अन्तर्गत शासी निकाय की पुर्नस्थापना 3 मार्च, 1984 को की गई। 31 मार्च, 1985 तक इस प्रतिवेदित वर्ष में इस संस्था तथा शासी निकाय के निम्नलिखित सदस्य थे :—

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसधान परिषद संस्था और शासी निकाय के सदस्य :

1. अध्यक्ष	:	श्री बी. शंकरानन्द, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्री (12/84 तक)।
	:	श्रीमती मोहसिना किदवई, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्री (1.1.85 से)।
2. उपाध्यक्ष	:	श्रीमती मोहसिना किदवई, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मन्त्री (13.8.84 तक)।
	:	श्री योगेन्द्र मकवाना, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार
	:	कल्याण राज्य मंत्री (14.1.84 तक)।
3-5 शासकीय सदस्य	:	1. श्री सी. आर. वैद्यनाथन, सचिव, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय (2/85 तक)।

: श्रीमती सरला ग्रेवाल, सचिव, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय (14.2.85 तक)।

: 2. श्री एस. के. आलोक, संयुक्त सचिव, प्रभारी भारतीय चिकित्सा पद्धति, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय (29.1.85) से

: 3. श्री आर. एम. भार्गव, संयुक्त सचिव (वित्त सलाहकार) केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय।

6-16 अशासकीय सदस्य : 1. प्रो. वी. जे. ठाकर

2. आचार्य प्रियव्रत शर्मा

3. डा. एस. टी. गूजर

4. वैद्य बृहस्पतिदेव त्रिगुणा

5. वैद्य के. एस. वारियर

6. वैद्य नानक चंद शर्मा

7. डा. अख्तर हुसैन

8. डा. एन. के. भिडे

9. डा. एस. एस. घटोसकर

10. डा. वी. सुब्रमण्यन

11. डा. जे. आर. कृष्णमूर्ति

17. निदेशक, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर : डा. स्वामी राम प्रकाश

18. निदेशक, राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान/केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान : रिक्त

19. सदस्य-सचिव : डा. वी. एन. पाण्डेय (14.12.84 तक)
: वैद्य शिव कुमार मिश्र (14.12.84 अपराह्न से)

इस वर्ष शासी निकाय की केवल एक बैठक 31 जुलाई, 1984 को सम्पन्न हुई।

शासी निकाय की कार्यवाही

छठी बैठक—31-7-1984

शासी निकाय की उपर्युक्त बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषयों पर स्वीकृति दी गई :—

1. संशोधित प्राक्कलन 1981-82 और बजट प्राक्कलन 1982-83 पर निम्नलिखित रूप से स्वीकृति दी गई—

	संशोधित प्राक्कलन 1981-82	बजट प्राक्कलन 1982-83
	(रुपये लाखों में)	
आयोजना	118.80	148.00
आयोजना-भिन्न	110.23	116.25
परिवार कल्याण अनुसंधान-योजना	7.72	9.77

2. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मद्रास की भेषज निर्माणशाला की छत के निर्माण कार्य हेतु केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा वास्तविक आकलन रु० 34,000 के स्थान पर संशोधित आकलन रु० 42,000 की स्वीकृति दी गई ।

3. वित्त समिति की 8वीं, 9वीं एवं 10वीं बैठकें जो क्रमश: 23 अप्रेल, 1982, 17 दिसम्बर, 1982 एवं 20 मई, 1983 को सम्पन्न हुई थीं उसकी संस्तुतियों पर स्वीकृति प्रदान की गई ।

4. जवाहरलाल नेहरू, आयुर्वेदीय औषध पादप उद्यान एवं उद्भिदालय, पूना के भवन निर्माण कार्य हेतु जो संशोधित आकलन रु० 8,78,264 की आवश्यकता थी उसकी स्वीकृति दी तथा उद्यान के प्रारम्भिक आकलन रु० 1,32,328 की स्वीकृति अतिरिक्त रूप से भवन निर्माण कार्य हेतु दी ।

5. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (आयुर्वेद), हस्तिनापुर एवं संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत हेतु क्रमश: रु० 63,000 और रु० 91,252 की स्वीकृति भवन निर्माण संबंधी कार्यों हेतु दी ।

6. परिषद के मुख्यालय एवं अन्य परिषदों के भवन निर्माण हेतु प्रदत्त स्थान की चारदीवारी करने के लिए रु. 1,00,000 अनुमानित व्यय की स्वीकृति प्रदान की गई ।

7. परिषद् के वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1982-83 के साथ ही वार्षिक लेखा और लेखा परीक्षा विवरण पर विचार कर अध्यक्ष, शासी निकाय को कुछ आवश्यक संशोधन के साथ स्वीकृत करने हेतु अधिकार दिया ।

8. अनुदान प्रदत्त अनुसंधान इकाई, आमला कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केन्द्र, त्रिचूर को 26.3.1985 तक के लिए अनुदान राशि की स्वीकृति प्रदान की गई ।

9. देशी गर्भनिरोधक औषध की सक्रियता/प्रभावकारिता ज्ञात करने हेतु वर्ष 1984-85 में पी. जी. आई., चंडीगढ़ को अनुदान राशि की स्वीकृति दी गई ।

10. रोटरी क्लब, दिल्ली (पश्चिमी) द्वारा केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को दान में दी गई चल एक्स-रे मशीन हेतु स्वीकृति प्रदान की गई ।

11. भवन निर्माण हेतु अग्रिम ऋण राशि को देना प्रारम्भ करने हेतु स्वीकृति प्रदान की गई ।

12. परिषद के अन्तर्गत विभिन्न श्रेणियों के पदों के भर्ती नियमों की स्वीकृति प्रदान की गई।

13. भारत सरकार के आदेशानुसार गंगटोक में कार्यरत कर्मचारियों हेतु निःशुल्क आवास किराये की स्वीकृति प्रदान की गई।

14. केन्द्रीय सतर्कता आयोग के अधिकार क्षेत्र को परिषद् के कर्मचारियों पर भी लागू करने की स्वीकृति दी गई।

15. वर्ष 1980-81 एवं 1981-82 के वार्षिक प्रतिवेदनों को लेखा परीक्षा विवरणों सहित स्वीकार किया गया।

वित्त समिति :

इस प्रतिवेदित वर्ष में स्थाई वित्त समिति के निम्नलिखित सदस्य थे :—

1.	संयुक्त सचिव, प्रभारी भा.चि.प., स्वा. एवं परि.कल्या.मन्त्रालय	: श्री एस. के. आलोक
2.	(अ) संयुक्त सचिव (वित्त सलाहकार) : स्वा. एवं परि.कल्या.मन्त्रालय	श्री आर. एम. भार्गव (31.7.1984 तक)
	(ब) उप-सचिव (मिश्रित वित्त) स्वा. एवं परि.कल्या.मन्त्रालय	: श्री आर. के. जिन्दल (31.7.1984 से)
3.	आयुर्वेद का एक तकनीकी सदस्य	: —
4.	सिद्ध चिकित्सा पद्धति का एक तकनीकी सदस्य :	—
5.	परिषद-निदेशक	: डा. वी. एन. पाण्डेय (14.12.1984 तक)
		: वैद्य एस. के. मिश्र (14.12.1984 अपराह्न से)

प्रतिवेदित वर्ष में वित्त समिति की बैठक नहीं बुलाई जा सकी, क्योंकि परिषद के आयुर्वेद एवं सिद्ध के तकनीकी सदस्यों की नियुक्ति, शासी निकाय के पुनर्गठन होने से विचाराधीन थी।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति :

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक केवल एक बार 16.10.1984 को सम्पन्न हुई जिसमें परिषद के अन्तर्गत राजभाषा हिंदी के विकास हेतु किए गए कार्यों की समीक्षा की गई और निरन्तर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने हेतु उपयुक्त संस्तुतियां की गईं।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद) दिसम्बर, 1984 तक :

1.	डा. एस. टी. गूजर	:	अध्यक्ष
2.	वैद्य सीताराम मिश्र	:	सदस्य
3.	वैद्य के. एम. वारियर	:	सदस्य
4.	डा. ए. जे. बक्शी	:	सदस्य
5.	डा. वाई. के. सरीन	:	सदस्य
6.	डा. एस. एस. गुप्ता	:	सदस्य
7.	डा. आर. एम. वर्मा	:	सदस्य
8.	परिषद निदेशक	:	सदस्य-सचिव

परिषद् के अध्यक्ष (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्री) द्वारा दिनांक 31.12.1984 से वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद) का पुनर्गठन किया गया और समिति में निम्नलिखित सदस्य सम्मिलित हैं :—

1.	डा. एस. टी. गूजर	:	अध्यक्ष
2.	वैद्य नानक चंद शर्मा	:	सदस्य

3.	वैद्य बृहस्पतिदेव त्रिगुणा	:	सदस्य
4.	वैद्य पी. के. वारियर	:	सदस्य
5.	वैद्य के. सदाशिव शर्मा	:	सदस्य
6.	डॉ. चन्ना बासप्पा	:	सदस्य
7.	वैद्य एस. के. मिश्र	:	सदस्य
8.	डा. एस. के. जैन	:	सदस्य
9.	डा. ए. वी. राम राव	:	सदस्य
10.	डा. आर. एम. वर्मा	:	सदस्य
11.	डा. एन. के. भिडे	:	सदस्य
12.	आचार्य प्रियव्रत शर्मा	:	सदस्य
13.	डा. एस. पी. किल्लवाडेकर	:	सदस्य
14.	परिषद निदेशक	:	सदस्य-सचिव

इस प्रतिवेदित वर्ष में वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की एक बैठक 13 एवं 14 मार्च, 1985 को हुई।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) :

1.	डा. वी. रघुपति	:	अध्यक्ष
2.	डा. जे. आर. कृष्णमूर्ति	:	सदस्य
3.	डा. एस घोषाल	:	सदस्य
4.	डा. आर. सुब्रमण्यन	:	सदस्य
5.	परिषद निदेशक	:	सदस्य-सचिव

इस प्रतिवेदित वर्ष में वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) की एक बैठक दिनांक 28 एवं 29.11.1984 को सम्पन्न हुई ।

समितियों ने परिषद् के अन्तर्गत विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों/परियोजनाओं का मूल्यांकन किया तथा आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान किया ।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद) की कार्यवाही

13वीं बैठक दिनांक 13-14 मार्च, 1985

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद) द्वारा इस प्रतिवेदित वर्ष में मुख्य रूप से सम्पादित कार्यों को नीचे दिया गया है :—

1. कार्यरत परियोजनाओं की समीक्षा ।

2. 7वीं पंचवर्षीय योजना काल के लिए प्रस्तावित अनुसंधान योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की ।

3. परिषद के सम्बद्ध कार्यक्रम अधिकारियों को रोगों के प्रारम्भिक शब्दों का अध्ययन कर उनकी शब्दावली देने हेतु कहा गया ।

4. छः और आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा परियोजनाओं की स्थापना के लिए संस्तुति की गई जिसमें विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश), दुर्ग (गुजरात), लाहौल और स्पीती (हिमाचल प्रदेश), नीलाम्बुर, मालापुरम (केरल), दार्जिलिंग (प० बंगाल) और रायगढ़ (उड़ीसा) हैं ।

5. संगोष्ठी/व्याख्यानमाला जैसे कार्यक्रमों को समय-समय पर आयोजित करने की संस्तुति की गई ।

6. परिषद के विभिन्न केन्द्रों में निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान विषयों/रोगों पर कार्य करने हेतु सूची को अंतिम रूप दिया गया ।

7. अनुसंधानयुक्त सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण कार्यक्रम, सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम, आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के कार्यान्यवम पर निर्णय किया गया ।

8. सामान्य उपलब्ध औषध पादपों की एक लघु-पुस्तिका जिसमें हिंदी, अंग्रेजी एवं स्थानीय भाषाओं में औषध पादपों के नाम हैं उनके प्रकाशन की संस्तुति की गई।

9. स्थानीय आहार स्वभावों के अनुसार विभिन्न रोगों के लिए आहार सुनिश्चित करने के लिए संस्तुति की गई।

10. स्थानीय लोगों हेतु सामान्य रोग उपचार के लिए आमतौर पर पाई जाने वाली औषधियों के उद्यान की स्थापना की संस्तुति की गई।

11. वैद्य नानक चंद शर्मा के सहयोग से केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पंजाबीबाग, नई दिल्ली में रस शास्त्र पर अनुसंधान करने हेतु एक परियोजना की संस्तुति की गई।

12. कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास में आयुर्वेदिक कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने की संस्तुति की गई।

13. समयबद्ध पदोन्नति की संस्तुति की गई जिससे प्रगतिरोध दूर हो सके और परिणामस्वरुप उत्पन्न नैराश्य समाप्त हो सके।

14. चरक एव सुश्रुत के आधार पर उद्भिदालय में औषध पादपों के वर्गीकरण की संस्तुति की गई।

15. जवाहरलाल नेहरु आयुर्वेदीय औषध पादप उद्यान एवं संग्रहालय, पूना की रजत जयंती समारोह मनाने हेतु संस्तुति की गई।

16. संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत के कस्तूरी मृग फार्म हेतु चार चौकीदार के पदों के सृजन की संस्तुति की गई।

17. बंभौरी, नीम तैल, आयुष ए.सी.-4, जपाकुसुम, रक्तचित्रक, पिप्पल्यादि योग और विडंगादि योगों पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण सतत् रखने के लिए संस्तुति की गई।

18. अष्टांग संग्रह एवं सहस्रयोग के समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशन के लिए संस्तुति की गई।

19. प्राथमिकता के आधार पर सारभेन्द्र रत्नावली नामक पुस्तक के प्रकाशन की भी संस्तुति की गई।

20. प्रलेख केन्द्र को बृहतत्रयी के अंतर्गत सभी पाण्डुलिपियों को विभिन्न उपलब्ध माध्यमों द्वारा एकत्र करने की संस्तुति की गई।

21. प्रलेख केन्द्र, नई दिल्ली एवं भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद, के पास जो अप्रकाशित पाण्डुलिपियां है उनकी विषयवार सूची बनाने की संस्तुति की गई।

22. भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची को पुनर्वीक्षितकर अब तक की पाण्डुलिपियों को सम्मिलित करने के पश्चात् प्रकाशन करने की संस्तुति की गई।

23. प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग को लंदन में उपलब्ध शब्दचन्द्रिका को प्राप्त करने के लिए संस्तुति की गई।

24. आचार्य पी.वी. शर्मा के अधीन चरक संहिता नामक पुस्तक का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने हेतु एक परियोजना की संस्तुति की गई।

25. "हैण्ड बुक ऑफ डोमेस्टिक मैडिसिन एंड कामत आयुर्वेदिक रिमेडीज" नामक पुस्तिका को हिन्दी में तैयार करने की संस्तुति प्रदान की गई।

26. आयुर्वेद चिंतामणि, आयुर्वेद कल्पद्रुम, रस-चण्डासु को प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशन के लिए संस्तुति प्रदान की गई।

27. प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, नई दिल्ली एवं भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद के पुनर्गठन की संस्तुति की गई।

28. चिकित्सीय एवं अ-चिकित्सीय कार्यों में बिना भेदभाव किए हुए जो व्यक्ति आयुर्वेद चिकित्सक की योग्यता रखता हो तो उसे चिकित्सा अभ्यास न करने का भत्ता प्रदान करने की संस्तुति की।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) की कार्यवाही

नवम् बैठक 28-29 नवम्बर, 1984

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) की बैठक की मुख्य संस्तुतियां निम्नलिखित हैं :—

1. फ.मैसी के लिए तीन अतिरिक्त मशीनों की खरीद के साथ-साथ अतिरिक्त पदों की भी संस्तुति की गई।

2. पलायमकोट्टई में क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना हेतु संस्तुति की गई ।

3. सिद्ध चिकित्सा पद्धति से संबंधित वर्ष 1982-83 एवं 1983-84 के वार्षिक प्रतिवेदन के प्रारूप को स्वीकृति दी गई ।

4. सिद्ध चिकित्सा पद्धति से संबंधित 7वीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्ताव की स्वीकृति दी गई ।

5. परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत एक निदान-चिकित्सात्मक और एक रसायन-भेषजनुणकर्म विज्ञानीय अनुसंधान एकक की स्थापना हेतु संस्तुति की गई ।

6. तीन नई समयबद्ध अनुदान पूरित इकाइयों की स्थापना के कार्यान्वयन की संस्तुति की गई ।

7. सिद्ध चिकित्सा पद्धति का एक वानस्पतिक उद्यान दक्षिण में स्थापित करने की संस्तुति की गई ।

8. विभिन्न अनुसंधान संस्थानों एककों में कुछ अतिरिक्त पदों के सृजन की संस्तुति की गई ।

केन्द्रीय परिषद् की कार्यरत परियोजनाएँ :

परिषद के अन्तर्गत 11 केन्द्रीय/क्षेत्रीय अनुसन्धान संस्थान, 10 क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्र, 34 अनुसंधान एकक, 5 आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान परियोजनाएँ, एक प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, 12 परिवार कल्याण अनुसंधान एकक एवं एक आमची चिकित्सा पद्धति अनुसंधान परियोजना तथा इसके अतिरिक्त दो सिद्ध के अनुसन्धान संस्थान तथा नौ अनुसन्धान एकक कार्यरत हैं ।

बजट प्रावधान :

निम्नलिखित तालिका में परिषद के बजट सम्बन्धी प्रावधानों को दर्शाया गया है :

बजट शीर्ष	सं. प्राक्कलन 1983-84	ब. प्राक्कलन 1984-85	सं. प्राक्कलन 1984-85	वास्तविक-व्यय 1984-85
		(रु. लाखों में)		
आयोजना	159.60	220.00	205.00	204.36
आयोजना-भिन्न	142.30	171.69	145.05	169.33
प.क.अनु.परियोजना	8.87	12.28	11.78	8.64

लेखा-खातों के लेखा परीक्षा विवरण :

परिषद के 1 अप्रैल, 1984 से 31 मार्च, 1985 तक की अवधि के वर्ष 1984-85 के लेखों के लेखा परीक्षा निदेशक, केन्द्रीय राजस्व के कार्यालय द्वारा लेखा परीक्षा किए गए लेखों के विवरण वार्षिक प्रतिवेदन के परिशिष्ट में दिए गए हैं।

उल्लेखनीय उपलब्धियां एवं उच्चाधिकारियों का अभ्यागमन

1. डा. के. के. पुरुषोत्तमन, प्रभारी सहायक निदेशक, कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयु. भेषज अनुसंधान संस्थान, मद्रास द्वारा आयुर्वेद के क्षेत्र में अर्बुद-रोधी औषध के वियुक्त करने हेतु महत्वपूर्ण कार्य के फलस्वरूप श्री हरिओम आश्रम प्रेरित झंडु भट्टजी स्मारक आयुर्वेदिक अनुसंधान ट्रस्ट के सौजन्य से गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, जामनगर द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

2. केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के अन्तर्गत 11 अप्रैल 1984 को जिला सुबनसिरी (अरुणाचल प्रदेश) के जीरो नामक स्थान पर आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना का उद्घाटन अरुणाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्री ताडक दुलम द्वारा किया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता श्री एस. के. सरीफ, उप-आयुक्त, सुबनसिरी जनपद ने किया। इस समारोह में जनपद के अन्य गणमान्य अधिकारियों के साथ ही कुछ विधान सभा सदस्य भी सम्मिलित हुए।

3. मई, 1984 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा आयोजित स्वास्थ्य एक्सपो प्रदर्शनी में जवाहरलाल नेहरू आयुर्वेदिक औषध पादप उद्यान एवं उद्भिदालय, पूना द्वारा एक आकर्षक प्रर्शनी का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र सरकार के शिक्षा मन्त्री भाई सरवन्तु इस प्रदर्शनी के प्रतिदर्शों को देख कर बहुत प्रभावित हुए। निदेशक आयुर्वेद-महाराष्ट्र ने परिषद के संस्थानों द्वारा भाग लेने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। 'एक्सपो-84' में सबसे अच्छी प्रदर्शनी लगाने के लिए परिषद को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

4. 6 तथा 8 जून, 1984 को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के भारतीय चिकित्सा पद्धति के निदेशक श्री टी. के. कामिला तथा सलाहकार वैद्य शिव कुमार मिश्र द्वारा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर तथा उसके मंगलियावास (अजमेर जनपद) के गुग्गुलु फार्म का निरीक्षण किया। उन्होंने संस्थान द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा भी की। श्री कामिला ने परिषद् द्वारा प्रकाशन हेतु तैयार "जन-श्रुति औषध दावे" पुस्तिका, जो समस्त भारत से एकत्र कर बनाई गई, उसकी प्रशंसा की।

5. भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद द्वारा गुंटूर जनपद के मलका-पुरम नामक स्थान पर प्राचीन अस्पताल एवं मठ के अवशेषों का पता लगाया गया जिससे इतिहास में वर्णित आयुर्विज्ञान के इतिहास की जानकारी मिल सकती है।

6. डा. सी. ओ. अकेरेले, कार्यक्रम प्रबंधक, परम्परागत चिकित्सा पद्धति, विश्व-स्वास्थ्य संगठन, प्रधान कार्यालय, जेनेवा ने गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर में कार्यरत परिषद की चलचिकित्सा अनुसंधान एकक की कार्यप्रणाली का निरीक्षण किया।

7. श्री के. आर. नारायणन, केन्द्रीय योजना राज्य मन्त्री, श्री के. शंकर नारायण, केरल राज्य के भूतपूर्व मन्त्री एवं अन्य स्थानीय उच्चाधिकारियों सहित 23 फरवरी, 1985 को भारतीय पंचकर्म संस्थान चेरुतुरुति पहुंचे। मन्त्री महोदय ने संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों की सराहना की।

8. श्रीलंका सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री, श्री डब्ल्यू. जे. एम. लोकुबन्दरा ने विश्व-स्वास्थ्य संगठन के पारम्परिक चिकित्सा पद्धति के विशेषज्ञों के साथ केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, पंजाबी बाग, नई दिल्ली का निरीक्षण किया। सदस्यों ने संस्थान में चल रहे कार्यक्रमों में विशेष अभिरुचि दिखाई। इसके साथ ही साथ उन्होंने मुख्यालय एवं संस्थान के अनुसंधानकर्ताओं से अनुसंधान विषयों पर गहन विचार-विमर्श भी किया।

9. 11 एवं 12 मार्च, 1985 को प्रमुख कार्यालय में आयुर्वेद एवं सिद्ध के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों के वरिष्ठ अधिकारियों की एक दो दिवसीय बैठक संपन्न हुई जिसमें वर्तमान कार्यक्रमों की समीक्षा एवं सातवीं पंचवर्षीय योजना के अनुसंधान कार्यक्रमों को निश्चित करने हेतु विस्तृत रूप से विचार-विमर्श किया गया।

परिषद की सेवाओं में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति का आरक्षण एवं उनके लिए कल्याणकारी कार्यक्रम ।

भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जाति के लिए सेवाओं में आरक्षण के लिए जो मार्ग दर्शन दिये गये हैं उनका परिषद द्वारा अनुपालन किया जा रहा है। परिषद द्वारा सभी कर्मचारियों की श्रेणीबद्ध-क्रम से सूची बनाई गई है जिस में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति हेतु चयन /प्रोन्नति के लिए सख्ती से नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। परिषद में 1-1-1985 तक कुल कर्मचारियों की संख्या 1,543 थी, जिसमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति का आरक्षण निम्न प्रकार है :—

वर्ग	कुल कर्मचारियों की संख्या	अनुसूचित जाति	कुल कर्मचारियों का प्रतिशत	अनुसूचित जन-जाति	कुल कर्मचारियों का प्रतिशत
अ (प्रथम-श्रेणी के निम्न-स्तर तक)	122	4	4.8%	—	—
ब.	118	6	5.08%	1	0.35%
स.	660	61	9.24%	12	1.82%
द.	643	203	31.57%	39	6.06%
योग	1,543	274	17.75%	52	3.37%

आदिवासी क्षेत्रों में परिषद द्वारा आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान एककों की स्थापना की गई है। इसके अतिरिक्त बहुत से अनुसंधान केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किये गये हैं। इन केन्द्रों/संस्थानों के माध्यम से तथा चल-चिकित्सा अनुसंधान/परिवार कल्याण कार्यक्रम, संस्थानों/केन्द्रों के बहिरंग रोगी विभाग/अंतरंग रोगी विभाग के माध्यम से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जाति के लोगों की चिकित्सा राहत एवं आकस्मिक चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। परिषद के बजट में आदिवासी एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन-जाति के हितों के लिए विशिष्ट बजट का प्रावधान किया गया है।

परिषद् के तत्वावधान में कार्यरत अनुसंधान परियोजनाओं के लिए प्रयुक्त संकेत चिह्न

क्र. सं.	संस्थान/केन्द्र/एकक का नाम	संकेताक्षर चिह्न
1	2	3
1.	केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, दिल्ली	के.अनु.सं.दि.
2.	केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर	के.अनु.सं.भु.
3.	भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला	भा.का.चि.सं.प.
4.	भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति	भा.पं.सं.चे.
5.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता	क्षे.अनु.सं.क.
6.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटना	क्षे.अनु.सं.प.
7.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, लखनऊ	क्षे.अनु.सं.ल.
8.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर	क्ष.अनु.सं.ग्वा.
9.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर	क्षे.अनु.सं.जय.
10.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जूनागढ	क्षे.अनु.सं.जू.
11.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम	क्षे.अनु.स.त्रि,
12.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर	क्षे.अनु.के.ई.
13.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, गौहाटी	क्षे.अनु.के.गौ.
14.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, गंगटोक	क्षे.अनु.के.ग.

1	2	3
15.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, जोगिन्द्रनगर/मण्डी	क्षे.अनु.के.जो/म.
16.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, जम्मू	क्षे.अनु.के.ज.
17.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, हस्तिनापुर	क्षे.अनु.के.ह.
18.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, झांसी	क्षे.अनु.के.झां.
19.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, नागपुर	क्षे.अनु.के.ना.
20.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, विजयवाडा	क्षे.अनु.के.वि.
21.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, बंगलौर	
22.	चल निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, जामनगर	च.नि.चि.अनु.ए.वा.
23.	चल-निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, वाराणसी	च.नि.चि.अनु.ए.वा.
24.	डा. ए. लक्ष्मीपति भारतीय चिकित्सा अनुसंधान एकक, मद्रास	डा.ए.ल.भा.चि.अनु.ए.म.
25.	आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलौर	आयु.अनु.ए.बं.
26.	नैदानिक अनुसंधान एकक (आयु), हैदराबाद	नै.अनु.ए.है.
27.	नैदानिक अनुसंधान एकक (आयु.), कोट्टाकल	नै.अनु.ए.को.
28.	मिश्रित औषध अनुसंधान एकक (आयु. एवं आधुनिक दल), बंबई	मि.औ.अनु.ए.बं.
29.	मिश्रित औषध अनुसंधान एकक (आयु. एवं आधुनिक दल), पूना	मि.औ.अनु.ए.पू.
30.	मिश्रित औषध अनुसंधान एकक (आयु. एवं आधुनिक दल), वाराणसी	मि.औ.अनु.ए.वा.

1	2	3
31.	आहारिकी अनुसंधान परियोजना, आर. ए. पोद्दार आयुर्वेदिक कालेज, बम्बई	आ.अनु.परि.बं.
32.	पंचकर्म अनुसंधान परि०,आर०ए० पोद्दार आयु० कालेज, बम्बई	पं.अनु.पं.बं.
33.	संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत	सं.अनु.ए.ता.
34.	कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेदिक औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास	के.श्रीनि.आयु.औ.अनु.सं.म.
35.	जवाहर लाल नेहरू आयुर्वेदीय औषध पादप उद्यान तथा संग्रहालय, पूना	ज.ने.आयु.औ.पा.उ.सं.पू.
36.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प.क.), अहमदाबाद	नि.चि.अनु.ए.अ.
37.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प.क.), त्रिवेन्द्रम	नि.चि.अनु.ए.त्रि.
38.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प.क.), वाराणसी	नि.चि.अनु.ए.वा.
39.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, बम्बई	नि.चि.अनु.ए.बं.
40.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक (प.क), जामनगर	भे.वि.अनु.ए.जा.
41.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक (प.क.), वाराणसी	भे.वि.अनु.ए.वा.
42.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक (प.क.), भुवनेश्वर	भे.वि.अनु.ए.भु.
43.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक (प.क.) त्रिवेन्द्रम	भे.वि.अनु.ए.त्रि.

1	2	3
44.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, बम्बई	भे.वि.अनु.ए.बं.
45.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, कलकत्ता	भे.वि.अनु.ए.क.
46.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, लखनऊ	भे.वि.अनु.ए.ल.
47.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, वाराणसी	भेवि.अनु.ए.वा.
48.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, जोधपुर	भे.वि.अनु.ए.जो.
49.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, रीवा	भे.वि.अनु.ए.री.
50.	भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम	भे.वि.अनु.ए.त्रि.
51.	विषक्तता अनुसंधान एकक, बम्बई	वि.अनु.ए.बं
52.	विषाक्तता अनुसंधान एकक, झांसी	वि.अनु.ए.झां.
53.	रासायनिक अनुसंधान एकक, कलकत्ता	रा.अनु.ए.क.
54.	रासायनिक अनुसंधान एकक, वाराणसी	रा.अनु.ए.वा.
55.	रासायनिक अनुसंधान एकक, हैदराबाद	रा.अनु.ए.है.
56.	रासायनिक अनुसंधान एकक, लखनऊ	रा.अनु.ए.ल.
57.	भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान एकक, कलकत्ता	भे.अभि.अनु.ए.क.
58.	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद	भा.आ.इ.सं.है.
59.	आयुर्वेदीय वाङ्मय अनुसंधान एकक, तंजौर	आ.वा.अनु.ए.तं.
60.	प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, नई दिल्ली	प्र.प्र.प्र.न.दि.
61.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), कारनिकोबार	आ.स्वा.अनु.प.का.नि.
62.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), जीरो	आ.स्वा.अनु.प.जी.
63.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), पलामू	आ.स्वा.अनु.पला.

1	2	3
64.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), झबुआ	आ.स्वा.अनु.परि.झ.
65.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), धुले	आ.स्वा.अनु.प.धु.
66.	प्रारंभिक औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, जामनगर	प्रा.औ.मा.अनु.ए.जा.
67.	प्रारंभिक औषध मानकीरण अनुसंधान एकक, वाराणसी	प्रा.औ.मा.अनु.ए.वा.
68.	आमची चिकित्सा पद्धति अनुसंधान परियोजना, लेह-लद्दाख	आ.चि.प.अनु.प.ले.
69.	आमला कैंसर संस्थान, त्रिचूर	आ.कैं.सं.त्रि.

तकनीकी प्रतिवेदन-आयुर्वेद

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् के अंतर्गत निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान, औषध अनुसंधान, परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम, वाङ्मय अनुसंधान सहित चिकित्सा इतिहास अनुसंधान जैसे कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इस वर्ष का परिषद् के कार्यक्रमों पर आधारित संक्षिप्त प्रतिवेदन जिसमें प्रत्येक उक्त विषयक अनुसंधानकार्यों का विवरण दिया गया हैं निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है।

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान

परिषद् के अंतर्गत कार्यरत् संस्थानों/केन्द्रों/एककों के माध्यम से विभिन्न रोगों पर निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान के अंतर्गत अध्ययन किया गया है जिसमें आमवात, संधिगतवात, पक्षाघात, पक्षवध, गृध्रसी, खंज एवं पंगु, शैशवीयवात, अम्लपित्त, परिणामशूल, अन्तद्रवशूल, ग्रहणी, कृमिरोग, योनिव्यापद, तमक श्वास, मूत्रकृच्छ्र, श्वित्र, श्लीपद, सोरियासिस, पामा, दद्रु, विषमज्वर, कैन्सर, रक्तकणक्षय इत्यादि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित रोगों पर भी अध्ययन किया गया जिसमें व्यानवातबलवृद्धि, उदरशूल, प्रवाहिका, जीर्ण प्रवाहिका पाण्डुरोग, अर्श, कामला, श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर, कष्टार्तव, प्रतिश्याय, जीर्ण मधुमेह, व्रण, अपस्मार, त्वक् रोग, शूल रोग प्रमुख हैं।

जिन रोगों पर निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन कार्य किया गया उनका नीचे वर्णन किया जा रहा है। प्रत्येक दृष्टांत में संस्थानों/केन्द्रों/एककों के नाम जहां पर कार्य किया गया है उसका संकेत प्रत्येक रोग/रुग्ण संख्या के साथ दिया गया है। कार्यों को तालिका के माध्यम से इसलिए दिखाया गया है जिससे चिकित्सा प्रयुक्त औषध और उसका परिणाम सारणी के माध्यम से सुस्पष्ट हो सके।

आमवात :

आमवात पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भुवनेश्वर, भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुत्ति, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता, जयपुर, पटना, जूनागढ तथा ग्वालियर द्वारा किया गया। विभिन्न चिकित्सा कार्यक्रमों द्वारा 233 रोगियों

का उपचार किया गया। निम्नलिखित तालिका में संक्षेप में औषधियों का नाम, रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम को दर्शाया गया है :—

तालिका

आमवात रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम				
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	वातारि गुग्गुलु, योगराज गुग्गुलु, विषतिन्दुक वटी, कैशोर गुग्गुलु	के.अनु.सं.दि.	19	—	5	7	1	2	4
2.	शुण्ठी गुग्गुलु	के.अनु.सं.भु	20	2	9	2	2	—	5
3.	अ. वचादि हरिद्रा और बिट्टुमरण टेबलेट	भा.पं.सं.चे.	62	15	4	3	5	1	34
	ब. सिंहनाद गुग्गुलु	—उपर्युक्त	3	—	—	—	—	—	3
4.	अ. योगराज गुग्गुलु रास्नासप्तक क्वाथ और बालुकास्वेद	भा.का.सं.प.	26	4	1	8	4	—	9
	ब. योगराज गुग्गुलु, रास्नासप्तक क्वाथ, पत्रपिण्डस्वेद	—उपर्युक्त—	4	—	1	1	—	1	1
5.	निर्गुण्डी गुग्गुलु	क्षे.अनु.सं.क.	47	—	10	14	4	9	10
6.	शुद्ध गुग्गुलु	क्षे.अनु.सं.ज.	2	—	1	—	—	—	1

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
7.	अ. योगराज गुग्गुलु समीरपन्नग रस	क्षे.अनु.सं.प.	15	—	—	2	3	—	10
	ब. 7-अ+सैंधवादितैल	—उपर्युक्त—	5	—	—	3	2	—	—
8.	अ. लेप गुटिका	क्षे.अनु.सं.जू.	14	—	2	8	—	1	3
	ब. आमवातारि रस	—उपर्युक्त—	2	—	—	1	1	—	—
9.	कुर्कमिन	क्षे.अनु.सं.ग्वा.	6	—	—	—	4	1	1
10.	"कैप"	—उपर्युक्त	8	—	—	—	5	3	—
		कुल योग	233	21	33	49	31	18	81

गुग्गुलु सभी औषध योगों में मुख्य घटक के रूप में साधारण और मिश्रित औषध योगों में प्रयोग किया गया। अतः गुग्गुलु इन रोगों के उपचार में एक महत्वपूर्ण भूमिका सिद्ध करता है।

संधिगतवात

संधिगतवात पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता एवं ग्वालियर द्वारा किया गया। इन संस्थानों द्वारा विभिन्न चिकित्सा माध्यमों से उपचार किया गया। निम्नलिखित सारणी में रोगियों की पूर्ण संख्या, उपचार एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

संधिगतवात रोग पर आयुर्वेदिक औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र.सं	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	बि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	आर. गुग्गुलु	क्षे.अनु.सं.क.	22	—	4	7	6	3	2
2.	सिंहनाद गुग्गुलु और लशुनादिवटी	क्षे.अनु.सं.ग्वा.	15	—	—	4	6	5	—
		कुल योग	37	—	4	11	12	8	2

निरीक्षण से यह परिणाम निकला कि जो आमवात चिकित्सा में संकेत किया गया वही यहां भी ठीक उतरता है।

पक्षाघात/पक्षवध

पक्षाघात/पक्षवध पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति एवं भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला द्वारा किया गया। विभिन्न औषधियों द्वारा 80 रोगियों का उपचार किया गया। निम्नलिखित सारणी में रोगियों की संख्या, औषध योगों के नाम तथा परिणाम दर्शाये गये हैं :—

तालिका

पक्षाघात/प्रक्षवध पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी	परिणाम					
				सं. ला.	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. वि. मुक्त
1.	अ. हिंगुत्रिगुण तैल	के. अनु. सं. भु.	5	—	1	1	—	—	3 —
	ब. कटुकी गुग्गुलु	,,	2	—	—	2	—	—	— —
2.	अ. जे.जे.* तैल अंतः एवं बाह्य	भा. पं. सं. चे.	15	1	1	1	4	2	5 1
	ब. जे. जे. तैल केवल अन्तः एवं बाह्य	,,	13	—	1	—	7	2	3 —
	स. माष तैल पंचकर्म के साथ	,,	21	—	2	2	6	5	6 —
	द. माष तैल पंचकर्म के साथ अन्तः एवं बाह्य प्रयोग	,,	12	—	—	—	2	3	6 1
3.	योगराज गुग्गुलु रास्ना सप्तक क्वाथ अभ्यंग स्वेद	भा. का. सं. प.	12	1	2	2	1	4	2 —
		कुल योग	80	2	7	8	20	16	25 2

*जे. जे. से जटामांसी और ज्योतिष्मती अभिप्राय है।

पक्षाघात एवं इसकी अन्य नैदानिक दशाओं में तैल का अन्तः एवं बाह्य प्रयोग करके स्नेहन कर्म किया गया जिसे उपर्युक्त तालिका में दर्शाया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्नेहन कर्म का इन रोग अवस्थाओं में चिकित्सीय उपयोग लाभकारी है।

गृध्रसी :

गृध्रसी रोग का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भुवनेश्वर, एवं भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति द्वारा किया गया। विभिन्न औषधियों द्वारा 49 रोगियों का उपचार किया गया। निम्नलिखित सारणी में रोगियों की संख्या, औषध योगों के नाम एवं परिणाम को दर्शाया गया है :—

तालिका

गृध्रसी रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	शुद्ध भल्लातक	के. अनु. सं. दि.	6	4	—	2	—	—	—
2.	अ. हिंगुत्रिगुण तैल	के. अनु. सं. भु.	8	3	2	—	—	1	2
	ब. एरंड तैल	,,	5	2	—	1	—	1	1
3.	अ. पी. वी. तैल* के साथ शमन	भा. पं. सं. चे.	9	1	6	1	—	1	—
	ब. पंचमूल क्वाथ अन्तः एवं पी. वी. तैल बाह्य प्रयोग	,,	7	—	4	—	2	1	—
	स. पी. वी. तैल के साथ पंचकर्म	,,	2	1	—	—	—	—	1
	द. पी. वी. तैल के साथ पंचकर्म एवं शमन क्रिया	,,	9	4	3	1	1	—	—
4.	अ. सहचर	,,	1	—	1	—	—	—	—
	ब. भद्रदार्वादिवटी के साथ स्नेहपान	,,	1	1	—	—	—	—	—
	स. भद्रदार्वादि वटी	,,	1	—	1	—	—	—	—
		कुल योग	49	16	17	5	3	4	4

*प्रभाजन और विमर्दन तैल (पी. वी. तैल)

गृध्रसी रोग के उपचार में स्नेहकर्म देना प्रभावकारी है। इसके अतिरिक्त शुद्ध भल्लातक से भी पीड़ा की स्थिति में अच्छा परिणाम पाया गया है।

खंज एवं पंगु :

खंज एवं पंगु पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति द्वारा किया गया। इस संस्थान द्वारा विभिन्न औषधियों से 16 रोगियों का उपचार किया गया। निम्नलिखित सारणी में औषध योगों का नाम, रोगियों की संख्या तथा परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

खंज एवं पंगु रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम						
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प. ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त	मृत
1.	अ. पी.वी. तैल के साथ शमन चिकित्सा	भा.पं.सं.चे.	5	—	—	2	2	1	—	—
	ब. पी.वी. तैल* का अन्तः एवं बाह्य प्रयोग	"	2	—	—	1	—	—	—	1
	स. पी.वी. तैल के साथ पंचकर्म चिकित्सा	"	4	—	—	—	1	—	3	—
2.	अ. सहचर	"	2	—	—	1	—	1	—	—
	ब. निर्गुण्डी	"	2	—	—	—	1	1	—	—
	स. भद्रदार्वादि	"	1	—	—	—	1	—	—	—
		कुल योग	16	—	—	4	5	3	3	1

*प्रभाजन विमर्दनम तैल

इन औषधियों द्वारा जितने रोगियों का उपचार किया गया उससे कोई विशिष्ट संतोषजनक परिणाम पर पहुंचना सम्भव नहीं है। चिरकणता के रोग से आयुर्वेद सिद्धान्त पर आधारित चिकित्सा की गई है। इस रोग पर आगे अध्ययन करने की आवश्यकता है यद्यपि वर्तमान अध्ययन द्वारा कुछ सम्भव चिकित्सा उपाय के संकेत मिले हैं जिस पर विचार किया जा सकता है।

शैशवीयवात :

भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति द्वारा शैशवीयवात पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण किया गया। इस संस्थान द्वारा विभिन्न औषधियों के माध्यम से 20 रोगियों का उपचार किया गया। निम्नलिखित तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योग नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

शैशवीयवात रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	अ. बी.*तैल अंतः एवं बाह्य प्रयोग	भा.पं.सं.चे.	6	1	1	—	4	—	—
	ब. कूट भेषज अंतः एवं बी. तैल बाह्य प्रयोग	"	5	—	1	1	1	1	1
	स. कूट भेषज अंतः एवं बाह्य + षष्टीशाली पिंडस्वेद	"	3	—	—	—	3	—	—
	द. बी. तैल अंतः एवं बाह्य प्रयोग	"	6	—	1	1	4	—	—
		कुल योग	20	1	3	2	12	1	1

*बलाश्वगन्धादि

खंज एवं पंगु में जो चिकित्सा परिणाम बताया गया है इस पर भी वैसा ही प्रभाव है।

अम्लपित्त :

अम्लपित्त पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जूनागढ, निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, कोट्टकल तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, मंडी द्वारा किया गया। इन संस्थानों/केन्द्रों द्वारा विभिन्न औषध योगों द्वारा 196 रोगियों पर चिकित्सा की गयी। इस सारणी में रोगियों की संख्या, औषध योगों का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

अम्लपित्त पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प भा.	शू. लो.	चि. विमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	अ. शतावरी	के. अनु. सं. दि.	4	1	1	1	1	—	—
	ब. शतावरी योग	,,	5	1	4	—	—	—	—
	स. शतावरी योग + कामदुधा एवं सूत-शेखर	,,	18	5	7	3	2	1	—
2.	अ. आमलकी चूर्ण	भा. का. सं. प.	18	2	2	1	1	2	10
	ब. नारिकेल लवण	,,	34	4	5	9	10	1	5
3.	कामदुधारस, प्रवालपिष्टि, गुडुचीचूर्ण एवं शतावरीचूर्ण	क्षे. अनु. सं. जू.	62	—	—	14	10	6	32
4.	इन्दुकांत घृत (शोधन एवं शमन)	नि.चि.अनु.ए. को.	2	1	—	1	—	—	—
	ब. इन्दुकान्तघृत (शमन)	,,	3	2	—	1	—	—	—

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	स. महातिक्तघृत (शोधन एवं शमन)	,,	3	1	—	2	—	—	—
	द. महातिक्तघृत (शमन)	,,	2	2	—	—	—	—	—
5.	अ. अम्लपित्तान्तक योग	क्षे.अनु.के.मं.	28	—	—	3	3	2	20
	ब. आमलकी चूर्ण	,,	7	—	—	2	1	—	4
	स. सूशेखर और जहरमोहरा और शंख भस्म	,,	10	—	—	2	1	1	6
		कुल योग	196	19	19	39	29	13	77

इस रोग पर चिकित्सा अध्ययन परिणाम संतोषजनक पाया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न नैदानिक दशाओं में विभिन्न औषध योगों द्वारा उपयुक्त चिकित्सा करने की आवश्यकता है।

परिणामशूल :

परिणामशूल पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम, निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, कोट्टकल, मिश्रित औषध अनुसंधान परियोजना, बम्बई द्वारा किया गया। 175 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। निम्नलिखित तालिका में औषध योग, रोगियों की संख्या एवं चिकित्सा परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

परिणामशूल रोग पर आयुर्वेदीय औषध-योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	अ. सूतशेखर रस	के.अनु.सं.भु.	30	12	—	6	—	—	12
	ब. सूतशेखर रस+ कामदुधा रस+धात्रीलौह	"	28	20	—	2	—	—	6
2.	निम्बडीन	क्षे.अनु.सं.त्रि.	7	1	2	1	—	—	3
3.	अ. इंदुकांतघृत (शोधन एवं शमन)	नि.चि.अनु.ए.को.	34	23	—	7	—	4	—
	ब. इंदुकांतघृत+शमन	"	17	10	—	6	—	1	—
	स. महातिक्तघृत+शोधन एवं शमन	"	36	31	—	4	—	1	—
	द. महातिक्तघृत (शमन)	"	20	10	—	8	—	2	—
4.	सूतशेखर रस	मि.ओ.अनु.प.बं.	3	1	—	—	—	—	2
		कुल योग	175	108	2	34	—	8	23

उपर्युक्त तालिका में वर्ग-1 (ब), 3(अ), 3(ब), 3(द), औषधियों का रोग पर अच्छा प्रभाव देखा गया। इन औषधियों की प्रभावकारिता सिद्ध करने के लिए अभी और अध्ययन की आवश्यकता है।

अन्तद्रवशूल :

अन्तद्रवशूल पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, कोट्टकल द्वारा किया गया है। इस एकक द्वारा 16 रोगियों पर औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई जिसका तालिका में संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

तालिका

अम्लपित्तशूल रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोग सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	अ. आई.जी	नि.चि.अनु.ए.को, (शोधन एवं शमन)	6	4	—	1	—	—	1
	ब. आई.जी. (शमन)	"	4	3	—	1	—	—	—
	स. एम.जी.(शोधन व शमन)	"	4	2	—	2	—	—	—
	द. एम.जी. (शमन)	"	2	2	—	—	—	—	—
		कुल योग	16	11	—	4	—	—	1

आई. जी. = इंदुकांत घृत
एम. जी. = महातिक्त घृत

पूर्व तालिका के आधार पर ही यहां भी देखने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि घृत का प्रयोग रोग-अवस्थाओं के उपचार में उत्साहप्रद है।

अतिसार[5]

अतिसार रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, जम्मू और बंगलौर द्वारा किया गया। इन केन्द्रों द्वारा लगभग 42 रोगियों का विभिन्न औषध योगों द्वारा उपचार किया गया। यह देखा गया कि मुष्तादि योग लगभग 73.6 प्रतिशत लाभकारी है।

ग्रहणी रोग :

ग्रहणी रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली व भुवनेश्वर एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, हस्तिनापुर द्वारा किया गया। 33 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। सारणी में रोगियों की संख्या, औषध योग का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

ग्रहणी रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी स.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू, ला.	चि. विमुक्त
1.	कुटजादि विशेष योग +पंचामृत पर्पटी, चित्रक वटी + हिंग्वाष्टक चूर्ण	के.अनु.सं.दि.	9	3	2	—	1	2	1
2.	शुण्ठी चूर्ण	के.अनु.सं.भु.	12	4	—	5	—	—	3
3.	अ. बिल्व-पत्र +मज्जाचूर्ण	क्षे.अनु.के.ह.	3	—	—	1	—	—	2
	ब. जातिफलादि चूर्ण	"	3	—	—	1	—	—	2
	द. आहार नियंत्रण	"	3	2	—	—	—	—	1
		कुल योग	30	9	2	7	1	2	9

इस रोग चिकित्सा के अच्छे परिणाम देखने हेतु और अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

उदरशूल :

उदरशूल पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, हैदराबाद द्वारा आमाशय शोधन तथा बिल्व-पत्र का प्रयोग करके लगभग 85 रोगियों को चुना गया जिनमें से मात्र 55 रोगियों ने इस चिकित्सा अवधि को पूरा किया जिसमें 26 रोगियों को पूर्ण लाभ, 3 रोगियों को मध्यम लाभ एवं 26 रोगियों को अल्प लाभ मिला।

कृमि रोग :

कृमि रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर, लखनऊ, ग्वालियर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर, नागपुर और मंडी द्वारा किया गया। 265 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योगों का नाम एवं परिणाम को दर्शाया गया है।

तालिका

कृमि रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	कम्पिल्लक चूर्ण	के.अनु.सं.भु.	42	12	—	16	—	7	7
2.	कम्पिल्लक चूर्ण	भा.का.सं.प.	34	10	6	3	—	3	12
3.	अरलू घनसत्व	क्षे.अनु.सं.जू.	18	—	2	—	4	1	11
4.	कृमिमुद्गर रस	क्षे.अनु.सं.ल.	19	—	2	3	8	2	4
5.	कृमिरिपु कैप्सूल	क्षे.अनु.सं.ग्वा.	39	6	5	2	9	4	13
6.	कृमिमुद्गर रस	क्षे.अनु.के.ईटा.	32	14	—	—	—	7	11
7.	कम्पिल्लक चूर्ण	क्षे.अनु.के.नाग.	13	6	4	—	—	—	3
8.	कृमिमुद्गर रस	"	2	1	—	—	—	—	1
9.	कम्पिल्लक चूर्ण	क्षे.अनु.के.मं.	66	—	—	11	8	2	45
		कुल योग	265	49	19	35	29	26	107

कम्पिल्लक चूर्ण एवं कृमि मुद्गर रस औषधियों द्वारा चिकित्सा की गई। कम्पिल्लक चूर्ण एवं कृमिमुद्गर रस लगभग उपयोगी औषध हैं फिर भी यह आवश्यक है कि चिकित्सा परिणाम ज्ञात करने के लिए और अधिक रोगियों पर परीक्षण किया जाये।

कामला :

कामला रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, हस्तिनापुर एवं मिश्रित औषध अनुसंधान एकक, बम्बई द्वारा किया गया। कुल 11 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। इन औषध वर्गों में रोगियों को पुनर्नवा मंडूर के साथ आरोग्यवर्धिनी एवं कुमार्यासव, फलत्रिकादि चूर्ण एवं नवायस चूर्ण दिया गया। रोगियों की संख्या पर्याप्त न होने के कारण कोई परिणाम नहीं दिया जा सका है। इस पर अध्ययन कार्य चल रहा है।

यकृतदोष :

यकृत दोष पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा शरपुंखा भस्म एवं आरोग्यवर्धिनी का प्रयोग करके किया गया। जिन 16 रोगियों की चिकित्सा की गई उनमें से चार रोगियों को पूर्ण लाभ, तीन रोगियों को विशिष्ट लाभ, चार रोगियों को मध्यम लाभ एवं दो रोगियों को अल्प लाभ मिला। एक रोगी की नैदानिक दशा में कुछ भी परिवर्तन नहीं देखा गया। एक रोगी को लाभ नहीं मिला और दो रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया। इस पर अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

पाण्डु रोग :

पाण्डु रोग का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति द्वारा किया गया। इस संस्थान द्वारा 13 रोगियों की चिकित्सा विभिन्न औषध योगों द्वारा की गई। जिन औषधियों का इस चिकित्सा में प्रयोग किया गया उनमें अयोलिप्त भृंगराज चूर्ण एवं व्योषादि कषाय चूर्ण का प्रयोग किया गया। इस पर चिकित्सा परिणाम पर पहुंचने के लिए और अधिक परीक्षण करने की आवश्यकता है।

अर्श :

भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला में अर्श रोग के 45 रोगियों पर अर्शवटी देकर चिकित्सा की गई, केवल 22 रोगियों पर ही अध्ययन कार्य पूरा हो सका। इसमें 9 रोगियों को पूर्ण लाभ, 4 रोगियों को मध्यम लाभ एवं 3 रोगियों को अल्प लाभ मिला।

श्वेत-प्रदर :

श्वेतप्रदर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जूनागढ, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, जम्मू द्वारा किया गया। कुल 76 रोगियों का विभिन्न औषध योगों से चिकित्सा की गई। कार्य को दर्शाने हेतु इस तालिका में औषध योगों के नाम, रोगियों की संख्या एवं परिणाम को दर्शाया गया है : —

तालिका

श्वेतप्रदर पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प. ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	अ. कुक्कटाण्ड त्वक्भस्म	के.अनु.सं.दि.	9	2	3	2	1	1	—
	ब. पुष्यानुग चूर्ण	"	10	—	3	4	1	2	—
2.	आमलकी योग	क्षे.अनु.सं.जू.	37	—	8	9	—	—	20
3.	वटत्वक् चूर्ण	क्षे.अनु.के.ज.	20	—	3	5	3	1	8
		कुल योग	76	2	17	20	5	4	28

यद्यपि यह देखा गया कि रोगियों को पूर्ण लाभ तो नहीं मिला, परन्तु अल्प लाभ से लेकर विशिष्ट लाभ अधिकांश रोगियों को मिला। इस विषय पर गहन परीक्षण अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता है।

रक्तप्रदर :

रक्तप्रदर पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जूनागढ द्वारा किया गया। इन संस्थानों द्वारा कुल 100 रोगियों की चिकित्सा की गई जिसमें विभिन्न औषध योगों का प्रयोग किया गया। निम्नलिखित सारणी में औषध योगों के नाम एवं रोगियों की संख्या तथा परिणाम को दर्शाया गया है :—

तालिका

रक्तप्रदर रोगों पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	अ. धात्र्यादि चूर्ण प्रवालपिष्टी, दूर्वा स्वरस के साथ	के.अनु.सं.दि.	36	—	11	10	10	5	—
	ब. चन्द्रकलारस मधु के साथ	"	2	—	—	1	—	1	—
2.	आई.आई.के.सी.-2	भा.का.सं.प.	31	4	5	1	4	1	16
3.	आमलकी योग	क्षे.अनु.सं.जू.	31	—	5	11	1	—	14
		कुल योग	100	4	21	23	15	7	30

इस तालिका से भी यह स्पष्ट है कि विभिन्न औषध योगों द्वारा रोगियों को पूर्ण लाभ नहीं मिला है फिर भी यह अवश्य देखा गया कि विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा करने पर रोगियों के रोग लक्षणों में सुधार अल्प से लेकर विशिष्ट लाभ तक रहा है।

कष्टार्तव :

कष्टार्तव रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला द्वारा पुष्यानुग चूर्ण एवं प्रतापलंकेश्वर रस को देकर किया गया। जिन 28 रोगियों पर यह परीक्षण किया गया उनमें से 10 रोगियों को पूर्ण लाभ, 12 रोगियों को विशिष्ट लाभ एवं 6 रोगियों का मध्यम लाभ मिला।

योनि-व्यापद :

योनि-व्यापद पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली द्वारा किया गया। इस संस्थान द्वारा कुल 26 रोगियों पर विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। निम्नलिखित तालिका में औषध योग का नाम, रोगियों की संख्या एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

योनि-व्यापद रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	कैशोर गुग्गुलु के साथ निम्बडीन क्वाथ	के.अनु.सं.दि.	6	2	2	—	1	—	1
ब.	कैशोर गुग्गुलु के साथ पंचवल्कल क्वाथ	"	12	3	1	—	—	1	7
स.	कैशोर गुग्गुलु के साथ त्रिफलादि क्वाथ	"	8	2	—	2	—	—	4
		कुल योग	26	7	3	2	1	1	12

तमक श्वास :

तमक-श्वास पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भुवनेश्वर, भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान, जयपुर, लखनऊ, पटना, जूनागढ, ग्वालियर एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, विजयवाडा एंव हस्तिनापुर द्वारा किया गया। इन संस्थानों/केन्द्रों द्वारा कुल 581 रोगियों की विभिन्त औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई।

निम्नलिखित तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योगों का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

तमक-श्वास रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	वर्द्धमान पिप्पली क्रम	के. अनु. सं. दि.	26	—	14	3	2	2	5
2.	श्वासकुठार रस + तालिसादिचूर्ण + सितोपलादिचूर्ण + कनकासव	के. अनु. सं. दि.	16	1	—	5	—	2	8
3.	अ. दशमूलारिष्ट कनकासव, धान्वन्तरगुटिका तथा वमन	भा. पं. सं. चे.	1	1	—	—	—	—	—
	ब. अगस्त्य हरीतकी दशमूलकंदुधर्यम् धान्वन्तरगुटिका	,,	1	—	—	—	—	1	—
4.	अ. नारदीय लक्ष्मी विलास रस मिश्रण	भा. का. सं. र.	58	11	13	8	5	6	15
	ब. श्वासकुठार रस मिश्रण	,,	68	14	10	17	9	4	14
5.	वसादिघनवटी	क्षे अनु. सं. जू.	8	2	2	3	1	—	—
6.	सोमलता चूर्ण और श्वासकुठार मिश्रण	क्षे अनु. सं. ल.	14	—	—	2	7	1	4

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
7.	अ. हरिद्राखण्ड	क्षे. अनु. सं. प.	66	—	7	14	14	6	25
	ब. समीरपन्नगरस गुडूची सत्व	,,	50	—	1	7	11	9	22
	स. हरिद्राखण्ड + समीरपन्नग रस	,,	83	—	8	22	7	40	6
8.	कंटकारी + सैंधव	क्षे. अनु. सं. जू.	40	—	6	14	8	--	12
9.	अ. वसागुण	क्षे. अनु. सं. ग्वा.	65	—	1	19	17	22	6
	ब. एस. एच. 2 यौगिक मिश्रण	,,	48	1	—	13	13	12	9
10.	लहसुन हरिद्रा मिश्रण	क्षे. अनु. के. बि.	27	12	7	—	—	—	8
11.	पिप्पल्यादि लौह	क्षे. अनु. के. ह.	10	2	—	4	—	—	4
		कुल योग	581	44	69	131	94	105	138

नारदीय लक्ष्मी विलास मिश्रण तथा श्वासकुठार मिश्रण औषधियों का प्रयोग सामान्यतः ठीक ही रहा। विभिन्न लक्षणों पर अल्प से विशिष्ट लाभ तक अंकित किया गया। इस पर पुनः अध्ययन करने की आवश्यकता है।

वातिक कास

वातिक कास पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर द्वारा मनः शिलादिघृत औषध का प्रयोग करके किया गया। जिन तीन रोगियों पर यह परीक्षण किया गया उनमें से दो रोगियों को पूर्ण लाभ एवं एक रोगी को मध्यम लाभ मिला।

मधुमेह

मधुमेह रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, ए. लक्ष्मीपति औषध अनुसन्धान

एकक, मद्रास द्वारा किया गया। कुल 136 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। निम्नलिखित तालिका में औषध योगों का नाम, रोगियों की संख्या एवं परिणाम दर्शाया गया है :—

तालिका

मधुमेह रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र.सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प. ला.	शू ला.	चि. विमुक्त
1.	आयुष-82+शिलाजीत	के.अनु.सं.दि.	87	42	32	—	—	13	—
2.	सी.आर.आई.ए.-8 चन्द्रप्रभावटी और बब्बूलारिष्ट	भा.का.सं.प.	35	1	17	—	—	7	10
3.	बिम्बी	ए.ल.अ.ए.म.	13	—	3	—	—	1	9
		कुल योग	135	43	52	—	—	21	19

यह देखा गया कि चिकित्सा अवधि में रोगियों के रोग लक्षणों पर नियंत्रण रहा। इन औषधियों द्वारा रोग के उपचार में अच्छा प्रभाव देखा गया .

मूत्र-कृच्छ्र

मूत्रकृच्छ्र पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर, पटना तथा ग्वालियर एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, मंडी द्वारा किया गया। कुल 120 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। संक्षेप में तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योगों का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

मूत्रकृच्छ्र रोग पर आयुर्वेदीय-औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र.सं.	औषध योग	सस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	अ. गोक्षुरादि गुग्गुलु इत्यादि	के.अनु.सं.दि.	11	—	2	1	2	1	5
	ब. कैशोर गुग्गुलु	के.अनु.स.दि.	14	2	3	4	1	1	3
2.	हरीतकी, गोक्षुरु, अमलतास, पाषाण-भेद, धवक	क्षे.अनु.सं.जू.	10	2	1	—	—	—	7
3.	गोक्षुरादि गुग्गुलु श्वेत-पुनर्नवा, चन्दन, साल	क्षे.अनु.सं.प.	10	4	1	—	1	—	4
4.	गोक्षुरादि गुग्गुलु+ आरोग्यवर्धिनी पुनर्नवारिष्ट+ पाषाणभेदी क्वाथ	क्षे.अनु.सं.ग्वा.	56	26	2	2	7	2	17
5.	पाषाण भेदी क्वाथ	क्षे.अनु.के.म.	10	—	—	1	5	—	4
6.	गोक्षुरादि गुग्गुलु+ आरोग्यवर्धिनी	क्षे.अनु.के.म.	9	—	—	1	2	1	5
		कुल योग	120	34	9	9	18	5	45

यह देखा गया कि वर्ग 3 एवं 4 के रोगियों में सामान्य रूप से उत्साहवर्धक परिणाम रहा। इसके उपरान्त भी यह आवश्यक है कि इस पर आगे भी पूर्णतः अध्ययन किया जाये।

व्यानबल वृद्धि विकार

व्यानबल वृद्धि विकार रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, भुवनेश्वर, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला एवं क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर द्वारा किया गया। कुल 79 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। इस चिकित्सा विधि में 44 रोगियों ने पूर्णत: भाग नहीं लिया अत: उन्हें चिकित्सा विमुक्त कर दिया गया। तालिका में रोगियों की पूर्ण संख्या, औषध योगों का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

व्यानवृद्धि विकार रोग पर आयुर्वेद औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र.सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1.	सर्पगंधावटी + प्रभाकर-वटी + ब्राह्मी वटी	के.अनु.सं.दि.	10	—	—	3	1	—	6
2.	शिग्रु की पत्ती	के.अनु.सं.भु.	2	—	2	—	—	—	—
3.	अ. सर्पगंधाचूर्ण जहरमोहरा पिष्टी प्रवाल पिष्टी	भा.का.सं.प.	21	—	1	1	2	2	15
	ब. अर्जुन त्वक्वटी	भा.का.सं.प.	28	—	2	1	8	2	15
4.	आर.सी. — 1 तथा आर सी. — 2	क्षे.अनु.सं.ग्वा.	18	—	—	3	4	3	8
		कुल योग	79	—	5	8	15	7	44

आर.सी.—1=सर्पगंधावटी और चन्द्रप्रभावटी

आर.सी.—2=गुडुची सत्व, मुक्ताशुक्ति, मृतशेखर रस, एरण्डभृष्ट-हरीतकी और अविपत्तिकर चूर्ण।

इस रोग पर औषधियों का प्रभाव देखने के लिए और अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

श्वित्र

श्वित्र रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, भारतीय पंचकर्म संस्थान चेरुतुरुति, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, विजयवाडा, हस्तिनापुर, मिश्रित अनुसंधान एकक, पूना द्वारा किया गया। कुल 69 रोगियों पर विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। इसके अतिरिक्त 20 श्वित्र रोगियों पर परीक्षण निदान-चिकित्सात्मक एकक (आ.चि.दल) तथा मिश्रित अनुसंधान योजना दल, पूना द्वारा किया गया। इस परीक्षण में निम्बपंचांग चूर्ण के साथ गुजा, चित्रक वटी, धात्र्यादिचूर्ण के साथ अवलगुजादिवटी तथा कोकोदुम्बर-चूर्ण का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त आयुष-57 के द्वारा भी परीक्षण किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण अधिक रोगियों पर परीक्षण करने के उपरान्त ही किया जा सकता है। इस पर अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

व्रण

व्रण एक ऐसी सामान्य रोग अवस्था है जो दिन-प्रतिदिन चिकित्साभ्यास में देखा जाता है। यह एक साधारण व्रण भी हो सकता है जो थोड़ी सी सावधानी अपनाने से ठीक हो जाता है अन्यथा यह गंभीर रूप धारण करता है जैसे मन्दरोही व्रण। व्रण रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला द्वारा किया गया। कुल 118 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। तालिका में रोगियों की पूर्ण संख्या औषध योगों का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

व्रण रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. वि.
1.	जात्यादि तैल	के.अनु.सं.दि.	29	21	—	6	—	2	—
2.	अ. आरोग्यवर्धिनी वटी तथा जात्यादि तैल	भा.का.चि.सं.प.	25	25	—	—	—	—	—
	ब. रसांजनादि वटी तथा जात्यादि तैल	,, ,,	56	56	—	—	—	—	—
	स. चन्द्रप्रभावटी, जात्यादि तैल	,, ,,	8	8	—	—	—	—	—
		कुल योग	118	110	—	6	—	2	—

श्लीपद

श्लीपद रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पटना, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, विजयवाडा द्वारा किया गया। कुल 296 रोगियों का विभिन्न औषध योगों द्वारा की गई। निम्नलिखित तालिका में औषध योगों का नाम, रोगी संख्या एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

श्लीपद रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	सुदर्शन घनवटी	के.अनु.सं.भु.							
	अ. नये रोगी		37	27	—	4	—	—	6
	ब. पुराने रोगी		59	10	—	34	—	8	7
2.	आयुष-64	के.अनु.सं.भु.	7	4	—	1	—	1	1
3.	सुदर्शन घनवटी	"	8	1	—	6	—	—	1
4.	आयुष-64	क्षे.अनु.सं.प.	35	—	8	5	4	1	17
5.	अ. श्लीपद कैप्सूल	क्षे.अनु.के.वि.	34	4	4	12	4	8	2
	ब. आयुष-64	क्षे.अनु.के.वि.	7	1	—	1	2	3	—
	स. श्लीपद कैप्सूल	"	64	3	5	4	4	8	40
	द. आयुष-64	"	45	2	2	4	8	6	23
		कुल योग	296	52	19	71	22	35	97

पर्याप्त मात्रा में प्रत्येक वर्ग के रोगियों पर अध्ययन करने के पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा, उसके बाद ही औषधियों की प्रभाव-क्षमता का पता लग सकेगा

अपस्मार

अपस्मार रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भुवनेश्वर, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता तथा आयुर्वेदिक अनुसंधान एकक, बंगलौर द्वारा किया गया। आयुष-56 एवं ब्राह्मीघृत के साथ अपस्मार के रोगियों पर परीक्षण किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण अध्ययन कार्य पूरा होने पर किया जायेगा।

सोरायसिस

सोरायसिस रोग का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम द्वारा निम्बडीन एवं लज्जालु केरम के साथ एक वर्ग को एवं निम्बडीन तथा आरग्वधकेर से दूसरे वर्ग के रोगियों की चिकित्सा की गई। प्रथम वर्ग में 28 रोगियों की चिकित्सा की गई। जिसमें से दो रोगियों को पूर्ण लाभ एवं 25 रोगियों को अल्पलाभ मिला तथा एक रोगी ने चिकित्सा बीच में ही छोड़ दी। दूसरे वर्ग में 48 रोगियों की चिकित्सा की गई। इन रोगियों पर चिकित्सा लाभ अध्ययन पूरा होने पर विश्लेषण किया जायेगा।

पामा

पामा रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर एवं हस्तिनापुर द्वारा किया गया। कुल 104 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योग नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

पामा रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	न्यू. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1.	अ. पटोल त्रिफलादि चूर्ण अन्तः प्रयोग रसामथादि लेप	भा. पं. सं. चे.	3	1	2	—	—	—	—
	ब. पटोल त्रिफ़लादि चूर्ण अन्तः एंव थम्बुलादितैल बाह्य	,,	12	3	3	—	—	—	6
	स. पंचतिक्त कषाय अन्तः प्रयोग तथा नालिकेर बाह्य	,, ,,	5	1	2	1	—	—	1
	द. पंचतिक्त कषाय अन्तः एवं रसामथादि लेप बाह्य	,,	4	2	1	—	—	1	—
	इ. पटोल त्रिफलादि अतः नालपमरादि क्वाथ	,,	2	1	—	—	—	1	—
2.	शुद्ध गंधक तुवरक चूर्ण	क्षे. अनु. के ई.	71	27	12	10	—	—	22
3.	अ. लघुमजिष्ठादि क्वाथ	क्षे. अनु. के. ह.	3	—	—	—	—	—	3
	ब. अ. औषध + महानारायण तैल	,,	2	—	—	—	—	—	2
	स. कूटभेषज	,,	2	—	—	—	—	—	2
		कुल योग	104	35	20	11	—	2	36

अध्ययन की अवधि में यह देखा गया कि व्रण रोग के जिन रोगियों की औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई उसका परिणाम उत्साहवर्धक रहा। पुनः अध्ययन कार्य व्रण रोग की प्रकृति पर भी किया जा रहा है।

त्वक रोग

त्वक रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जूनागढ द्वारा किया गया। इस संस्थान द्वारा कुल 55 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। इस तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योग का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

त्वक रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	आ. ला.	म. ला.	न्यू. ला.	शू. ला.	वि. वि.
1.	अ. आरोग्यवर्धिनी गंधक रसायन गौदंती भस्म	क्षे.अनु.सं.जू.	30	—	—	4	4	6	16
	ब. गंधक मलहम का स्थानीयलेप	,,	25	—	—	4	6	8	7
		कुल योग	55	—	—	8	10	14	23

दद्रु

दद्रु रोग का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम द्वारा किया गया। इस संस्थान द्वारा 38 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। निम्नलिखित तालिका में औषध योगों का नाम, रोगियों की संख्या एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

दद्रु रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. वि.
1.	अ. विश्वमित्र कल्प तैल	क्षे.अनु.सं.त्रि	3	—	—	2	—	1	—
	ब. मलहम—अ.	,, ,,	8	3	—	1	—	1	3
	स. मलहम—ब.	,, ,,	27	7	—	2	—	2	16
		कुल योग	38	10	—	5	—	4	19

मलहम—अ. : पेट्रोलियम ईथर सत्व नारियल कोश में मिलाकर 2% मलहम को पेट्रोलियम जेली के साथ।

मलहम—ब. : नारियलकोश-एल्कोहल सत्व मिलाकर 2% मलहम पेट्रोलियम जेली के साथ।

विचर्चिका

विचचिका रोग का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर द्वारा तुवरक एवं शुद्ध गन्धक के साथ किया गया। जिन 92 रोगियों पर यह परीक्षण किया गया उनमें से 32 रोगियों को पूर्ण लाभ, 13 रोगियों को विशिष्ट लाभ, 12 रोगियों को माध्यम लाभ एवं 9 रोगियों को अल्प लाभ मिला। शेष 5 रोगियों के नैदानिक लक्षणों में कुछ भी प्रभाव नहीं देखा गया। जब कि 21 रोगी इस चिकित्सा कार्य को विना पूरा किए ही छोड़ गये।

शूल रोग

शूल रोग पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर द्वारा पिप्पलीहरीतकी योग को प्रयोग करके किया गया। जिन 5 रोगियों पर यह परीक्षण किया गया उनमें से दो रोगियों को पूर्ण लाभ और दो रोगिया को विशिष्ट लाभ मिला जब कि एक रोगी ने इस चिकित्सा कार्य को पूरा ही नही किया।

विषम ज्वर

विषम ज्वर पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, भुवनेश्वर, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जयपुर, जूनागढ, ग्वालियर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर, जम्मू, नागपुर, मंडी एवं हस्तिनापुर द्वारा किया गया। कुल 421 रोगियों की विभिन्न औषध योगों द्वारा चिकित्सा की गई। तालिका में रोगियों की संख्या, औषध योगों का नाम एवं परिणाम दर्शाया गया है।

तालिका

विषम ज्वर रोग पर आयुर्वेदीय औषध योग द्वारा चिकित्सा-परिणाम पर एक दृष्टि

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/केन्द्र	कुल रोगी सं.	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प. ला.	शू. ला.	चि. विमुक्त
1.	आयुष-64	के.अनु.सं.दि. (ऋणात्मक)	4	—	1	2	—	1	—
2.	आयुष-64	के.अनु.सं.भु. (धनात्मक)	8	6	—	2	—	—	—
3.	अ. आयुष-64 तथा मलेरियाहर वटी	भा.का.चि.सं.प. (धनात्मक)	2	2	—	—	—	—	—
	ब. क्लोरोक्वीन	"	1	1	—	—	—	—	—
	स. आयुष-64 मलेरियाहरवटी	" (लाक्षणिक)	91	36	—	—	1	6	48
	द. क्लोरोक्वीन	"	1	1	—	—	—	—	—
4.	अ. आयुष-64	क्षे.अनु.सं.जू. (धनात्मक)	3	2	1	—	—	—	—

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	ब. आसुष-64	क्षे.अनु.सं.जू.	39	18	17	4	—	—	—
5.	आयुष-64	क्षे.अनु.सं.जू. (धनात्मक)	40	—	35	—	—	1	4
6.	अ. आयुष-64	क्षे.अनु.सं.ग्वा. (धनात्मक)	16	2	2	—	—	—	12
	ब. आयुष-64 क्लोरोक्वीन	"	6	2	1	—	—	3	—
7.	आयुष-64	क्षे.अनु.के.ईटा. (लाक्षणिक)	16	16	—	—	—	—	—
8.	आयुष-64	क्षे.अनु.के.ज. (धनात्मक)	9	2	—	1	—	1	5
9.	आयुष-64	क्षे.अनु.के.ना. (धनात्मक)	12	6	—	—	—	1	5
10.	आयुष-64	क्षे.अनु.के.म. (लाक्षणिक)	72	—	—	16	—	3	53
	ब. महासुदर्शन चूर्ण तथा गोदंती भस्म	"	8	—	—	3	—	2	3
11.	अ. आयुष-64	क्षे.अनु.के.ह. (लाक्षणिक)	47	23	—	1	—	3	20
	ब. क्लोरोक्वीन	क्षे.अनु.के.ह. (लाक्षणिक)	46	19	—	1	—	1	25
		कुल योग	421	136	57	30	1	21	176

संकेताक्षर =

— ऋणात्मक (रिक्त आलेप) मलेरिया परजीवी ।

+ धनात्मक (" ") " " "

० लक्षणों के आधार पर ।

पुष्करमूल एवं गुग्गुल की अरक्ततताजन्य हृदय रोग एवं उच्च रक्त चाप के उपचार में भूमिका — **भि. औ. अनु. प. बा.**

बहिरंग रोगी विभाग में इस प्रतिवेदित वर्ष की अवधि में 20 रोगियों को हृदय रोग के अरक्ततताजन्य नैदानिक लक्षणों तथा प्रयोगशालीय परीक्षण के आधार पर विशेषकर ई. सी. जी. रिर्पोट को देखने के बाद निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्य किया गया। इन रोगियों को पुष्कर-मूल गुग्गुलु 8 से 10 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन 6 माह तक दिया गया। रोग के नैदानिक लक्षणों, ई. सी जी. एव जीव रासायनिक परीक्षणों को चिकित्सा परिणाम ज्ञान करने हेतु अंकित किया गया। इस चिकित्सा से रोगियों को अच्छा लाभ हुआ। विशेष रूप से उन रोगियों में जिन्होंने चिकित्सा कार्य को 6 माह तक पूरा किया। इन रोगियों को पूर्ण लाभ के साथ कुछ रोगियों में पूर्वहृत्शूल, श्वासकष्ट एंव हृदधड़कन में सुधार देखा गया। जीव-रासायियक परीक्षण परिणाम के आधार पर ई. सी. जी. के उपरान्त यह सिद्ध हो गया है कि इन रोगियों में आवश्यक रूप से सुधार हुआ है।

जठर अम्ल स्राव में कुलत्थ एवं मुद्ग के प्रभाव का अध्ययन — **भि. औ. अनु. प. ब.**

जठर अम्ल के तीन रोगियों में स्वैच्छिक आधार पर जठर अम्ल उत्पत्ति पर अध्ययन किया गया। सभी रोगियों को मुद्ग एवं कुलत्थ के प्रयोग के तीन घण्टे के उपरांत देखा गया कि अम्लस्राव मुद्ग देने के बाद कुलत्थ देने की अपेक्षा अधिक था। यह अध्ययन कार्य प्रगति पर चल रहा है।

पंचकर्म चिकित्सा — **पं.अनु.ए.ब.**

इस प्रतिवेदित वर्ष में पक्षवध के 57 रोगियों, अर्दित के दो रोगियों, कंपवात के दो रोगियों एवं अन्य वात व्याधि के नौ रोगियों पर पंचकर्म चिकित्सा द्वारा अध्ययन किया गया जिसका परिणाम नीचे तालिका में दिया गया है।

तालिका

क्र. सं.	रोग का नाम	कुल रोगी सं.	चिकित्सा-परिणाम						
			पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. लो.	चि. वि	मृत
1.	पक्षवध	57	—	—	7	11	5	32	2
2.	अर्दित	2	—	—	—	—	—	2	—
3.	कंपवात	2	—	—	—	1	1	—	—
4.	पंगु	9	—	—	4	3	—	2	—
5.	अन्य वात रोग	9	—	—	—	—	—	9	—
	कुल योग	79	—	—	11	15	6	45	2

उपर्युक्त आंकड़ों को देखने से ज्ञात होता है कि 50% से अधिक रोगियों ने इस चिकित्सा कार्य को बीच में ही छोड़ दिया। इसमें चिकित्सा-परिणाम को भलीभांति ज्ञात करने के लिए और अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

उन्माद रोग का लक्षण समुच्चय **आ.अनु.ए. बंगलौर**

उन्माद रोग के 16 रोगियों का रोग के लक्षणों के आधार पर अध्ययन किया गया। इसके पूर्व 134 रोगियों का अध्ययन किया गया था। इस रोग के विभिन्न लक्षणों को अधिक रोगी संख्या पर अध्ययन करने के पश्चात ही विश्लेषण किया जा सकता है। इन आंकड़ों में आयु, लिंग, प्रकृति रोग अवधि, रोगों की तीव्रता आदि पर आँकड़े एकत्र करने के बाद ही मूल्यांकन किया जा सकेगा।

बुद्धिमांद्य

पिछले वर्ष की अवधि में जिन दो रोगियों पर अध्ययन किया गया उनके साथ ही इस वर्ष भी दो रोगियों को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया और आयुष्मान-68 द्वारा परीक्षण किया गया। इनमें से एक रोगी जिसने पूर्व में परीक्षण पूरा किया था उस पर अनुक्रिया अध्ययन किया जा रहा है।

उन्माद

इस प्रतिवेदित वर्ष की अवधि में तीन रोगियों पर परीक्षण किया गया उसमें से दो रोगियों पर आयुर्वेदिक चिकित्सा और एक रोगी क्लोरेप्रोमजीन वर्ग में रखा गया।

अर्बुद (कैंसर)

कैंसर अनुसंधान केन्द्र, त्रिचूर द्वारा 36 श्वेत रक्तता के एवं 44 विभिन्न प्रकार के अर्बुद रोगियों पर अध्ययन कार्य किया गया। श्वेत रक्तता एवं अर्बुद वर्ग के जिन रोगियों की चिकित्सा की गई उनका औषध वर्ग नीचे दर्शाया गया है।

श्वेतरक्तता

1. रोहितकारिष्टम्
2. रोहितक घृत
3. प्लास क्षीर दुग्ध के साथ
4. गुड़ाभया

अर्बुद (कैंसर)

1. वरणादि क्वाथम्
2. गोमूत्रहरीतकी
3. रस सिंदूरम्
4. खदिरारिष्टम्

श्वेतरक्तता रुग्णों जिनकी चिकित्सा की गई उनमें तीव्र लसीका, श्वेत रक्तता, तीव्र तथा चिरकारी मज्जाभश्वेत रक्तता सम्मिलित हैं।

अर्बुद (कैंसर) के क्षेत्र में जिन रोगियों का अध्ययन किया गया उनमें मुखीय अर्बुद, गर्भाशय ग्रीवा, स्तन, आन्त्र, प्रसनी, गुदा; योनि, यकृत, डिम्बवाहिनी, पुरस्त, अगन्याशय, भ्रूणीय अर्बुद, अस्थित, अवट, गन्ध तंत्रिका; कोशिकाप्रसू लसीका अर्बुद; वृक्क आदि मस्तिष्क अर्बुद सम्मिलित हैं।

श्वेत रक्तता एवं अर्बुद के रोगियों का चिकित्सा-परिणाम निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

तालिका

क्र. सं.	रोग नाम	कुल रोगी सं.	परिणाम: पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अल्प ला.	शू. ला.	चि. वि.
1.	श्वेतरक्तता	36	—	—	14	10	12	—
2.	अर्बुद (कैंसर)	44	—	11	23	4	6	—
	कुल योग	80	—	11	37	14	18	—

आमची चिकित्सा पद्धति

आमची चिकित्सा पद्धति की औषधियों का रक्तचाप के रोगियों पर परीक्षण किया गया। 10 रोगियों को मिश्रित औषध थाकटूक कुन्सेल द्वारा चिकित्सा की गई। इस पर अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

आमची औषध का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण चूजर (फामा) रोगियों को 15-15 रोगियों के दो वर्गों में बांटकर किया गया। सोडेट चुग्यात को वर्ग (अ) एवं स्पेकर चूपा को वर्ग (ब) में रखा गया है। आठ रोगी वर्ग (अ) एवं छः रोगी वर्ग (ब) में चिकित्सा की गई। रोगी संख्या पूरी होने के पश्चात ही इन आंकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा।

चम्पा फूल रोग चिकित्सा में विभिन्न औषधियों दी गई जिनमें नर बुछुवा, खोंगनेगूपा, लिसी टूकपा, चन्दनग्यत्पा एवं चोकगंनेरना है लेकिन अध्ययन के लिए (अ) वर्ग और वर्ष (ब) में मुख्य रूप से चोकन्गनेरना एवं चन्दनग्याप्ता पर ही क्रम से अध्ययन किया गया। प्रत्येक वर्ग के 30 रोगियों की चिकित्सा की गई। इस अध्ययन से ज्ञात किया गया चोकन्गनेरना का प्रभाव चन्दनग्याप्ता के प्रभाव से अच्छा रहा तथा चम्पारोग लक्षणों में तीव्र लाभकारी है। एकक के वहिरंग रोगी विभाग में इस प्रतिवेदित वर्ष में 3613 रोगियों का उपचार किया गया।

वर्ष 1984-85 की अवधि में अन्तरंग रो. वि. एवं ब. रो. विभाग में चिकित्सित रोगी तालिका

क्र. सं.	केन्द्र/संस्थान	रोगियों की संख्या				विस्तर-क्षमता (प्रतिशत)
		ब.रो.वि.		अं.रो.वि.		
		नये	पुराने	कुल	प्रविष्ट	
1	2	3	4	5	6	7
1.	भा.पं.सं., चेरुतुरुति	0075	28545	34520	205	79.89
2.	भा.का.चि.सं., पटियाला	9670	9657	19327	380	52.59
3.	के.अनु.सं., दिल्ली	15521	23483	39004	422	68. 7
4.	के.अनु.सं., भुवनेश्वर	8590	12322	20912	233	37. 5
5.	क्षे.अनु.सं., जयपुर	4597	4963	9560	227	60.18
6.	क्षे.अनु.सं. कलकत्ता	3069	14442	17511	अभी तक अंकित नहीं	

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7
7.	क्षे.अनु.सं., त्रिवेंद्रम	5752	—	5752	76	72
8.	क्षे.अनु.सं., जूनागढ	5397	15842	21289	71	22.65
9.	क्षे.अनु.सं., ग्वालियर	7168	6812	13980	154	48. 1
10.	क्षे.अनु.सं., पटना	4807	9885	14692	80	90.67
11.	क्षे.अनु.सं., लखनऊ	8035	12564	20599	36	7.09
12.	क्षे.अनु.के., नागपुर	2079	9248	11327	अभी तक स्थापित नहीं	
13.	क्षे.अनु.के., बंगलौर	1553	3425	4978	" " " "	
14.	क्षे.अनु.के., विजयवाडा	3862	7198	11060	60	56
15.	क्षे.अनु.के., हस्तिनापुर	8268	5730	13998	12	23
16.	क्षे.अनु.के., झांसी	1853	1908	3761	अभी तक अंकित नहीं	
17.	क्षे.अनु.के., जम्मू	7186	9302	16488	" " " "	
18.	क्षे.अनु.के., सिक्किम	3856	1212	5068	11	3. 5

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7
19.	क्षे.अनु.के., ईटानगर	3264	3580	5944	अभी तक स्थापित नहीं	
20.	क्षे.अनु.के., मण्डी	6132	6486	12618	" " " "	
21.	ए.ल.अनु.सं., मद्रास	261	420	681	48	उपलब्ध नहीं
22.	आयु.अनु.एकक, बगलौर	304	711	1015	20	18. 8
23.	नि.चि.अनु.ए., हैदराबाद		अलग से व.रो.वि. की सुविधा नहीं		79	उपलब्ध नहीं
24.	नि. चि.अनु.ए., कोट्टाकल		" " " "		182	82. 3
25.	नि.चि.अनु.ए., (एटी एवं एमटी) वाराणसी	20	—	20	—	—
26.	" " " " पूना	6	—	6	—	—
27.	" " " " बम्बई	603	—	603	15	—
28.	आमला कैंसर अस्पताल, त्रिचुर	—	—	—	80	58. 2
	कुल योग	1,20,828	1,87,835	3,08,663	2392	

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

देश में तकनीकी विज्ञान का अधिकाधिक विकास होने पर ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों के निवासियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा सुविधा प्रदान करने की समस्या अभी भी यथावत बनी हुई है। परिषद के चल चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रमों द्वारा लोगों के जीवन स्तर, वहां के रहन-सहन की दशा, जिसका स्वास्थ्य पर प्रभाव, आहार स्वभाव तथा सामान्य पाये जाने वाले रोगों का अध्ययन इन एककों द्वारा किया जाता है। आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम अभी हाल ही में प्रारंभ किया गया है जिससे इन क्षेत्रों के लोगों की स्वास्थ्य रक्षण समस्याओं पर विस्तृत रूप से ध्यान दिया जा सके। इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत स्वास्थ्य संबंधी आंकड़े एकत्रित करना, जनश्रुति पर आधारित औषध दावों को एकत्रित करना और इसके साथ ही ग्रामीण एवं आदिवासी लोगों को सामयिक चिकित्सा सहायता प्रदान करना सम्मिलित हैं। इस कार्यक्रम में कुछ एक सामान्य रूप से पाये जाने वाले रोगों पर चिकित्सोपयोगी परीक्षण करना भी सम्मिलित है।

चल चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परिषद् में 17 चल-चिकित्सा अनुसंधान एकक, परिषद् के विभिन्न संस्थानों तथा स्वतंत्र रूप से अगल चल रहे चल चिकित्सा अनुसंधान एककों में कार्यरत् हैं। इन एककों द्वारा अब तक 46 ग्रामों की 27, 209 जनसंख्या का सर्वेक्षण कार्य किया गया है। कुल 12, 194 रोगियों को सामयिक चिकित्सा प्रदान की गई जिनका विस्तृत विवरण अनुलग्नक I पर देखें।

सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण लोगों को स्वास्थ्य रक्षा के उपाय बताना, सामान्य रोग लक्षणों की पहचान बताना तथा क्षेत्र विशेष में उपलब्ध औषध पादपों का उपयोग सामान्य रोगों की चिकित्सा हेतु बताना है। इसके साथ ही आहार स्वभाव, पर्यावरण, व्यवसाय आदि जो रोगोत्पादन कारण होते हैं उनकी पहचान करना। इस कार्यक्रम में चिकित्सा दलों द्वारा ग्रामीण लोगों को स्वास्थ्य रक्षा के लिए उन्हें

विचार-विमर्श द्वारा शिक्षा देना तथा दूसरे स्वास्थ्य रक्षक जीवनोपयोगी पहलुओं को प्रस्तुत करना है। इस कार्यक्रम में लगभग 35 ग्रामों की 36,000 जनसंख्या का सर्वेक्षण किया जा चुका है। 14,000 लोगों को सामयिक चिकित्सा भी प्रदान की गई है। विस्तृत विवरण अनुलग्नक-2 में देखें।

आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पिछड़ी जातियों तथा अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिवासी जनजातियों के लोगों को स्वास्थ्य रक्षा तथा चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए उपयुक्त उपाय/समाधान सम्मिलित हैं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्तमान में कार-निकोबार (अण्डमान द्वीप समूह), रंका ब्लाक (जिला पलामू-बिहार), नवापुर (जिला धूले - महाराष्ट्र), रामा ब्लाक (झबुआ-मध्य प्रदेश) और जीरो (अरुणाचल प्रदेश) में कार्य प्रारंभ किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 25 आदिवासी क्षेत्रों/ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया है जिसके अन्तर्गत 21,000 जनसंख्या का सर्वेक्षण कार्य पूरा किया गया है तथा 12,000 लोगों को सामयिक चिकित्सा प्रदान की गई। विस्तृत विवरण अनुलग्नक-3 में देखें।

अनुलग्नक—1

चल-चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रम

क्र. सं.	संस्थान/केन्द्र/एकक का नाम	सर्वेक्षित ग्रामों का नाम	सर्वेक्षित गांवों की जनसंख्या	चिकित्सित रोगी सं.	सामान्य रोग
1	2	3	4	5	6
1.	के.अनु.सं.(आयु.), भुवनेश्वर	जगन्नाथ प्रसाद पुबासन	1527 2902 1375	942	अतिसार, ज्वर, कास, कृमि कण्डू, कटिशूल, रक्तविकार, श्लीपद, संधिवात, त्वक्‌रोग, व्रण, अम्लपित्त और प्रतिश्याय।
2.	भा.प.सं., चेरुतुरुति	पुलाकोडे (चिलकारा)	2328	607	अम्लपित्त, कास, कृमि, कटिशूल, मुखरोग, पाण्डु, त्वक्‌रोग, उदरशूल, और वात व्याधि।
3.	भा.का.चि.सं., पटियाला	प्रतापगढ़ राजगढ़ इसापुर तरेन	145 419 926 168 194	835	ज्वर, कास, प्रतिश्याय, श्वास, संधिशूल, और उदरशूल।

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5		6
4.	क्षे.अनु.सं., जयपुर	सुमेल	469		1808	अतिसार, ग्रहणी दोष, ज्वर, कास, कर्णरोग, नेत्ररोग, प्रदर, रक्तविकार, त्वक्रोग, उदर-शूल और व्रण इत्यादि।
		मुडेला	374	1986		
		रामपुर	262			
		नर्सिगपुर	153			
		बैताल	138			
		चौकलियावास	340			
		दयारामपुर	250			
5.	क्षे.अनु.के., नागपुर	मोंधा	834	1383	757	अतिसार, अम्लपित्त, कास, पाण्डू, श्वास, श्लीपद, संधिवात, वातव्याधि।
		कानहन	549			
6.	क्षे.अनु.के., विजयवाडा	अम्बापुरम्	2300		443	ज्वर, कास, कटिशूल, नेत्ररोग, श्वास, संधिवात, उदरशूल और दौर्बल्य।
7.	क्षे.अनु.के., बगलौर	एजीपुर	1450		1445	अतिसार, अम्लपित्त, बालशोष, ज्वर, कास, कर्णरोग, कण्डू, कटिशूल, कोष्ठबद्धता, मुखरोग,

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6
					प्रदर, श्वास, शिरःशूल, संधि-शूल, त्वक्‌रोग, उदरशूल, व्रण वातव्याधि ।
8.	क्षे.अनु.के., झांसी	मथुरापुर	1000	119	अतिसार, कास, श्वेतप्रदर, संधिशूल और त्वक्‌रोग ।
9.	क्षे.अनु.के., ईटानगर	चम्पो हुका बाथ प्राचीन अम्बा एमची	925	163	अतिसार, ज्वर, कास, कटिशूल, कृमि, विषम ज्वर, पामा, उदरशूल, वातव्याधि और ग्रहणी दोष ।
10.	चल चि.अनु.ए. वाराणसी	रमरपुर	1460	456	अतिसार, आंतरिक, ज्वर, विषमज्वर, कृमिरोग, प्रदर और त्वक्‌रोग ।

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6
11.	के.अनु.सं. (आयु.), दिल्ली	अलीपुर बकोली	847	381	अतिसार, उदररोग, कर्णरोग, प्रतिश्याय, वातिक शूल, कास, ज्वार, मुखरोग, त्वक्‌रोग, स्त्री-रोग अम्लपित्त ।
12.	क्षे.अनु.के., गंगटोक	कारतोक संगधांग चेंज तुस्लुमिथंग	3378	364	गलगंड, ज्वर, कास, कृमि, कर्णरोग, नेत्ररोग, प्रतिश्याय, प्रदर, श्वास, शिर शूल, त्वक्‌-रोग, उदरशूल ।
13.	क्षे.अनु.सं., पटना	सुल्तानपुर	937	984	अतिसार, अम्लपित्त, कास, कृमि, कटिशूल, पाण्डू, प्रवाहिका, श्वास और त्वक्‌रोग ।
14.	क्षे.अनु.सं., ग्वालियर	उटीला हस्तिनापुर	233	1265	कण्डू, कास, उदरशूल, वात-व्याधि, प्रतिश्याय, नेत्र रोग और ज्वर ।
15.	क्षे.अनु.के., कलकत्ता	छहोटा चन्दरपुर	अंकित नहीं	अंकित नहीं	ज्वर, कास, कृमि, श्वास रोग, अम्लपित्त, पाण्डु ।

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6
16.	क्षे.अनु.के., मण्डी	छम्बी कगार भरारी	754	369	—
17.	क्षे.अनु.के., हस्तिनापुर	बमनौली तारापुर फाजिलपुर दुधली	3300	1256	ज्वर, कास, उदरशूल, अतिसार, प्रतिश्याय, विषमज्वर, प्रदर, श्वास ।
		कुल योग 46	27,209	12,149	

आसपास के निवासियों ने भी चिकित्सा से लाभ उठाया ।

अनुलग्नक—2

सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम

क्र. सं.	संस्थान/केन्द्र/एकक का नाम	गांवों का नाम	गांवों की जनसंख्या	रोगियों की संख्या	व्याप्त रोग
1	2	3	4	5	6
1.	के.अनु.सं., भुवनेश्वर	मुण्दमुहान शिशुपलगहा	1957	778	आमवात, कास, ज्वर, कर्णरोग, रक्त-विकार, श्लीपद, संधिवात, अम्लपित्त, कृमि, त्वक् रोग।
2.	भा.पं.सं., चेरुतुरुति	पिलाक्काद (वारवू)	1678	803	—
3.	भा.पं.सं., पटियाला	चौरा नूरखेरी सेयोना	2700	1679	आमवात, ज्वर, कास, पाण्डु, उदरशूल, यकृत-विकार, इत्यादि।

तालिका क्रमशः

1	2	3	4		5	6
4.	क्षे.अनु.सं., जयपुर	सिवार धनीएस	5300		2907	अतिसार, ग्रहणी दोष, ज्वर, कास, कर्णरोग, मुखरोग, नेत्र-रोग, पाण्डु, रजोदोष, शिरःशूल, त्वक्‌रोग, व्रण, वातरोग, उदरशूल ।
5.	क्षे.अनु.सं., जूनागढ	तेरनिया	1500		565	अतिसार, ज्वर, कर्णरोग, प्रदर, श्वास, शीतपित्त, त्वक्‌रोग, व्रण, वातव्याधि ।
6.	क्षे.अनु.के., नागपुर	बजारगांव	1141		484	आमवात, कटिशूल, श्वास, श्लीपद, त्वक्‌रोग, विषम ज्वर, विचर्चिका ।
7.	क्षे.अनु.के., जम्मू	जलियाल जागीर सोई भुगखेद	494 335 404	1233	1325	अतिसार, ज्वर, कास, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, राज्यक्ष्मा, व्रण ।
8.	क्षे.अनु.के., झांसी	बवाल	2000		116	ज्वर, कास, प्रतिश्याय, श्वेत-प्रदर, श्वास, त्वक्‌रोग, वात विकार ।

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6
9.	क्षे.अनु.के. ईटानगर	पाचिन	—	69	अतिसार, ग्रहणीदोष, कास, कर्ण-रोग, पामा, प्रतिश्याय, उदर-शूल, व्रण, वातव्याधि ।
10.	डॉ. ए.एल.प.भा.चि.अनु.ए., मद्रास	सेवन (सभी पुराने गांव)	10,800	680	अतिसार, ज्वर, कास, कृमि, कर्णरोग, पांडु, त्वक्‌रोग व्रण, व्याधि ।
11.	क्षे.अनु.सं., पटना	मोजीपुर	1157	255	अतिसार, ज्वर, कास, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, पक्षाघात, त्वक्‌रोग, विषम ज्वर, व्रण ।
12.	क्षे.अनु.के., गंगटोक (सिक्किम)	नामली संजोंग रुमटेक	1817	238	अतिसार, अम्लपित्त, ज्वर, कास, कृमि, प्रतिश्याम, प्रदर, शिरःशूल, त्वक्‌रोग, उदरशूल ।

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6
13.	संयुक्त अनु. एकक, ताड़ीखेत (रानीखेत)	हरयून	1459	1759	प्रदर, कृमि, ज्वर, कण्डु, दंत-रोग, उदर-विकार, आध्मान, मूत्ररोग, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, नेत्ररोग, दाह, ग्रहणी, अतिसार, उदरशूल, अर्श, अम्लपित्त इत्यादि।
14.	क्षे.अनु.के., ग्वालियर	अरों और रानीपुर	763	990	कण्डु, कास, ज्वर, प्रतिश्याय, उदरशूल, वातव्याधि।
15.	क्षे.अनु.सं., कलकत्ता	धरोसा मोकन्तरपुर	अंकित नहीं	अंकित नहीं	अतिसार, ज्वर, कास, अम्ल-पित्त, त्वक्‌रोग।
16.	क्षे.अनु.के., मण्डी	छाम्बी	209	89	— —
17.	क्षे.अनु.के., हस्तिनापुर	सन्तपुरा कम्हेसा बाग बसतोरा नारंगपुर	3800	1693	उदरशूल, अतिसार, कास, श्वास, ज्वर, अम्लपित्त, मुखरोग।
		कुल योग 35	36814	14430	

आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

क्र. सं.	संस्थानों/केन्द्र/एकक का नाम	सर्वेक्षित ग्राम का नाम	सर्वेक्षित ग्राम की जनसंख्या	रोगियों की की संख्या	व्याप्त रोग
1.	रंका (गढ़वा) पलामू (बिहार)	रंका करदिहा, मैनपुर, खपरो, बोरी, तेनुदीह, सिहजो	10,400	750	अम्लपित्त, गलगण्ड, ज्वर, कास, कटिशूल, त्वक्‌रोग, शूल, पाण्डु, कर्णरोग ।
2.	नवापुर (धूले), महाराष्ट्र	चिचपडा किलपदा, गंगापुर, सोनार, भांगरोदा, तरोदा	9,700	9361	अतिसार, अम्लपित्त, आमवात, ग्रहणी दोष, ज्वर, कास, कृमि, कटिशूल, मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, संधिवात, श्वास, त्वक् रोग, उदरशूल, वात-व्याधि ।
3.	जीरो (अरुणाचल प्रदेश)	किमिन, दोरपा, कोमस्का, लोवरशेर, अपरशेर, लोअरलीची, अपर लीची, जिमी, शिरोसिबे, हाखेरा, जार	1,418	2274	अतिसार, अर्श, अम्लपित्त, गलगण्ड, ज्वर, कास, कृमि, कण्डु, कोष्ठबद्धता, प्रतिश्याय, प्रदर ।
4.	झबुआ (मध्य प्रदेश)	112 जनश्रुति औषध दावे, 135 औषध कुलों की एक सूची तैयार की गई जो इस क्षेत्र में पाये जाते हैं और 200 हरबेरियम औषध नमूने एकत्र किये । इसके अतिरिक्त 20 औषधियाँ भी एकत्र की ।			

औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण

औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण

जीव-चिकित्सीय अनुसंधान कार्यक्रम में औषध पादपों का प्रमुख स्थान है। अतः यह आवश्यक है कि संपूर्ण भारतवर्ष की औषध वनस्पतियों की खोज हेतु सर्वेक्षण कार्य किया जाए। इस कार्य में संलग्न एककों के मुख्य कार्यों में वनों से प्राप्त औषध द्रव्यों की खोज हेतु सर्वेक्षण करना सम्मिलित है जिससे कि क्षेत्र विशेष की औषधियों की पहिचान, उपलब्धता एवं उनमें मिलावट/प्रतिनिधि द्रव्यों संबंधित सूचना प्राप्त की जा सके। इसके साथ ही इन एककों के कार्य में उद्भिज संग्रहालयों का विकास भी सम्मिलित है। सर्वेक्षण दलों द्वारा देश में पाई जाने वाली औषधियों का मात्रिक एवं मूल्यांकन भी होता है। यह दल औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण देश के आदिवासी क्षेत्रों से वहां के रहने वालों की आदतों, सामाजिक रीति-रिवाजों एवं आर्थिक-स्तर से संबंधित सूचनाएं भी एकत्रित करते हैं।

वर्ष 1984-85 में देश के विभिन्न भागों में स्थित 17 औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण एककों ने विस्तारपूर्वक सर्वेक्षण कार्य किया जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है—

आंध्र प्रदेश में सर्वेक्षण एकक, विजयवाडा में स्थित है। इस एकक ने चित्तौड़ पूर्वी वन प्रभाग एवं पश्चिमी चित्तौड़ वन प्रभाग का सर्वेक्षण कार्य किया और सर्वेक्षण अवधि में 200 औषध पादप नमूनों का संकलन किया। कुल 980 औषध पादप नमूनों जो पूर्व और वर्तमान संग्रहीत थे उनको व्यवस्थित रूप से उद्भिदालय में रखने के लिए आरोपित प्रतिदर्श बनाया गया तथा 208 पादपों की अनुवृद्धि की गई। इस एकक ने 330 संदर्भ पत्र भी तैयार किए तथा 250 जनश्रुति औषध दावों को एकक किया। 15 औषध नमूनों की 50 कि. ग्रा. अपरिष्कृत औषध एकत्र कर आपूर्ति की गई।

अरुणाचल प्रदेश की सर्वेक्षण एकक, ईटा नगर में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने ईटानगर, बदरदेव, सं ीव्यू, जुल्ली, पामा ग्राम एवं दोईमुखी क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया तथा 16 औषध वनस्पति जातियों के 78 औषध पादप नमूनों का संकलन किया और लगभग 53 औषध पादप नमूनों का आरोपित प्रतिदर्श (माउन्टिंग) तैयार किया।

इस एकक ने अपने उद्भिदालय में 1144 औषध पादप नमूनों की तथा संग्रहालय में 175 औषध नमूनों की अभिवृद्धि की।

असम में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, गौहाटी में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने वृहत्तर गौहाटी, पिनुर्सला, जोआई एवं मेघालय की खासीं पहाड़िमों तथा उत्तरी कामरूप वन क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य किया। इस एकक ने 240 औषध पादपों का आरोपित प्रतिदर्श तैतार किया तथा 56 औषध पादप नमूनों की उद्भिदालय में अनुवृद्धि की। इस एकक ने 18 औषध नमूनों का लगभग 200 किलोग्राम औषध संग्रह भी आपूर्ति उद्देश्य से किया।

बिहार में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, पटना में स्थिति है। इस सर्वेक्षण एकक ने राजमहल पहाड़ियों, मूंगेर वन प्रभागों का सर्वेक्षण कार्य किया। इसके साथ ही बंभौरी के संकलन के लिए पलामू का विशिष्ट सर्वेक्षण भी किया। सर्वेक्षण कार्य की अवधि में लगभग 300 औषध पादप नमूने जिसमें 65 कुल, 233 वंश एवं 270 जातियाँ सम्मिलित हैं। कुल मिलाकर 240 औषध पादप सीटों का आरोपित प्रतिदर्श बनाया गया। लगभग 200 औषध पादप नमूनों की अनुवृद्धि की गई। संग्रहालय में औषध नमूनों की अभिवृद्धि की गई। इस एकक ने औषध आपूर्ति के उद्देश्य से 16 औषध नमूनों की 210 कि. ग्रा. औषध एकत्रित की। इसके साथ ही 17 जनश्रुति औषध दावों को भी एकत्र करने की सूचना दी गई है।

गुजरात में कार्यरत् एकक, जूनागढ में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने कक्ष वन क्षेत्र जिसमें चित्तोड़, आदेश्वर, मंडरा तथा डूंगरपुर, बोरदेवी इत्यादि जो कि गिरनार प्रभाग में स्थित है का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण अवधि में 64 औषध पादप नमूनों को एकत्रित किया गया जो 28 कुलों, 50 वशों एंव 60 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लगभग 712 औषध-पादप नमूनों का आरोपित प्रतिदर्श तैयार किया गया। इस एकक ने औषध आपूर्ति के उद्देश्य से 7 औषध नमूनों की लगभग 150 कि. ग्रा. औषधि को एकत्र किया। 12 जनश्रुति औषध दावों को एकत्रित करने की भी सूचना प्राप्त हुई है।

जम्मू-कश्मीर में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, जम्मू में स्थित है। इस एकक ने ललियाल जगीर, सोई तथा जम्मू प्रभाग में स्थित भुर्जखाड़े का सर्वेक्षण कार्य किया तथा लगभग 40 औषध पादप नमूनों को एकत्र किया जिसमें 38 कुलों, 39 वंशों को सम्मिलित किया है। कुल मिलाकर 248 औषध पादप नमूनों को उद्भिदालय में रखने के लिए आरोपित प्रतिदर्श की व्यवस्था की गई तथा 799 औषध पादप

नमूनों की अनुवृद्धि की गई। इस एकक ने 50 जनश्रुति औषध दावों को भी एकत्र किया। लगभग 180 सदर्भ–सूची कार्ड तैयार किये गये।

कर्नाटक में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, बंगलौर में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने सोमवरपेट, गंगावरा, ईगूर, मेरोरा, सपेज, जोदुपला, एवं नागरहोल, कुदटा, श्रीमंगल, विराजपेट इत्यादि का सर्वेक्षण कार्य किया और 154 औषध पादप नमूनों को एकत्र किया गया जो 61 कुलों, 124 वंशों तथा 151 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल मिलाकर 760 औषध पादप नमूनों की सीटों का आरोपित प्रतिदर्श तैयार कर उद्भिदालय में रखा गया और इस प्रकार 230 औषध नमूनों की अनुवृद्धि की गई। लगभग 234 संदर्भ सूची कार्ड तैयार किए गए। इस एकक ने एक पुस्तक "अण्डमान निकोबार द्वीप औषध-वानस्पतिक संग्रह" तैयार कर प्रकाशन हेतु परिषद् को भेजा है।

मध्य–प्रदेश में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, ग्वालियर में स्थिर है। इस सर्वेक्षण एकक ने बांदा एवं ग्वालियर के स्थानीय वन प्रभागों का सर्वेक्षण कार्य किया। 296 औषध पादप नमूनों को एकत्रित किया गया। 2,700 सीटों को उद्भिदालय हेतु आरोपित प्रतिदर्श व्यवस्थित किया गया। 998 हर्बेरियम शीटों का अनुक्रम तैयार किया गया तथा लगभग 36 औषध पादप नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई। इसके साथ ही 9 जनश्रुति औषध दावों को भी एकत्रित किया गया।

महाराष्ट्र में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, नागपुर में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने अमरावती वन प्रभाग एवं नागपुर वन प्रभाग का सर्वेक्षण कार्य किया। 158 औषध पादपों की क्षेत्र पुस्तिका संख्या बनाई जिसमें 44 कुल, 65 वंश तथा 46 जातियों सम्मिलित हैं। उद्भिदालय के लिए 246 औषध पादप नमूनों को आरोपित प्रतिदर्श (माउंट) किया गया। कुल मिलाकर 280 औषध पादप नमूनों की अनुवृद्धि की गई। लगभग 51 औषध नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई। औषध आपूर्ति के उद्देश्य से 16 औषध नमूनों को जिनका भार 50 कि. ग्रा. है एकत्रित किया गया। इसके साथ ही 40 जनश्रुति औषध दावों का भी संकलन किया गया तथा उनसे संबंधित सूचनाएं एकत्र की गईं।

उड़ीसा में कार्यरत् सर्वेक्षण एकक, भुवनेश्वर में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने बल्लीगुड़ा वन प्रभाग का सर्वेक्षण किया और 150 औषध पादप नमूनों को एकत्रित किया जो 54 कुलों, 105 वंश एवं 50 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उद्भिदालय के 690 औषध पादप नमूनों का आरोपित प्रतिदर्श व्यवस्थित किया गया और कुल 805 नमूनों की अनुवृद्धि की गई। औषध आपूर्ति हेतु 10 औषध नमूनों की 105 कि.ग्रा. औषध एकत्र की गई। 48 अनुश्रुति औषध दावे भी एकत्रित किए गए।

राजस्थान में कार्यरत सर्वेक्षण एकक, जयपुर में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने कोटा वन प्रभाग का कार्य किया और 204 औषध पादप नमूने एकत्रित किए जो 67 कुल, 166 वंश एवं 189 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उद्भिदालय में 297 औषध पादप नमूनों के आरोपित प्रतिदर्श व्यवस्थित किए गए और 577 की अनुवृद्धि की गई। संग्रहालय में 19 औषध नमूनों की अभिवृद्धि की गई। औषध आपूर्ति के उद्देश्य से 15 औषध नमूनों की 85 कि.ग्रा औषध एकत्र की गई। कुल मिलाकर 57 जनश्रुति औषध दावे भी एकत्र किए गए।

सिक्किम में कार्यरत सर्वेक्षण एकक तडुंग में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने पश्चिमी सिक्किम वन क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य किया और लगभग 281 औषध पादप नमूने एकत्रित किए जो 57 कुलों एवं 145 वंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। संग्रहालय में 2 औषध नमूनों की अभिवृद्धि की गई तथा केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली को आवश्यकतानुसार औषध नमूनों की आपूर्ति की गई। पश्चिमी सिक्किम का सर्वेक्षण कार्य केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली एवं आमची अनुसंधान एकक, लेह-लद्दाख के सहयोग से किया गया।

उत्तर प्रदेश में कार्यरत औषध पादप सर्वेक्षण एकक, झाँसी में स्थित है। इस सर्वेक्षण एकक ने क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर के सहयोग से सर्वेक्षण कार्य किया। सर्वेक्षण क्षेत्रों में बांदा वन प्रभाग, करुई वन क्षेत्र इत्यादि सम्मिलित है। सर्वेक्षण अवधि में 278 औषध पादप नमूने एकत्र किए गए जो 70 वनस्पति कुलों, 180 वंशों एवं 225 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। संग्रहालय में 34 औषध नमूनों की अभिवृद्धि की गई। 7 औषध नमूनों का 307 कि.ग्रा. औषध संग्रह, आपूर्ति हेतु किया गया। ताड़ीखेत (उत्तर प्रदेश) में स्थित सर्वेक्षण एकक ने अल्मोड़ा वन प्रभाग, आगरा वन प्रभाग का सर्वेक्षण किया तथा 841 औषध पादप नमूनों की एकत्रित किया। सर्वेक्षण अवधि में 17 नमूनों को एकत्रित कर संग्रहालय में रखा गया तथा 25 जनश्रुति औषध दावों को भी एकत्रित किया गया। संग्रहालय में 36 जातियों, 4 उपजातियों की वृद्धि कर इसका संवर्द्धन किया गया और उद्भिदालय में 1099 औषध पादप सीटों की अनुवृद्धि की गई। 36 औषध नमूनों की 21,435 कि.ग्रा. औषध आपूर्ति हेतु संग्रह की गई।

वर्ष 1984-85 की अवधि में केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् द्वारा किए गए औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्य के सारांश की एक झलक

क्रम संख्या	एकक	कुल सर्वेक्षित वन क्षेत्र	कुल औषध पादप नमूनों की उदभिदालय में अभिवृद्धि	कुल औषध पादप नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि	कुल पहचान किए गए पादप	कुल औषध पादप संपुष्टि हेतु शेष	बी.एस.आई. यात्राएँ	औषध आपूर्ति	कुल जनश्रुति औषध दावे
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	आंध्र प्रदेश (विजयवाडा)	2	208	—	150	शून्य	शून्य	15 नमूने लगभग 15 कि.ग्रा.	250
2.	अरुणाचल प्रदेश (ईटानगर)	6	1144	144	16	39	—	—	शून्य
3.	असम (गौहाटी)	10	—	—	56	—	—	18 नमूने 200 कि.ग्रा.	3

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
4.	बिहार (पटना)	2	200	16	230	100	—	16 नमूने लगभग 210 कि.ग्रा.	17
5.	गुजरात (जूनागढ)	4	—	—	228	147	—	7 नमूने लगभग 15 कि.ग्रा.	12
6.	हिमाचल प्रदेश (मण्डी)	—	—	—	—	—	—	—	—
7.	जम्मू-काश्मीर (जम्मू)	3	799	—	—	38	—	—	5
8.	कर्नाटक (बंगलौर)	3	230	—	—	160	—	—	—
9.	केरल (त्रिवेन्द्रम)	—	—	—	—	—	—	—	—
10.	मध्य प्रदेश (ग्वालियर)	2	998	36	—	700	—	26 नमूने लगभग 400 कि.ग्रा.	9
11.	महाराष्ट्र (नागपुर)	4	280	51	45	—	—	16 नमूने लगभग 50 कि.ग्रा.	40
12.	उड़ीसा (भुवनेश्वर)	1	805	—	285	200	सी.एन. एच. 86 जाति पहचान	10 नमूने 105 कि. ग्रा.	48

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
13.	राजस्थान (जयपुर)	1	577	19	125	—	—	15 नमूने लगभग 85 कि. ग्रा.	57
4.	सिक्किम (तंडंग)	7	3189	2	—	—	—	—	—
15.	उत्तर प्रदेश (झांसी)	2	—	34	7500	—	—	7 नमूने लगभग 300 कि. ग्रा.	—
16.	,, (ताड़ीखेत)	5	1099	36	7593	1325	—	36 नमूने 21, 433 कि. ग्रा.	25
17.	पश्चिमी बंगाल (कलकत्ता)	—	—	—	—	—	—	—	—
	कुल योग	52	9529	338	16228	2709	—	166 नमूने	466

भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

परिषद के तत्वावधान में भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान एकक, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, जम्मू एवं पूना में कार्यरत हैं। इन अनुसंधान एककों ने इस वर्ष में निम्नलिखित 14 औषधियों का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन किया जिन्हें आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में विभिन्न रोगों की चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। परिषद ने विगत वर्षों में लगभग 13 महत्वपूर्ण आयुर्वेदीय औषधियों का भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन किया है।

1. बाकुची
2. देवदारु
3. धन्वयास
4. जीवन्ती
5. माधवी
6. मुद्गपर्णी
7. मुण्डी
8. नारिकेल
9. न्यग्रोध
10. पद्मक
11. पाटला
12. ऋषभक
13. साल
14. ताल

भेषजअभिज्ञानीय अध्ययनों में विभिन्न पादपों के स्रोत, संकलन, पहिचान एवं उनके भागों का सूक्ष्म एवं सूक्ष्मदर्शीय संरचना (गुणात्मक एवं मात्रिक दोनों) नैदानिक विश्लेषण, विशुद्धता परीक्षण, प्रारम्भिक पादप-रासायनिक अध्ययन, वर्णलेखन सम्बन्धी अध्ययन एवं प्रतिदीप्ति विश्लेषण अध्ययन सम्मिलित हैं। इसके साथ ही कोशिका घटकों का रसायनविज्ञानीय एवं उनकी संरचना विधि का भी अध्ययन किया जाता है। इन रसायन-वर्गीय अध्ययनों से प्रामाणिक औषध द्रव्य की पहचान करने में सहायता मिलती है तथा अवैध एवं अपमिश्रणीय औषध द्रव्य को ज्ञात किया जा सकता है।

औषध पादप कृषि कार्यक्रम

औषध पादप कृषि कार्यक्रम

परिषद के अन्तर्गत झाँसी (उ.प्र.), मांगलियावास (राज.) पूना (महा.) और रानीखेत (उ.प्र.) नामक स्थानों में चार औषध पादप कृषि उद्यान हैं जिसमें प्रायोगिक-स्तर तथा बड़े पैमाने पर औषध पाद्रप कृषि की जा रही है। इन उद्यानों में लगभग 250-300 औषध पादपों की कृषि की जा रही है, जिनका आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में विशेष महत्व हैं।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसंधान तथा भेषज निर्माण कार्यों के लिए उत्तम प्रामाणिक औषध सामाग्री को पर्याप्त मात्रा में सुलभ कराना है। औषध पादप कृषि कार्यक्रम में उष्णकटिबंधीय, अर्ध-उष्णकटिबंधीय एवं सामान्य क्षेत्रों तथा इसके अतिरिक्त अन्य स्थानिक क्षेत्रों को भी सम्मिलित किया गया है। ये विभिन्न औषध-पादप उद्यान दुर्लभ औषधियों/कठिनता से उत्पन्न औषध-पादप जातियों को सफलतापूर्वक उत्पादन हेतु उपयुक्त कृषि तकनीक/विधियां भी प्रदान करते हैं। रानीखेत क्षेत्र में केसर की इससे पूर्व उपलब्धता न होने की दृष्टि से इसकी कृषि का करना विशेष महत्व का द्योतक है। केसर की कृषि का कार्य अभी प्रयोगात्मक-स्तर पर ही किया जा रहा है और ताड़ीखेत की जलवायु सम्बन्धी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए केसर कृषि कार्य की उपलब्धि, गुणवत्ता को बनाए रखने हेतु अनेक वैज्ञानिक विधियां/तकनीक अपनाई जा रही हैं। मांगलियावास में गुग्गुलु की प्रयोगात्मक कृषि करने से पर्याप्त सूचना प्राप्त हुई है जिससे कि इसकी बड़े पैमाने पर कृषि की जा सकती है और गुग्गुलु औषध प्राप्त की जा सकती है। प्रयोगात्मक कृषि कार्यक्रम के सफल परिणामों को ध्यान में रखते हुए इन औषध पादप उद्यानों में प्रयोगात्मक कृषि के साथ ही बड़े पैमाने पर कृषि कार्य प्रारम्भ किया गया है। इसके साथ ही इन उद्यानों में कतिपय अत्यन्त महत्वपूर्ण औषध पादपों की भी कृषि की जाती है।

औषध पादप कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यरत केन्द्रों के कार्यों को संक्षिप्त रूप से आगे दिया जा रहा है :—

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, झांसी

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, झांसी के पास औषध पादप कृषि हेतु 45 एकड़ भूमि है। व्यावहारिक रूप से सम्पूर्ण भू-क्षेत्र रेतीला, भुरभुरा और चट्टानी है। वर्तमान में केवल 15 एकड़ भू-भाग में प्रयोगात्मक तथा बड़े पैमाने पर कुछ महत्वपूर्ण आयुर्वेदीय औषध पादपों की कृषि की जा रही है। व्यापक पैमाने पर जिन महत्वपूर्ण पादपों की कृषि की जा रही है इसमें शतावरी, अश्वगंधा, यष्टिमधु, घृतकुमारी इत्यादि सम्मिलित हैं। प्रयोगात्मक कृषि कार्यक्रम में इसबगोल, सदापुष्पी, चित्रक, पिप्पली इत्यादि औषध पादप सम्मिलित हैं। केन्द्र ने विभिन्न कृषि रासायनिक तकनीकों को अपनाकर औषध पादपों की उपज एवं सक्रिय प्रधान तत्वों में वृद्धि करने के भी प्रयास प्रारम्भ किए हैं। इस केन्द्र ने परिषद् के विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों को 25 औषध पादप जातियों की लगभग छः (6) क्विंटल अपरिष्कृत औषध सामाग्री की आपूर्ति की।

गुग्गुलु औषध पादप उद्यान, मांगलियावास, राजस्थान

इस उद्यान का मुख्य कार्यक्रम गुग्गुलु की बड़े पैमाने पर कृषि करना और विभिन्न प्रयोगात्मक अवस्थाओं में उसकी वृद्धि का अवलोकन करना है। वर्तमान में औषध पादप कृषि कार्यक्रम लगभग 24 एकड़ भू-भाग में किया जा रहा है और इस उद्यान का कुल क्षेत्र 142 एकड़ हैं। शेष भू-भाग में प्राकृतिक रूप से औषध पादप उपज होती है। इस भू-भाग की मिट्टी रेतीली और प्राकृतिक रूप से लवणयुक्त है। इस समय 18,695 गुग्गुलु पादपों की कृषि की जा रही है। इस वर्ष में जिन अन्य महत्वपूर्ण औषध जातियों की कृषि प्रारम्भ की गई है उनमें शल्लकी, करंज, इंगुदी, आमलकी, अमलतास एवं सदापुष्पी सम्मिलित हैं। करंज, शतावरी, एरंड, निम्ब, सदापुष्पी आदि का प्रजनन सम्बन्धी अध्ययन करने से प्रयोगात्मक अध्ययनों के उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त हुए हैं। इस वर्ष में 12.2 किलोग्राम गुग्गुलु और लगभग 10 अन्य महत्वपूर्ण औषध पादपों की लगभग 50 किलोग्राम औषध पादप संपदा एकत्र की गई।

जवाहरलाल नेहरू औषध पादप उद्यान एवं उद्भिज संग्रहालय, पूना

इस उद्यान के पास 19 एकड़ भू-भाग है जिसमें से वर्तमान में 9 एकड़ भू-भाग में कृषि की जा रही है और इस कृषि कार्यक्रम में अनेक औषध पादप जातियां सम्मिलित हैं। कुछ महत्वपूर्ण औषध पादपों के नाम इस प्रकार हैं :—

इसबगोल, वचा, काकमाची, बला, जपा, पाठा, अश्वगंधा, सहचर, यष्टिमधु, कण्डूकपर्णी इत्यादि। प्रयोगात्मक अध्ययनों के फलस्वरूप इसबगोल के बड़े पैमाने पर कृषि के सफल संकेत मिले हैं।

संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत

इस उद्यान के पास लगभग 7.89 एकड़ भूमि है। परन्तु वर्तमान में 2.5 एकड़ भू-भाग में ही कृषि कार्य किया जा रहा है। इस उद्यान में लगभग 200 औषध पादपों की समुचित कृषि की जा रही है और कुछ औषध पादपों की प्रयोगात्मक कृषि भी प्रारम्भ की गई है जिस पर नियमित रूप से वृद्धि सम्बन्धी अवलोकन किया गया है। यष्टिमधु, रुद्राक्ष, तगर, वचा, पिप्पली इत्यादि की कृषि पर विशेष महत्व दिया गया है।

केसर प्रयोगात्मक अध्ययन

इस औषध पादप उद्यान का महत्वपूर्ण कार्यक्रम केसर की प्रयोगात्मक कृषि करना और ताड़ीखेत की जलवायु में इसकी सफल उपज सम्बन्धी अवस्थाओं का अध्ययन करना है। संस्थान को केसर की सफल कृषि करने में सफलता प्राप्त हुई है और इसके लिए विभिन्न कृषि रासायनिक तकनीकों का उपयोग भी किया गया। केसर कृषि कार्यक्रम के लिए 1.53 एकड़ भू-भाग है और 5,44,389 कंदों की विभिन्न आकारों में में कृषि की जा रही है। लगभग 4,585 पुष्पों को एकत्र किया गया और केसर (शुष्क) की उपज 38 ग्राम थी, जिसमें वर्तिकाग्र और वर्तिका सम्मिलित हैं।

इन उद्यानों में जिन महत्वपूर्ण औषध पादपों की प्रयोगात्मक या वृहत् पैमाने पर कृषि की जा रही है उनके नाम निम्नलिखित हैं :—

आकारकरभ
आमलकी
अनन्तमूल
अपामार्ग
आरग्वध
अर्जुन
अरिष्ट
अर्क
अशोक
अस्थिसंहार
अश्वगंधा
अतिबला

आत्मगुप्ता
बब्बूल
बाकुची
भल्लातक
भारंगी
भृंगराज
भूस्तृण
बिभीतक
बिल्व
बिम्बी
बृहद् एला
चक्रमर्द
चम्पक
चंगुलकुटी
चिरबिल्व
चित्रक
दाड़िम
दन्ती
दारुहरिद्रा
धातकी
धत्तूर
एरण्ड
गम्भारी
घृत कुमारी
गोक्षुरु
गुडूची
गुग्गुलु
गुंजा

हरिद्रा

हरीतकी

इसबगोल

जम्बू

जपा

जयन्ती

कदली

काकोदुम्बर

कम्पिल्लक

कंचनार

कण्टकारी

कपित्थ

करंज

करवीर

कर्पास

खदिर

कुबेराक्षी

कुटज

लांगली

लताकस्तूरी

मदनफल

मदयन्ती

मधुयष्टि

मण्डूकपर्णी

पलाश

पारसीकयवानी

पर्पटक

पाषाणभेद

सदाबहार

शालपर्णी

शाल्लकी

शंखपुष्पी

सफालिया

सर्पगंधा

शतावरी

शलेष्मान्तक

शिरीष

श्वेतचन्दन

श्वेत सारिवा

श्योनाक

तुलसी

वचा

वरुण

वासा

विष्णुक्रान्ता

उलटकम्बल

इन औषध पादप उद्यानों के द्वारा निम्नलिखित औषध उत्पाद्यों (जिनका भार इनके सामने अंकित किया गया है) को परिषद् के तत्वावधान में कार्यरत विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों की भेषजिक निर्माणशालाओं, अन्तरंग एवं बहिरंग रोगी विभाग में प्रयोग करने हेतु आपूर्ति की गई :—

औषध नाम	पादप भाग एवं भार
आरग्वध	फलियां शुष्क, 70 कि.ग्रा.
अर्जुन	बीज शुष्क, 50 कि.ग्रा.
अश्वगंधा	मूल, 30 कि.ग्रा.
आत्मगुप्ता	बीज शुष्क, 3 कि.ग्रा.

औषध नाम	पादप भाग एवं भार
अगस्त्य	बीज शुष्क, 250 ग्राम
बब्बूल	तने की छाल, 500 ग्राम
बला	पंचांग शुष्क 5 कि.ग्रा.
बाकुची	बीज शुष्क, 50 कि.ग्रा.
भृंगराज	पंचांग शुष्क, 5 कि.ग्रा.
बिल्व	फल, 90 कि.ग्रा.
चित्रक	ूल, 200 ग्रा.
दन्ती	ूल शुष्क, 500 ग्रा.
एरण्ड	ीज शुष्क, 1 कि.ग्रा.
गोक्षुर	ूल शुष्क, 2 कि.ग्रा.
गुडूची	ंचांग शुष्क, 20 कि.ग्रा.
गुग्गुलु	ना ताजा, 1.5 क्वि., बीज 2 कि.ग्रा. ंद शुष्क, 12.2 कि.ग्रा.
गुंजा	ीज शुष्क, 500 ग्राम
हिंगोट	ल, 42 कि.ग्रा.
इसबगोल	बीज शुष्क, 500 ग्राम
करंज	बीज शुष्क, 20 कि.ग्रा.
कपूर तुलसी	पत्र ताजे, 10 कि.ग्रा.
कण्टकारी	मूल, 2 कि.ग्रा., पंचांग शुष्क 40 कि.ग्रा.
कट-करञ्ज	बीज, 19.3 कि.ग्रा.
कुम-कुम	वर्त्तिका एवं वर्तिकाग्र, शुष्क, 38 ग्राम
लताकस्तूरी	बीज शुष्क, 200 ग्राम
मधूस्किा	बीज शुष्क, 100 ग्राम
मण्डूकपर्णी	पत्र ताजे, 5 कि.ग्रा.
निर्गुण्डी	पत्र ताजे, 50 कि.ग्रा.
निम्ब	तने की छाल शुष्क, 20.5 कि.ग्रा. फल 5 कि.ग्रा.

औषध नाम	पादप भाग एवं भार
पलाश	बीज शुष्क, 10 कि.ग्रा.
तृष्निपर्णी	बीज शुष्क, 20 कि.ग्रा., मूल. शुष्क- 3 कि.ग्रा.
पुनर्नवा	पंचांग शुष्क, 30 कि.ग्रा.
	मूल शुष्क, 10 कि.ग्रा.
रास्ना	मूल शुष्क, 3 कि.ग्रा.
शाल्मली	पुष्प शुष्क, 15 कि.ग्रा.
शालपर्णी	पंचांग शुष्क, 4 कि. ग्रा.
सर्पगंधा	मूल शुष्क, 500 ग्रा., बीज, 200 ग्राम
सरपुंखा (शरपुंखा)	पंचांग शुष्क, 30 कि.ग्रा.
शतावरी	मूल शुष्क, 7 कि.ग्रा., ताजा मूल 6 क्विं.
शंखपुष्पी	पंचांग शुष्क, 25 कि.ग्रा.
शिकाकाई	फल शुष्क, 1 कि.ग्रा.
श्वेत खदिर	बीज, 1.8 कि.ग्रा.
उलटकम्बल	बीज शुष्क, 1 कि.ग्रा.
वासा	पंचांग शुष्क, 5 कि.ग्रा.

सारांश पर एक झलक

1.	प्रयोगात्मक/बृहत पैमाने पर कृषि किए गए औषध पादपों की कुल संख्या	लगभग 250
2.	लगभग 43 औषध पादप जातियों के विभिन्न भागों की वर्ष 1984-85 में औषध पादप उद्यानों द्वारा उपज (कि.ग्रा.) में	1526.25 कि.ग्रा. (6 कि.ग्रा. ताजी-सामग्री सहित)
1.	अनुसंधान कार्य के लिए परिषद् के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों को औषध पादप उद्यानों द्वारा आपूर्ति की गई कुल औषध-मात्रा (कि.ग्रा. में)	700 कि.ग्रा.

रासायनिक अनुसंधान अध्ययन

रासायनिक अनुसंधान अध्ययन

वाराणसी, कलकत्ता, दिल्ली एवं हैदराबाद में स्थित पादप-रसायन विज्ञानीय अनुसंधान एककों ने औषध पादपों से सक्रिय घटकों को पृथक किया जिससे कि इन पर आगे अध्ययन किया जा सके। इस वर्ष में किए गए अनुसंधान कार्य का विवरण निम्नानुसार है :—

1. **मधुंभा (हि.) (मुर्राया एक्जोटिका लिन) :**

इस पादप से पेट्रोलियम ईथर सत्व द्वारा एक कौमरीन वियुक्त किया गया और उसकी मुर्रालांगीन के रूप में पहचान की गई ।

2. **श्वेत सारिवा (हेमीडेस्मस इंडिकस) :**

इस पादप के हृतस्नेह मूल के बेंजीन सत्व से 145° द्रवणांक पर एक यौगिक वियुक्त किया गया। इस योग की संरचना का अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

3. **किराततिक्त (स्वेर्चिया चिरायता) :**

इस पादप के पेट्रोलियम सत्व के अम्ल विलेयक भाग से 152° द्रवणांक पर एक जैंथोन वियुक्त किया गया। इस यौगिक की संरचना ज्ञात करने का कार्य प्रगति पर है।

4. **एडमबरथिया गार्डनेरी :**

इस पादप के हृतस्नेह तने की छाल के ईथाइल एसीटेट सत्व से 230°—231° द्रवणांक पर एक यौगिक वियुक्त किया गया जिसे डेफ्नोरेटिन एसीटेट के समरूप ज्ञात किया गया।

5. **रोहीतक (एफनामिक्सिस पोलिस्टेचा) :**

इस पादप के हृतस्नेह फल कोशिकाओं के क्लोरोफार्म सत्व से 151-152° द्रवणांक पर एक सक्रिय फीडेंटरोधी, एफ्नानिन प्राप्त किया गया। इस यौगिक की संरचना सी$_{30}$-टरपीनॉयड के रूप में ज्ञात की गई। अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

6. **भारंगीभेद (क्लेरोडेन्ड्रम स्पिलीनडेसे 24-एस) :**

ईथाईल कोलेस्टा - 5,22,25 - ट्राइन - 3 बल - श्रोएल एवं हिस्पिडुलिन-4 गैलेक्टोसाइड की इस पादप से पहचान की गई। इनकी संरचनाश्रों की अनेक स्पेक्ट्रल विधियों से संपुष्टि की गई।

7. **बाकुची (सोरेलिया कार्लीफोलिया) :**

इस पादप के बीजों के बेंजीन सत्व से एक क्राइस्टलिन यौगिक (अल्पमात्रा में) वियुक्त किया गया।

8. **भूर्ज-पत्र (बेतुला यूटिलिस डॉन)**

इस पादप के तने की छाल से 258° द्रवणांक पर एक यौगिक प्राप्त किया गया जिसकी संरचना की पहचान का कार्य प्रगति पर है।

9. **बंकौरी (विकोश्रा इण्डिका)**

इस पादप से एक सेस्क्वीटर्मीनॉयड लेक्टेट विकोलाइड-डी वियुक्त किया गया। इसकी संरचना 2,'3'-इपोक्सी वकोलाइड-बी के रूप में निर्धारित की गई।

10. **सेफालिका हरसिंगार (निक्टेंथिस श्रब्रोट्रिस्टिक)**

इस पादप के बीजों से आर्बर ट्रिस्टोसाइड-ए एवं बी दो नए इरीडोइड वियुक्त किए गए।

11. **कपिया कुशी (बी) (हीनिया ट्राइगुजा)**

दो टेट्रासाइक्लिक ट्रीटर्पीन हीनक श्रम्ल और 24 मैथाईलिन साइक्लोर्ट 3-21 डायोल के वियुक्त होने की सूचना इससे पूर्व दी जा चुकी है। आगामी अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप ट्राईगुजा नोलाइड- ए व बी दो टेट्रानोरट्राइटर्पीनॉयड क्रमश: 265-266° एवं 230-231° पर वियुक्त करने में सफलता मिली।

12. **प्रियंगु (एग्लैरिश्रारावसबर्थियाना)**

ए-1, ए-4 तक चार यौगिकों को वियुक्त किया। ए-1 एवं ए-2 की क्रमश: साईक्लोरटेनोल एवं बीटा सीटोस्टेरोल के रूप में पहचान की गई। ए-3 एवं ए-4 को क्रमश: रॉक्सीवर्घीएडियोल ए-173° द्रवणांक एवं रॉक्सीवर्घीएडियोल 168°-170° द्रवणांक के रूप में निर्दिष्ट किया गया।

13. **नागफड (एक) इरवातामिया हौनीन्स**

इस पादप के हैक्सीन सत्व से दो-ट्राइटर्पीन-अमरीन 186° द्रवणांक एवं लूपियोल 212° द्रयणांक पर प्राप्त किया गया। इनके अतिरिक्त बी-सिटेस्ट्रोल 134° द्रवणांक, उरसोलिव अम्ल 221° द्रवणांक एवं एक ट्राइटर्पीन अम्ल की भी पहचान की गई।

इस पादप के अल्कोहलिक सत्व से एक अल्केलाइड भी प्राप्त हुआ जिसकी वॉआक्राइस्टिन के रूप में (20-हाइड्रोक्सी वाकाकैजीन) 101° द्रदणांक पर पहचान की गई। अल्केलाइड विहीन प्रभाग से उरुडिक अम्ल 290° दवणांक पर प्राप्त किया गया।

14. **वर्णक्षीरी (आर्जिमोन मैक्सिकाना)**

इस पादप के मूल से 273-274° द्रवणांक पर संगुइनरीन वियुक्त किया गया। इसके साथ ही इस पादप के पुष्पों से 206-207° द्रवणांक पर 3-मेथॉक्सीक्वीरसेटिन एवं वनैलिक अम्ल वियुक्त किए गए।

15. **तेपूरिया (फिजालिस पेरुबियाना) :**

इस पादप के मूल से एक नया विथनौलायड वियुक्त किया गया जिसे विथपेरुविन-जी के रूप में निर्दिष्ट किया गया और भौतिक-रासायनिक-विधि से इसकी पूर्णतः संरचना ज्ञात कर ली गई है यथा 2, 3-इपोसाइड इथनोलाईड-ई। इसमें 2 बी, 3 बी-इपोसाईड अणु के रूप में विद्यमान पाई गई।

16. **रोहीतक (ठकोमैला अण्डुलेटा) :**

इस पादप के ईथनोलिक सत्व से टीयू-1 एवं टीयू-2 दो योग वियुक्त किए गए। इनकी संरचना ज्ञात करने का कार्य प्रगति पर है।

17. **पर्पट (फ्यूमेरिया इण्डिका) :**

दो प्राकृत रूप से प्राप्त अल्केलाइड लवण, प्रोटोपाइन नाइट्रेट एवं ट्रेट्राहाइड्रो-कॉप्टिसिन हाइड्रोक्लोराइड तथा (+)— के साथ एडलूमीडिन नार सगुइनरीन की पहचान एवं विवोजित सी$_{20}$ एच$_{17}$ एनओ$_6$ द्रवणांक 250-251° अज्ञात अल्केलाइड की सूचना दी गई है।

18. **शाक (टेक्टोना ग्रेण्डिस) :**

इस पादप के मूल के पेट्रोलियम सत्व से दो क्वीनोन्स टीआर-1 एवं टीआर-2 वियुक्त किए गए। टीआर-1 की लबैचोल के रूप में पहचान की गई। इसके अतिरिक्त टीआर-3 एवं टीआर-4 दो अन्य यौगिकों को भी पृथक किया गया।

19. **माइलादि (तमि.) (वाइटेक्स पुबेसींस) :**

इस पादप के पुष्पों से दो निष्क्रिय फ्राइडिलिननेड बीटा-सीटोस्टेरॉल एवं दो फ्लैवोनाईड यौगिक विटेक्सीन एवं इसोविटेक्सीन वियुक्त कर उनकी पहचान की गई। इस पादप के पत्रों के रासायनिक अध्ययन करने के फलस्वरूप इनमें निष्क्रिय यौगिक एवं फ्लोग फ्लैवोनाइड्स विद्यमान पाए गए। इन यौगिकों की पहचान का कार्य प्रगति पर है।

20. **बेर्या एन्नोनिल्ला :**

इस पादप के पत्रों से बी-एमरीन, बीटा-सिटोस्टेरॉल एवं कैपफेरॉल वियोजित किये गये। दूसरे फ्लेवोनाइडों की पहचान का कार्य प्रगति पर है।

भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्य बम्बई, कलकत्ता, ग्वालियर झांसी, जोधपुर, लखनऊ, त्रिवेन्द्रम एवं वाराणसी में स्थित एककों द्वारा किया गया।

1. **तुलसी (ओसिमम सेंक्टम्)**

इस औषध की प्रतिबलरोधी प्रभावकारिता एवं इसकी यांत्रिक क्रिया-विधि को सुनिश्चित करने के लिए अध्ययन किए गए। अध्ययन के फलस्वरूप ज्ञात हुआ कि यह औषध केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में इस कार्य के लिए प्रभावकारी है। संपुष्टि के लिए आगे अध्ययन किए जा रहे हैं।

2. **पेनेक्स गिंसेंग :**

इस पादप में प्रतिबलरोधी गुण बताए जाते हैं। अतः इसका मूल्यांकन करने के लिए भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किए गए। मस्तिष्क के टेकोलामीन वर्ग एवं 5 एच. टी. पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया तथा प्रमस्तिष्क सूत्रकणिका सक्सिनिक डीहाइड्रोजिनेस एवं मोनोकन ऑक्सीडेस का भी विश्लेषण किया गया। हृद्पेशी के इलैक्ट्रान सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शीय अध्ययन किए गए तथा जीवविज्ञानीय मानकीकरण एवं विष विज्ञानीय परीक्षण अध्ययन किए गए। दोनों औषधियों से केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र स्तर पर विशिष्ट क्रिया ज्ञात की गई जिससे कि शरीर तंत्र पर इसका प्रतिबलरोधी प्रभाव ज्ञात किया जा सके।

3. **देवदारु (सिड्रस देवदारु) (गोंद, छाल एवं कोष्ठ) :**

इस औषध का सामान्य भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया गया। केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र उद्दीपक प्रभाव, केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र अवसादक प्रभाव, पेशी शिथिलकर प्रभाव एवं ए. एन. एस. पर प्रभाव तथा व्यवहार संबंधी परिवर्तनों का अध्ययन किया गया। परिमापों से इस पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया। इसका अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

4. **गोक्षुरादि गुग्गुलु :**

चूहों के सामान्य व्यवहार में इसके प्रयोग से कोई हाविकारक प्रभाव नहीं पाया गया। इससे निद्रा अवधि में औषध आश्रित वृद्धि पाई जाती है। इससे कोई वेदनाहर

प्रभाव नहीं पाया गया। 40 मि. ग्रा./मि. ली. की औषध मात्रा स्तर पर मेंढक ऋजुपेशी तुंदिल विरचन में कोलीन धर्मोत्तेजकरोधी क्रिया ज्ञात की गई।

5. **चन्द्रप्रभावटी :**

इस औषध का सामान्य व्यवहार निद्राकारी, वेदनाहारी एवं कोलीन धर्मोत्तेजक-रोधी प्रभाव ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया गया। परिमापों से उत्क्रमणीय प्रकार के कोलीन धर्मोत्तेजकरोधी प्रभाव को छोड़ कर शेष पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया।

6. **आरोग्यवर्धिनी :**

इसके वेदनाहर, निद्राकारी एवं पेशी शिथिलकर प्रभावों को ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया गया। सामान्य व्यवहार में भी इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया परन्तु इन परिमापीय अध्ययन से किसी में भी कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं पाए गए तथापि कोलीन धर्मोत्तेजकरोधी प्रभाव चिरस्थायी पाया गया और लम्बी अवधि तक इसे उत्क्रमित नहीं किया जा सका। इसका यकृत क्रिया संबंधी प्रभाव अध्ययन कार्यक्रम बनाया जा रहा है।

7. **कपित्थ (फिरोनिया लाइमोनिया) :**

इस पादप के विभिन्न सत्वों का वियुक्त गिनीपिग अलिंद, वियुक्त मेंढक ऋजुपेशी तुंदिल पर एवं उनका संवेदनाहृत बिल्लियों के रक्तदाब एवं श्वसन प्रभाव संबंधी अध्ययन किया गया। इसके पेट्रोलियम सत्वों से प्रति सेकण्ड संकुचन पाया गया जिसे एट्रोपीन से अवरुद्ध किया गया और यह प्रभाव उत्क्रमणीय था। इसके क्लोरोफार्म सत्व से कोलीन धर्मोत्तेजकरोधी क्रिया पाई गई परन्तु इसका अवरुद्ध प्रभाव उत्क्रमणीय होता है। मेथोनॉल सत्व से शिथिलन और तत्पश्चात् संकुचन पाया गया। इससे प्रचालकों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

इस औषध के मेथोनॉल सत्व की 8 मि. ग्रा./मि. ली. से 10 मि. ग्रा./मि. ली. तक की औषध मात्राओं से वियुक्त मेंढक ऋजुपेशी तुंदिक विरचन में संकुचन पाया गया। इस औषध मात्रा स्तर पर ऐसिटिकोलीन अनुक्रिया में अवरोध क्रिया पाई जाती है।

इसके पेट्रोलियम ईथर सत्व से रक्तदाब में प्रति सेकण्ड ह्रास होता है जो ऐट्रोपीन द्वारा अवरुद्ध होता है। इसके मेथोनॉल सत्व से प्रति सेकण्ड रक्तदाब में वृद्धि होती है जो आंशिक रूप से फिनोक्सी बेंजामीन से अवरुद्ध हो जाता है। इसके क्लोरो-फार्म सत्व से कोई प्रति सेकण्ड प्रभाव नहीं पाया गया। परन्तु इससे ऐड्रिनलीन अनु-क्रिया की वृद्धि एवं ह्रास में अवरोध होता है।

8. **माषवी (हिप्टेजवेन्गालेन्सिस) :**

इस पादप के पेट्रोलियम ईथर सत्व का बिल्लियों के रक्तदाब एवं श्वसन प्रभाव पर अध्ययन किया गया। इससे रक्तदाब एवं श्वास-प्रश्वास, अश्वसन में शीघ्र ह्रास होता है और यह प्रभाव आंशिक रूप से ऐट्रोपीन द्वारा अवरुद्ध किया गया परन्तु उच्चतर औषध मात्राओं द्वारा कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

9. **असन (ट्रेरोकार्पस सेन्टालिनस) :**

वियुक्त ऊतकों पर इसका सामान्य भेषजगुणकर्मविज्ञानीय अध्ययन किया गया। विशिष्ट अध्ययन यथा—केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव, शोथजरोधी अध्ययन, मूत्रल प्रभाव एवं कवकरोधी अध्ययन किए गए। इस पादप के मध्य भाग के काष्ठ से निर्मित क्वाथ का अध्ययन किया गया। इससे वियुक्त चूहों के गर्भाशय एवं चूहों के जठर बुध्न पर ए सी एच एवं 5 एच टी की क्रिया के प्रति विरोध पाया गया। इससे समाहृत चूहों में पेण्टाबार्बिटोन व्युत्पन्न निद्राकाल, ऐम्फिटेमिन विषाक्तता विरोध में उल्लेखनीय अभिक्रिया उत्पन्न हुई। इसके साथ ही आपेक्षकरोधी एवं शोथजरोधी सक्रियता भी पाई गई परन्तु मूत्रल सक्रियता प्रदान करने में यह असफल रही। इससे अल्प माइको-ठिकरोधी प्रभाव भी पाया गया। मधुमेह में इस औषध के प्रभाव संबंधी अध्ययन किए जा रहे हैं।

10. **ऑथोसिफोन स्टेमिनस :**

इस पादप के पत्रों के क्वाथ से चूहों के बुध्न पर उद्वेष्टकर क्रिया उत्पन्न हुई जो ऐट्रोपीन से अवरुद्ध नहीं थी। इसके अतिरिक्त चूहों में इससे शोथजरोधी सक्रियता भी पाई गई। वृक्क एवं पित्ताश्य संबंधी रोगों पर इसके प्रभाव का अध्ययन प्रारम्भ किया जाएगा।

11. **कार्डियोस्पर्मम हालिकेकाबम :**

इस पादप के पंचांग के क्वाथ से पेण्टाबार्बिटोन व्युत्पन्न निद्रापक में अल्प सक्रियता उत्पन्न हुई परन्तु चूहों में वेदनाहर, आक्षेपकरोधी एवं आरोपणरोधी सक्रियता उत्पन्न करने में यह औषध असफल रही। 5 मि. ग्रा./मि. ली. औषध मात्रा से खरगोश मध्यांत्र में शिथिलन उत्पन्न हुआ और 50 मि. ग्रा./मि. ली. औषध मात्रा से वेदना क्रिया अवरुद्ध हुई।

12. **कदली (मूसा पैराडिसिका) :**

इस पादप के प्रकन्द से निर्मित क्वाथ से चूहों में न तो मृत्यु दर पाई गई और न ही केन्द्रीय तांत्रिका तंत्र में विषाक्तता संबंधी लक्षण पाए गए। यह औषध वेदनाहर एवं अल्पग्लुकोज रक्तता संबंधी सक्रियता प्रदर्शित करने में भी असफल रही।

13. गजपिप्पली (सिण्डेपस ऑफिसिनेलिस) :

इस पादप के फलों से निर्मित क्वाथ पेण्टाबार्बिटोन व्युत्पन्न निद्राजनन में अल्प प्रभाव पाया गया। परन्तु यह औषध वेदनाहर, आक्षेपकरोधी एवं शोथजरोधी सक्रियता प्रदर्शित करने में असफल रही। इस औषध के ऊष्मक विलयन की 25 मि. ग्रा./ मि.ली. औषध मात्राओं से वियुक्त खरगोश मध्यांत्र एवं गिनीपिग शेषांत्र में उद्दीपन उत्पन्न हुआ।

14. बोरासस फ्लेवेलिफर

इस पादप के नर पुष्पक्रम का क्वाथ चूहों में वेदनाहर, आक्षेमक रोधी एवं शोथजरोधी सक्रियता उत्पन्न करने में असफल रहा। परन्तु पेण्टाबार्बिटोन व्युत्पन्न निद्राजनन में उल्लेखनीय प्रभाव पाया गया अनेक विलायक सत्वों का रासायनिक एवं भेषज गुणकर्मविज्ञानीय अध्ययन प्रारम्भ किया गया है और यह कार्य प्रगति पर है।

15. निम्बिडीन

निम्बिडीन की 2 मि.ग्रा. एवं 4 मि.ग्रा./कि.ग्रा. औषध मात्राओं का अंत:शिरा द्वारा प्रविष्ट करने से चूहों के जठर अम्ल निर्गम में उल्लेखनीय ह्रास पाया गया और इसकी अनुक्रिया अवधि साइमेटिरिन की अपेक्षा अधिक दीर्घ पाई गई।

16. गन्ध मार्जारवीर्य (सिवेट)

बाडे में रखे गए एक प्राणी से 51.595 ग्राम गंधमार्जारवीर्य निकाला गया। इसका अध्ययन किया जाएगा।

17. कुरंजी भेद (तमि.) (स्ट्रोबिलेन्थस हेनिएन्स)

इस पादप मूल के जलीय एवं पेट्रोलियम ईथर सत्व दोनों से पेण्टाबार्बिटोन व्युत्पन्न निद्राकाल में वृद्धि पाई गई और इससे चूहों की प्रारम्भ प्रसुप्ति में कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ। इन दोनों सत्वों से चूहों के व्यवहार में कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

इस पादप मूल के जलीय एवं पेट्रोलियम ईथर सत्व तथा पादप मूल एवं तने के क्लोरोफार्म सत्व एवं ईथर सत्व से चूहों के एस.एम.ए. पर प्रभाव नहीं पड़ा। तने के पेट्रोलियम ईथर सत्व से अल्प अवसाद पाया गया जबकि तने के जलीय (ए.क्यू.ई) सत्व से मध्यम अवसाद और मूल के जलीय सत्व से एस.एम.ए. अवसाद पाया गया।

इस पादप मूल के जलीय सत्व से एम्फिटामीन त्रिविम विन्यास रोधी प्रभाव नहीं पाया गया। तने के ईथर सत्व से उल्लेखनीय अवसाद पाया गया। तने के जलीय

सत्व से मध्यम एवं मूल के पेट्रोलियम ईथर से परिवर्धित अन्वेषी सक्रियता पाई गई। शेष तत्वों से इस परिमाप द्वारा कोई प्रभाव नहीं पाया गया। इस पादप के मूल के पेट्रोलियम ईथर सत्व से चूहों के अचलीकरण की अवधि में वृद्धि हुई और मूल के जलीय सत्व से कोई प्रभाव नहीं हुआ। मूल या तने के किसी भी सत्व से ऑक्सोट्रेमोरिन के प्रभाव का प्रतिरोध नहीं हो पाया।

मूल के पेट्रोलियम ईथर सत्व एवं जलीय सत्व तथा मूल एवं तने के क्लोरोफार्म सत्व से कोई अवसाद रोधी प्रभाव नहीं पाया गया।

पादप तने के पेट्रोलियम ईथर सत्व और जलीय सत्व द्वारा पादशोफ में विशेष ह्रास देखा गया जबकि मूल के पेट्रोलियम ईथर सत्व एवं जलीय सत्व से कोई प्रभाव नहीं हुआ।

इन सत्वों में से किसी भी सत्व से वियुक्त ऊतकों जैसे चूहों के बृहदान्त्र, गर्भाशय इत्यादि पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया।

18. **बलारिष्टम् (बला)**

इससे आक्सीट्रेमोरिन प्रभाव का प्रतिरक्षण नहीं हुआ और सामान्य व्यवहार में भी कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया। डी-ऐम्फिटेमिन त्रिविम विन्यास पर इसका कोई प्रभाव नहीं पाया गया और इसमें वेदनाहर प्रभाव भी नहीं पाया गया।

19. **निर्गुण्डी**

केवल ईथर सत्व, सीत जलीय सत्व एवं पेट्रोलियम ईथर सत्व से चूहों के एस.एम ए. में उलेखनीय अवसाद उत्पन्न हुआ। शेष सत्वों से कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं देखा गया। चूहों के पेशी तान एवं संतुलन में कोई प्रभाव नहीं पाया गया। क्लोरोफार्म सत्व से डाइएजोपाम व्युत्पन्न निद्राकाल में ह्रास पामा गया। बी.ई. एवं इसकी अवधि में वृद्धि हुई परन्तु पी.ई. से कोई प्रभाव नहीं पाया गया। पी.ई. एवं सी.एच.ई. से डी-पेम्फिटामीन व्युत्पन्न त्रिविम विन्यास पर कोई प्रतिरक्षण संबंधी प्रभाव नहीं देखा गया और अन्वेषी व्यवहार पर इसका कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया। पेट्रोलियम ईथर सत्व से कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

पेट्रोलियम ईथर सत्व से पेण्टीलिनेटेट्राजोल व्युत्पन्न आक्षेपों की अवस्था में वृद्धि हुई। वी एन डी एल के पेट्रोलियम ईथर एवं क्लोरोफार्म सत्व से कोई परागतिक्रम-रोधी प्रभाव नहीं पाया गया। वी एन डी आर के क्लोरोफार्म सत्व से कोई परागति-क्रमरोधी प्रभाव नहीं पाया गया। वी एन डी आर के क्लोरोफार्म सत्व वी एन डी आर

के क्लोरोफार्म सत्व, के बी ई एवं सी ए एल से चूहों के पश्च पंजे के शोफ में दमन पाया गया।

नाग एवं रसल वाइपरसर्पविष में आयुर्वेदीय एकाकी एवं औषध योगों का विषरोधी मूल्यांकन

चूहों में नाग एवं रसलवाइपर सर्पदंश के पूर्व एवं पश्चात् कतिपय औषधियों का एल. डी.$_{50}$ एवं एल. डी. $_{95}$ औषध मात्राओं में अध्ययन किया गया।

एल. डी.$_{50}$ (नागदंश) में प्रतिरक्षण संबंधी प्रभाव :

वी. एन. डी. आर. के. बी. ई. एवं सी. ए. आई. पेरियानांजा पत्र रस एवं बलारिष्टम से चूहों की एल. डी.$_{50}$ से पूर्ण प्रतिरक्षा हुई।

एल. डी.$_{95}$ (नादंश) में प्रतिरक्षण संबंधी प्र भाव

वी. एन. डी. एल. के. सी. एच. ई. एवं बी. ई., वी. एन. डी. आर. के ई. बी. से मृत्यु के होने में पर्याप्त समय वृद्धि हुई। शेष औषधियों से कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

एल. डी.$_{50}$ (रसल वाइपर सर्प दंश) में प्रतिरक्षा संबंधी प्रभाव

एल. जी., वी. जी., जे. आर. जी. (एल जी, वी जी, जे आर जी) वल्लिपल इत्यादि से कोई उल्लेखनीय विष-प्रतिरक्षण नहीं पाया गया।

एल. डी.$_{95}$ (रसल वाइपर सर्पदंश) में प्रतिरक्षण संबंधी प्रभाव

रसल वाइपर सर्पदंश विष की एल. डी. $_{95}$ मात्रा प्रविष्ट करने से बी ए एल से 4/5 चूहों को सुरक्षित रखा गया। शेष सत्वों से कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाए गए।

20. **जलकर्ण या जलपिप्पली :**

अनेक सत्वों (जैसे बेंजीन सत्व, एल्कोहलिक सत्व एवं ईथाइल ऐसिटेट सत्व) का भेषजगुणकर्मविज्ञानीय अध्ययन किया गया। समस्त सत्वों को ट्वीन-80 एवं आसवित जलमें घोलकर इनका चूहों में विषाक्तता अध्ययन किया गया। दो औषध मात्राएं यथा —0.5 प्रति कि. ग्रा. एवं 1 ग्रा. प्रति कि. ग्रा., मुखीय प्रयोग किया गया। सात दिन तक प्राणियों में व्यावहारिक परिवर्तन एवं मृत्युदर संबंधी प्रभाव ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया गया। इस औषध के 100 ग्रा./कि. ग्रा. के सत्वों का मुखीय अवचारण करने पर किसी भी सत्व से चूहों के रक्तदाब एवं श्वसन में कोई परिवर्तन नहीं पाया

गया। इसके साथ ही मानक औषधियों के प्रभाव को परिवर्तित करने में भी उपर्युक्त सत्व असफल रहे। इन सभी सत्वों में शोथजरोधी सक्रियता का अभाव पाया गया। सभी सत्व फेरोसिमिडो की अपेक्षा मूत्रल सक्रियता प्रदान करने में असफल रहे। किसी भी सत्व से चूहों में तड़पनरोधी अनुक्रिया नहीं पाई गई।

21. **लकुच (छाल एवं फल) :**

फल एवं छाल के विभिन्न सत्वों जैसे ऐसिटोन सत्व, एल्कोहल सत्व एवं पेट्रोलियम ईथर सत्व तथा छाल के बेंजीन सत्व का चूल्हों पर भेषजगुणकर्म विज्ञानीय अध्ययन किया गया। तीव्र विषाक्तता सम्बन्धी अध्ययन करने पर इन सत्वों की 2 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. शरीर भार की औषध मात्रा का मुखीय प्रयोग करने से किसी भी सत्व से कोई भी विषाक्तता सम्बन्धी प्रभाव या मृत्युदर नहीं पाई गई। 250 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की औषध मात्रा का मुखीय प्रयोग करने से किसी भी सत्व से कोई भी वेदनाहर सक्रियता नहीं पाई गई। बेंजीन सत्व से अल्प शोथजरोधी सक्रियता पाई गई परन्तु फल एवं छाल के अन्य किसी भी सत्व से यह अनुक्रिया नहीं हुई।

सत्व एम/एफ.एल.आर./संपूर्ण सत्व की 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा का चूहों में मुखीय प्रयोग करने से कोई मूत्रल अनुक्रिया नहीं पाई गई। इस प्रकार फरोसिमाइड औषध की तुलना में यह असफल रही।

22. **आयुष-56 :**

इसका चूहों में तीव्र विषाक्तता सम्बन्धी अध्ययन किया गया। इस औषध योग-आयुष-56 को ट्वीन-80 में आसवित जल में घोल कर मुख द्वारा अवचरित किया गया। विषाक्तता सम्बन्धी लक्षणों एवं मृत्युदर को ज्ञात करने के लिए प्राणियों का सात दिन तक अध्ययन किया गया। आयुष-56 के एल.डी.-50 गुण, 4 ग्रा./कि.ग्रा. औषध जो चूहों में मुखद्वार से अवचारित की गई उससे अधिक है।

23. **आयुष-64 :**

यह औषध मेंढक ऋजुपेशी उदरपेशी पर किसी भी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करने में असफल रही। खरगोश आंत्र की सामान्य पेशियों पर शिथिलकर प्रभाव उत्पन्न करने में यह गुणकारी रही। इससे मेढक उत्कीर्ण हृद पर हृद अवसादक अनुक्रिया उत्पन्न हुई। आयुष-64 की यह अनुक्रिया ऐट्रोपीन द्वारा अवरूद्ध नहीं हुई। यह मेढक मैलेनोफोर्स एवं खरगोशों के रक्तशर्करा स्तरों पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव करने में भी असफल रही।

धवल चूल्हों में इसका तीव्र विषाक्तता सम्बन्धी अध्ययन किया गया। इस औषध को आसवित जल में घोल कर मुख द्वारा अवचारित किया गया। अध्ययन अवधि में सभी प्राणी सामान्य पाए गए। आयुष-64 के एल.डी.-50 गुण 4 ग्राम/कि.ग्रा. औषध जो चूहों में मुख द्वार से अवचारित की गई, उससे अधिक है।

24. ए.सी. 4 :

ए.सी. 4 औषध मेढक ऋजुपेशी उदरपेशी पर किसी भी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करने में असफल रही। इससे खरगोश शेषांत्र इन विट्रो पर उल्लेखनीय आकर्षण अनुक्रिया उत्पन्न हुई। इस प्रभाव को ऐट्रोपीन द्वारा अवरुद्ध किया गया। इससे उत्कीर्ण हृद् पर विवृत अवसादक प्रभाव भी उत्पन्न हुआ है। परन्तु इसे ऐट्रोपीन ने अवरुद्ध किया। धवल खरगोशों में विद्युताघात व्युत्पन्न आक्षेपों पर इससे कोई आक्षेप-रोधी प्रभाव नहीं पाया गया। यह मेढक मेलेनोफोर्स एवं खरगोशों के रक्त शर्करा स्तरों पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव उत्पन्न करने में भी असफल रही।

धवल चूहों में इसका तीव्र विषाक्तता सम्बन्धी अध्ययन किया गया। इस औषध को ट्वीन-80 में आसवित जल में घोल कर मुखद्वार से अवचारित किया गया। अध्ययन अवधि में सभी प्राणी सामान्य पाए गए, एल.डी.-50,4 ग्राम/कि.ग्रा. से अधिक पाय. गया।

भैषजिक अनुसंधान

भैषजिक अनुसंधान

औषध अनुसंधान कार्य में मानकीकरण अनुसंधान की विशिष्ट भूमिका होती है। चिकित्सकीय कार्य एवं स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम के लिए गुणकारी औषधियों एवं औषध योगों को प्राप्त करना अत्यावश्यक है। परिषद द्वारा एकाकी औषधियों का मानकीकरण एवं रस, तैल शोधन इत्यादि जैसी विभिन्न औषधियों के निर्माण के संदर्भ में भेषजिक अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही इन अध्ययनों से संबंधित अन्य अध्ययन भी किए गए जिसमें औषधियों की गुणकारी विधि, औषध योगों के अवयवों पर संग्रहण का प्रभाव, औषध घटकों पर पात्र प्रभाव अध्ययन एवं निर्मित औषध योगों के अध्ययन सम्मिलित हैं। एकाकी औषधियों, औषध निर्माण विधि और औषध योगों के मानकीकरण से संबंधित अध्ययन कार्य क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम (क्षे. अनु. सं. त्रि.), कैप्टिन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास (कैं. श्रीनि. आयु. औ. अनु. सं. म.), संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत (सं. अनु. ए. ता.) एवं मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, जामनगर (मान. अनु. परि.-जाम.) में किया जा रहा है। औषध योगों एवं एकाकी औषधियों का मानकीकरण संबंधी कार्य क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बंगलौर (क्षे. अनु. के. बं.) में भी किया जा रहा है। इसके साथ ही कैप्टिन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास, मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, जामनगर एवं मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, आयुर्विज्ञान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी (आयु. सं. का. हि. वि. वि., वा.) में विश्लेषणात्मक मानक निर्धारण करने का कार्य तीव्रगति से किया जा रहा है।

परिषद् के तत्वावधान में कार्यरत् विभिन्न मानकीकरण परियोजनाओं ने इनका पुनः चिकित्सा ग्रंथों के आधार पर निर्माण किया है (संदर्भ 1 : 28, भारतीय आयुर्वेदिक भेषज निर्माण संहिता भाग-1, भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-31) और इसका अल्कोहलिक अवयव 2.8% वि/वि (वाराणसी) तथा 3.66% वि/वि जामनगर में पाया गया है।

मानकीकरण अनुसंधान परियोजनाओं द्वारा अध्ययन की गई औषधियों के विवरण निम्न प्रकार हैं :—

एकाकी औषध मानकीकरण अनुसंधान

लवंग (क्षे. अनु. के., बं.)

ताम्बूल (क्षे. अनु. के., बं.)

विजया (क्षे. अनु. के., बं.) (संयु. अनु. ए., ता.)

कर्चूर (क्षे. अनु. के., बं)

समुद्रफल (क्षे. अनु. के., बं.)

कुटज (क्षे. अनु. के., बं.) (मा. अनु. परि., जा.)

पटोल (क्षे. अनु. के., बं.)

भृंगराज (क्षे. अनु. के. बं.)

एला (क्षे.अनु.के.बं)

बला (मा.अनु.परि., जा.) (संयु.अनु.ए., ता.)

शताह्वा (मा.अनु.परि., जा.)

बिल्व (मा.अनु.परि., जा.)

विदारी (मा.अनु.परि., जा.)

गुडूची (मा.अनु.परि.,जा.)

हरिद्रा (मा.अनु.परि., जा.)

रक्त चंदन (मा.अनु.परि., जा.) (संयु.अनु.ए., ता.)

अश्वगंधा (मा.अनु.परि., जा.)

अतसी (मा.अनु.परि.,जा.)

गोक्षुरू (मा.अनु.परि., जा.)

क्षीर-विदारी (मा.अनु.परि., जा.)

मेथिका (मा.अनु.परि., जा.)

मधुरिका (मा.अनु.परि., जा.)

आरग्वध (मा.अनु.परि., जा.)

शठी (मा.अनु.परि., जा.)

पुष्कर (मा.अनु.परि., जा)

त्रिवृत्त (मा.अनु.परि., जा.)

गुडूची (मा.अनु.परि., जा) (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

लांगली (मा.अनु.परि., जा.)

वत्सनाभ (मा.अनु.परि., जा.)

रेणुका (संयु, अनु. ए., ता)

शंखपुष्पी (संयु.अनु.ए., ता.)

ब्राह्मी (संयु.अनु.ए., ता.)

तुलसी (संयु.अनु.ए., ता.)

प्रियंगु (संयु.अनु.ए., ता.)

अतिबला (संयु.अनु.ए., ता.)

जयपाल (संयु.ए., ता.)

शोभांजन (संयु.अनु.ए., ता.)

दुरालभा (संयु. अनु.ए., ता.)

धत्तूर (संयु.अनु.ए., ता.)

खदिर (संयु.अनु.ए., ता.)

निम्ब पाउडर

वंशलोचन (संयु., अनु. ए., ता.)

गैरिक (संयु. अनु. ए., ता.)

टंकण (संयु. अनु. ए., ता.)

हरताल (संयु. अनु. ए., ता.)

हिंगुल (संयु. अनु. ए., ता.)

मनः शिला (संयु. अनु.ए., ता.)

कम्बीफल (कै.श्रीनि., मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

किराततिक्त (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं.,म.)

मदनगंधी (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

गंधपत्री (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

पारिजात (कै. श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं, म.)

रनभेरी (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं, म·)

भोजपत्र (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

बंभौरी (कें.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
चव्य (क्षे.अनु.सं., त्रि.)
कृष्णजीरक (क्षे.अनु.सं., त्रि.)
रास्ना (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

58

औषध विर्माण विधि मानकीकरण अनुसंधान

इस वर्ष में निम्नलिखित औषधियों की निर्माण विधि का अध्ययन किया गया :—

अवलेह (मा अनु. परि., जा.)
घृत (मा.अनु. परि., जा.)
रस (संयु.अनु.ए., ता.)
लौह (संयु.अनु.ए., ता.)
शोधन (क्षे.अनु.सं., त्रि.)
आवर्तन (क्षे.अनु.सं., त्रि.)
संधान (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

निर्मित औषध मानकीकरण अनुसंधान

अर्शकुठार रस (क्षे.अनु.के., बं,)
ताम्र पर्पटी (क्षे.अनु.के., बं.)
लघु सूतशेखर रस (क्षे.अनु.के., बं.)
नाराच रस (क्षे.अनु.के., बं.)
पूर्ण चन्द्र रस (क्षे.अनु.के., बं.)
श्री रामबाण रस (क्षे.अनु.के., बं.)
गंधक रसायन रस (क्षे.अनु.के., बं.)
मृत संजीवनी सुरा (मा.अनु.परि., वा.)
गुडूची तैल (मा.अनु.परि., वा.)
अश्वगंधा तैल (मा.अनु.परि., जा.)
धान्वन्तर तैल (मा.अनु.परि., जा.)
जलोदरारि रस (मा.अनु.परि., जा.)
कामदुघा रस (मा.अनु.परि., जा.)

पंचामृत लौह गुग्गुलु (मा.अनु.परि., जा.)

पुनर्नवादि गुग्गुलु (मा.अनु.परि., जा.)

सहचरादि तैल (मा.अनु.परि., जा.)

आर्द्रकखण्डअवलेह (मा.अनु.परि., जा.)

कल्याणावलेह (मा.अनु.परि., जा.)

अष्टांग-अवलेह (मा.अनु.परि., जा.)

बृहत छाम्लाद्य घृत (मा.अनु.परि.जा.)

बृहत् अश्वगंधा घृत (मा.अनु. परि., जा.)

बृहत् मरिच्यादि तैल (मा.अनु.परि., जा.)

लीला-विलास रस (संयु.अनु.ए,, ता.

शिलाजित्वादि लौह (संयु.अनु.ए., ता.)

योगराज (ताप्यादि) लौह (संयु.अनु.ए., ता.)

महाज्वराकुंश रस (संयु.अनु.ए., ता.)

अभ्रक भस्म (संयु.अनु.ए., ता.)

स्वर्ण माक्षिक भस्म (संयु.अनु.ए., ता.)

रोप्यामाक्षिक भस्म (संयु.अनु.ए., ता.)

खर्पर भस्म (संयु.अनु.ए., ता.)

पिण्ड तैल (क्षे.अनु.सं, त्रि.)

गंगाधर चूर्ण (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

द्राक्षादि वटी (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

अर्क वटी (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

अभयावटी (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

लवंगादि चूर्ण (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

अग्निमुख चूर्ण (क्षे.अनु.सं., त्रि.)

विश्लेषणात्मक मानक

ज्वराकुंश रस (मा.अनु परि., वा.)

बोलबद्ध रस (मा.अनु.परि., वा.)

मयूरपिच्छ भस्म (मा.अनु.परि., वा.)

अहिफेन आसव (मा.अनु.परि., वा.)
कनकासव (मा.अनु.परि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
कुमार्यासव (मा.अनु.परि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
मृद्विकारिष्ट (मा.अनु.परि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
पार्थाद्यारिष्ट (मा.अनुपरि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
अमृत भल्लातक लौह (मा.अनु.अरि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
एलादि रसायन (मा.अनु.परि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
जीरकाद्य मोदन (मा.अनु.परि., वा.) (मा.अनु.परि., जा.)
रजत भस्म (मा.अनु.परि., वा.)
स्वर्ण माक्षिक भस्म (मा.अनु.परि., जा.)
पंचनिम्ब चूर्ण (मा.अनु.परि., जा.)
अश्वगंधा तैल (मा.अनु.परि., जा.)
महानारायण तैल (मा.अनु.परि., जा.)
नित्यानंद रस (मा.अनु.परि., जा.)
मन्मथाभ्र रस (मा.अनु.परि., जा.)
मृत संजीवनी सुरा (मा.अनु.परि., जा.) (मा.अनु.परि., वा.)
कर्पूरासव (मा.अनु.परि., जा.)
पुदीनार्क (पुदीदा-अर्क) (के.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
रास्नासप्तक क्वाथ (के.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
फलत्रिकादि क्वाथ (के.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
अजीर्ण कण्टक रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
ग्रहणी कपाट रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ अनु.सं., म.)
कान्तवल्लभ रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
अर्कादि क्वाथ (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
आमवातारि रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
बृहत् अग्निकुमार रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
उन्मादगजकेसरी रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)
चन्द्रामृत रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

गर्भ चिन्तामणि रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

गर्भपाल रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., स.)

निद्रोदय रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं. म.)

पूर्ण चन्द्र रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

श्री जयमंगल रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

श्री रामबाण रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

स्वच्छन्द भैरव रस (कै.श्रीनि.मू.आयु.औ.अनु.सं., म.)

75

विविध अध्ययन

इसके अतिरिक्त मानकीकरण अनुसंधान परियोजनाओं में निर्मित औषधियों की गुणकारी अवधि, औषध योगों के अवयवों पर संग्रहण का प्रभाव, औषध घटकों पर पात्र प्रभाव अध्ययन एवं निर्मित औषध योगों से सम्बन्धित अध्ययन भी किए जिससे स्वदेशी गर्भनिरोधक औषधियों, अर्बुद्ध-रोधी एवं ज्वरहर औषध योगों को औषध पादपों से निर्मित कर मितव्यय के आधार पर तैयार करके सुलभ कराया जा सके।

कस्तूरीमृग वंश वृद्धि कार्यक्रम

कस्तूरीमृग वंश वृद्धि कार्यक्रम

परिषद के तत्वाधान में धर्मगढ़ में कस्तूरीमृग वंश वृद्धि कार्य किया जा रहा है जिसका उद्देश्य मृग का वध किए बिना कस्तूरी प्राप्त करना है।

मृगों के आहार-स्वभाव एवं परिस्थिति अनुकूलन-स्तर की पहचान कर ली गई है और परिषद मार्च, 1985 के अन्त तक मृग वंश वृद्धि करने में सफल रही है। वर्तमान में 12 मृग (6 नर और 6 मादा) इस बाड़े में हैं जिनकी आयु अलग-अलग है।

परिषद को आशा है कि आगामी वर्षों में बिना मृगवध के कस्तूरी प्राप्त करने का उद्देश्य पूरा कर लिया जाएगा।

वाङ्मय एवं आयुर्विज्ञान इतिहास अनुसंधान

वाङ्मय एवं आयुर्विज्ञान इतिहास अनुसंधान

परिषद के अन्तर्गत वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, नई दिल्ली, भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद और वाङ्मय अनुसंधान एकक, तंजौर के माध्यम से किया गया।

प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग

प्रलेख केन्द्र में बृहत्त्रयी में वर्णित आयुर्वेद भेषज निर्माण संहिता के प्रथम भाग की 19 एकाकी औषधियों की संदर्भ सूचना एकत्र की है। श्वास एवं कास के आगामी संदर्भों को भी एकत्र कर लिया गया है जिन पर पूर्व कार्य शेष था। कुष्ठ रोग एवं राजयक्ष्मा नामक दो अतिरिक्त रोगों के आंकड़े संहिता ग्रंथों तथा अन्य आयुर्वेद ग्रंथों से एकत्र करने का कार्य पूरा कर लिया गया।

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा वर्ष 1971-80 की अवधि में किए गए शोध कार्य की संदर्भ ग्रंथ-सूची से संबंधित 85 सूची कार्ड तैयार कर लिए गए हैं। केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद की "प्रलेखन पत्रिका" (त्रैमासिक) का संकलन कार्य कर सितम्बर, 1984 तक के अंकों का विमोचन किया गया। सावधिक पत्रिकाओं, समाचार पत्रों से एकत्र आयुर्विज्ञान संबंधी सूचनाओं की प्रपंजी एवं 223 शोध-पत्रों की अनुक्रमणिका तैयार करने का कार्य भी इस अवधि में किया गया।

पुस्तकालय ने शोध कार्यकर्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से 15 दुष्प्राप्य पाण्डुलिपियां, 274 ग्रन्थों एवं अन्य प्रकाशनों को प्राप्त कर लिया है। पत्र-पत्रिकाओं की वर्तमान सूची में भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास पत्रिका (इण्डियन जर्नल ऑफ हिस्ट्री ऑफ साईन्स) को भी सम्मिलित कर लिया गया है। इस वर्ष में 133 पुस्तकें जारी की गई और लगभग 50 वैज्ञानिकों/विद्वानों ने पुस्तकालय में आकर इसका लाभ उठाया। आयुर्वेद एवं संबद्ध विज्ञानों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के विषय में परिषद के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों तथा अन्य संगठनों को सूचना उपलब्ध कराई गई।

अतिरिक्त सूचना

प्रेस संसाधनों से समाचार-विचार सेवा प्रदान करने का कार्य क्रमबद्ध रखा गया। एक लघु पुस्तिका तैयार करने के लिए 30 रोगों के संदर्भ अब तक एकत्र कर लिए गए हैं। 57 आयुर्वेद औषधियों के प्रभाव एवं प्रयोग के विषय में प्रमुख कार्यालय को सूचना प्रदान की गई।

प्रकाशन प्रभाग ने दो त्रैमासिक पत्रिकाओं एवं एक मासिक "परिषद समाचार" को प्रकाशित करने का कार्य किया। "आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका" के भाग-2 अंक 4 और मार्च एवं जून, 1982 तक भाग 3 अंक 1 का संश्लिष्ट अंक का विमोचन किया गया। प्रजातीय औषध अनुसंधान पत्रिका के दिसम्बर, 1981 और मार्च, 1982 के क्रमशः भाग-2 अंक 4 एवं भाग-3 अंक 1 का विमोचन किया गया। आगामी अंकों के सम्पादन का कार्य प्रारम्भ किया गया है।

वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत परिषद के प्रमुख कार्यालय में अष्टांग संग्रह के समीक्षात्मक भाग एवं सहस्रयोग का मलयाली भाषा से संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में अनुवाद कार्य की समीक्षा कर ली गई है और इसका सम्पादन कार्य करके प्रकाशन करने का कार्य प्रगति पर है। "घरेलू औषधियों की लघु पुस्तिका का हिन्दी में अनुवाद करने का कार्य पूरा कर लिया गया है और यह प्रकाशन के लिए तैयार है। सारभेन्द्ररत्नावली से संबंधित संपादकीय कार्य अंतिम चरणों में है।

भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद :

निजाम राजवंश के गणमान्य चिकित्सकों में से 70 यूनानी चिकित्सकों के जीवन परिचय से संबंधित सूचना एकत्र की गई है। इनमें से 36 चिकित्सकों के जीवन परिचय को प्रकाशन के लिए भेज दिया गया है। इसके अतिरिक्त अल्हवी में वर्णित चिकित्सकों के 60 नामों से संबंधित सूचना भी 20 भागों से एकत्र कर ली गई है और जीवनियों के संपादन का आगामी अध्ययन कार्य प्रगति पर है। संस्थान ने पद्मपुराण से वैद्यशास्त्र से संबंधित सामग्री संकलन कार्य पूरा कर लिया है और इस विषय में प्रकाशन के लिए एक लेख तैयार किया जा रहा है। इसमें पटल खण्ड एवं उत्तरखण्ड के प्रथम भाग की सूचना दी गई है जो लगभग 1000 पृष्ठों की है। स्कन्धपुराण का अध्ययन कार्य प्रारंभ किया गया है और लगभग 500 पृष्ठों का अब तक अध्ययन कार्य पूरा कर लिया गया है। तेलगू के आयुर्विज्ञान संबंधी साहित्य, 9 कन्नड पुस्तकों का अध्ययन कार्य कर लिया गया है। तेलगू साहित्य पर नाथ यौगिक एवं नाथकल्ट का प्रभाव संबंधी अध्ययन भी किया गया है और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए इस विषय में एक लेख तैयार किया गया है और महत्वपूर्ण कार्यक्रम में योग ग्रंथों से आयुर्वेदीय

सामग्री का संकलन सम्मिलित है। अनेक पुस्तकों/पाण्डुलिपियों एवं योग संबंधी पत्र-पत्रिकाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् 54 ग्रंथों एवं 20 पाण्डुलिपियों से सामग्री एकत्र की गई है। इनमें योग पत्र-पत्रिकाओं के अनेक अंक सम्मिलित हैं।

इस वर्ष में आयुर्विज्ञान/साहित्य/पाण्डुलिपियों से संबंधित सूचना की संदर्भ ग्रंथ-सूची एकत्र करने का कार्य प्रारंभ किया गया है।

इस वर्ष में फर्गुसन महाविद्यालय एवं डेक्कन महाविद्यालय के पुस्तकालयों का अध्ययन किया गया और इन दो पुस्तकालयों में उपलब्ध आयुर्विज्ञान संबंधी पाण्डु-लिपियों की सूची प्रकाशनाधीन है। इस संबंध में व्यक्ति विशेष के पुस्तकालय से सूचना एकत्र करने का कार्य प्रगति पर है।

संस्थान के संग्रहालय को विकसित किया गया और 35 प्रदर्शनों की वृद्धि की गई। आयुर्वेद महाविद्यालय के समारोह के अवसर पर प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया तथा जब कभी भी उनसे अनुरोध प्राप्त हुआ तो उन्हें सहयोग प्रदान किया गया। आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा पद्धति, यूनानी चिकित्सा, योग एवं सिद्ध तथा अन्य सम्बद्ध विषयों से सम्बन्धित 53 पुस्तकों की पुस्तकालय में अभिवृद्धि की गई। इनमें आयुर्वेद सम्बन्धी पुस्तकें भी सम्मिलित हैं। इसके साथ ही इन पुस्तकों में विदेशी पुस्तकें एवं सिद्ध, योग एवं अन्य सम्बद्ध विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकें भी हैं। इसके अतिरिक्त 359 सावधिक पत्रिकाएँ भी क्रय की गईं, जिनमें विदेशों की मानक पत्रिकाएँ भी सम्मिलित हैं। स्नातकोत्तर शिक्षार्थियों एवं अन्य वैज्ञानिकों तथा विद्वानों को आयुर्विज्ञान इतिहास के विषय में सूचना प्रदान की गई। फाइलेरिया के विषय में आयुर्विज्ञान इतिहास से सम्बन्धित सामग्री भी एकत्र की गई।

संस्थान की पत्रिका में 1963-65 एवं 1971-1983 तक प्रकाशित शोध लेखों की संदर्भ ग्रंथ सूची तैयार की गई है और संस्थान की पत्रिका के भाग 14 में इसे प्रकाशित करने का कार्य अन्तिम चरण में है। इस वर्ष में दुष्प्राप्य पाण्डुलिपियों की 715 पृष्ठों की सूक्ष्म फिल्में तथा 783 छायाचित्र तैयार किए गए।

भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका के भाग 13 (1983) को प्रकाशन के लिए प्रैस को भेज दिया गया है। पत्रिका के भाग 14 का संपादकीय कार्य प्रगति पर है।

वाङ्मय अनुसंधान एकक, तंजौर :

वाङ्मय अनुसंधान एकक, तंजौर ने चिकित्सामृतसागर के 380 पृष्ठों का संस्कृत से हिंदी भाषा में अनुवाद कार्य कर लिया है, जिसमें स्पष्टीकरण के लिए पाद टिप्पणियां भी दी गई हैं। 618 पृष्ठों के 68 श्लोक की प्रैस कापी तैयार कर ली गई है।

तंजौर के प्रसिद्ध राजा सेरफोजी (द्वितीय) द्वारा संकलित सारभेन्द्र वैद्य मुराइगल में निहित औषधियों से सम्बन्धित सारभेन्द्र वैद्य-कोश निर्माण किया गया है। इस क्षेत्र में 2900 औषधियों के नाम दिये गए हैं, जिनमें स्थानीय नाम तथा वनस्पति विज्ञानीय नाम सम्मिलित हैं। इन 2900 औषधियों में निघण्टुओं में औषधशास्त्र में वर्णित 1000 औषधियों के पर्यायवाची, चिकित्सीय प्रयोग इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। सारभेन्द्ररत्नावली (संस्कृत) की प्रैस कापी तैयार कर ली गई है। इस एकक में एक पुस्तकालय भी है, जिसमें 1,100 पुस्तकें एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति से संबंधित 780 ताड़-पत्र पाण्डुलिपियां हैं।

आमची चिकित्सा पद्धति अनुसंधान एकक, लेह-लद्दाख :

औषध नाम, उनके वनस्पति विज्ञानीय नाम, आयुर्वेद/संस्कृत/अंग्रेजी नाम एवं स्थानीय नामों से संबंधित बौद्ध साहित्य के बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह का निर्माण किया गया है। 209 औषधियों में से 109 औषधियों से संबंधित सूचना एकत्र करने का कार्य पूरा कर लिया गया है। महत्वपूर्ण औषधियों की 200 किस्में तैयार कर ली गई हैं। इसके अतिरिक्त "आमची चिकित्सा पद्धति का उद्भव" पर एक शोध लेख जून, 1984 में लेह-लद्दाख में केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान में प्रस्तुत किया गया। एकक में एक पुस्तकालय भी है जिसमें आमची चिकित्सा पद्धति पाण्डुलिपियां/ग्रंथ एवं पादपों एवं खनिजों का एक संग्रहालय भी है।

परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम

परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम

परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत अनुसंधान कार्य नौ निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एककों और चार रासायनिक-भेषजगुणकर्मविज्ञानीय अनुसंधान एककों द्वारा किया गया।

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान

आयुष ए.सी. 4

पटियाला, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लखनऊ एवं त्रिवेन्द्रम में कार्यरत निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एककों ने आयुष ए.सी-4 (कूट-भेषज) का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण किया। इस वर्ष में कुल मिलाकर 371 महिलाओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया जिनमें से 197 महिलाएं नियमित औषध परीक्षण पर चल रही हैं और 105 महिलाओं ने परीक्षण अवधि के मध्य में ही औषध लेना बंद कर दिया। 11 महिलाएं औषध असफलता के कारण गर्भवती हो गईं और पांच महिलाएं नियमित रूप से औषध न लेने के कारण गर्भवती हुईं।

'के.' कैप्सूल

"के" कैप्सूल का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण अध्ययन आयुर्विज्ञान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में कार्यरत एकक में प्रारंभ किया गया। वर्ष 1984-85 में कुल मिलाकर 41 महिलाओं को औषध परीक्षण में सम्मिलित किया गया। 21 महिलाएं विभिन्न ऋतु चक्रों के स्तर में औषध परीक्षण पर चल रही हैं।

पिप्पल्यादि योग

पिप्पल्यादि योग (कूट-भेषज) का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण न्यू सिविल हॉस्पीटल, अहमदाबाद में कार्यरत एकक में किया गया। इस परीक्षण अध्ययन में कुल मिलाकर 46 महिलाओं को सम्मिलित किया गया। 26 महिलाएं विभिन्न ऋतु-चक्रों के स्तर में औषध परीक्षण पर चल रही हैं। 15 महिलाएं नियमित रूप से औषध न लेने के कारण तथा तीन महिलाएं औषध असफलता के कारण गर्भवती हो गईं।

अन्य औषधियां

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली और स्नातकोत्तर संस्थान, चण्डीगढ़ में कार्यरत अनुदान प्राप्त एकक में बंभौरी का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण कार्य प्रगति

पर है। केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में "रॉकी" (मंत्रालय द्वारा अग्रेषित जन-श्रुति-औषध) का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण कार्य भी प्रगति पर है।

रासायनिक भेजषगुणकर्मविज्ञानीय अध्ययन

पलास एवं रीठा **भे.वि.अनु.ए.परि.जा.**

इस वर्ष में एकक ने आरोपणरोधी/प्रजननरोधी, मदचक्र सम्बन्धी एवं सकल निरूपजनक प्रभाव क्षमता ज्ञात करने के लिए पलास एवं रीठा का परीक्षण किया। परीक्षण अध्ययन से ज्ञात हुआ कि रीठा में बहुत कम (12%) प्रजननरोधी सक्रियता है। इसकी अपेक्षा पलास में प्रजननरोधी क्षमता कुछ अधिक (25%) पाई गई। रीठा स्त्रीमदचक्र में क्रिया विहीन पाया गया। जबकि पलास अन्य अवधि (1-2 दिन) के लिए स्त्रीमद-चक्र की वृद्धि करता है। उपर्युक्त औषधियों से कोई सकल-निरूपजनक प्रभाव नहीं पाया गया।

पलास, रीठा, अपामार्ग एवं नीम **भे.गु.वि.अनु.ए.परि.भु.**

इस वर्ष में एकक ने पलास, रीठा, अपामार्ग एवं नीम-चार औषधियों का विशिष्ट अध्ययन आरम्भ किया। इन अध्ययनों में डिम्बरोधी, आरोपणरोधी अध्ययन एवं स्त्री-मद-चक्र तथा यादृच्छिक संगम व्यवहार एवं शुक्राणुजनन प्रभाव (नीम तैल) सम्बन्धी अध्ययन सम्मिलित है। इन औषधियों के अपरिष्कृत चूर्ण को अलग-अलग मात्रा में अनेक जाति के प्राणियों को दिया गया।

रीठा :

इसके चार बीजों की गिरी के अपरिष्कृत चूर्ण की 50 मि.ग्रा., 100 मि.ग्रा., 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा कॉपर एसीटेट प्रविष्ट खरगोशों को देने से क्रमशः 16.66%,58.33% एवं 83.3% डिम्बक्षरण निरोधी सक्रियता पाई गई। इस औषध 50 मि.ग्रा. एवं 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा से खरगोशों में क्रमशः 49.98% एवं 66.64% आरोपणरोधी सक्रियता पाई गई। धवल चूहों में इस औषध की 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा का आचरण करने से 81.25% आरोपण रोधी सक्रियता पाई गई।

अपामार्ग :

इस पादप की छाल के अपरिष्कृत चूर्ण की दो समान औषध मात्राओं से खरगोशों में क्रमशः 12.5%, 25% एवं 65.5% डिम्बरोधी और 16.66% एवं 44.94% आरोपणरोधी प्रभाव पाए गए और चूहों में क्रमशः 31.25%, 37.50 एवं 50% आरोपणरोधी प्रभाव पाए गए।

नीम तैल :

प्राणियों को अपरिष्कृत नीम तैल की 0.5 कि.ग्रा. की मात्रा प्रति-दिन देकर सात दिन तक इसका मुखीय प्रयोग करवाया गया। आठवें दिन प्राणियों को मारकर और उनकी प्रजननेन्द्रियों को ऊतक विकृत विज्ञानीय अध्ययनों के लिये एकत्र किया गया। अध्ययन कार्य प्रगति पर है। इसके प्रभाव के विषय में, जब तक विभिन्न प्रकार के प्राणियों पर इसका प्रगामी गहन परीक्षण नहीं किया जाता है, उल्लेख नहीं किया जा सकता है।

अपामार्ग : **भे.वि.अनु.ए.परि.त्रि.**

इस पादप के पंचांग के क्वाथ का चूहों में मुखीय अवचारण किया गया जिससे कि इसकी तीव्र विषाक्तता सम्बन्धी प्रभाव का अध्ययन किया जा सके। औषध अवचारण के पश्चात् प्रथम तीन घण्टों में और तत्पश्चात् प्रत्येक 24 घण्टे में तीन दिन तक मृत्यु दर एवं व्यावहारिक परिवर्तन ज्ञात किए गए। इस औषध को 10 ग्रा. से 500 ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित किया गया। 100 ग्राम/कि.ग्रा. तक की मात्रा से कोई मृत्यु दर अंकित नहीं की गई परन्तु 250 ग्राम/कि.ग्रा. की मात्रा से केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में शामक प्रभाव एवं दुर्बलता पाई गई। इससे उच्चतर औषध मात्रा से मृत्यु दर अंकित की गई। 400 ग्रा./कि.ग्रा. की औषध मात्रा स्तर पर 100% मृत्यु दर पाई गई। चूहों में प्रचण्ड तड़पन संवेग एवं आक्षेप ज्ञात किया गया।

नर चूहों की प्रजनन शक्ति पर प्रभाव **भे.वि.अनु.ए.परि.त्रि.**

इस अध्ययन के लिए वयस्क हाल्ट्जमैन नर चूहों (भार 150 ग्रा.) को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया। इसमें से एक वर्ग को नियंत्रण वर्ग में रखा गया। छः सप्ताह तक इस औषध की 10-20 ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा का विभिन्न वर्गों में अवचारण किया गया। छठे सप्ताह में प्रत्येक वर्ग के तीन चूहों को मादा वयस्क चूहों के साथ सहवास के लिए मिलने दिया गया। सहवास के पश्चात् मादा चूहों को अलग कर दिया गया और गर्भाधान के दसवें दिन आरोपणों को अंकित करने एवं चिकित्सा किए गए नर चूहों में औषध प्रजनन शक्ति का मूल्यांकन करने के लिए उनका उच्छेदन किया गया। छः सप्ताह के अन्त में समस्त प्राणियों को मार कर उनके रक्त एवं महत्वपूर्ण अंगों को निकाला गया तथा उनका नैदानिक विकृति विज्ञानीय, जीव-रासायनिक एवं ऊतक विकृति विज्ञानीय अध्ययन किया गया जिससे कि इसके विषाक्तता सम्बन्धी प्रभावों को ज्ञात किया जा सके तथा शुक्राणुजनन पर औषध प्रभाव मूल्यांकन किया जा सके।

अपामार्ग का मादा चूहों में परीक्षण अध्ययन करने के लिए प्रजननशील हॉल्टजमैन मादा चूहों का चयन किया गया और उनका प्रजननशील नर चूहों के साथ दो-एक के अनुपात में सहवास करवाया गया। सहवास कराये गए चूहों को गर्भाधान के प्रथम दिन से लेकर पांचवें दिन तक इस औषध का क्वाथ अवचारित किया गया। गर्भधारण के 10 वें दिन उनका उच्छेदन किया गया और भ्रूणों की संख्या एवं आकार ज्ञात करने के लिए गर्भाशय की जांच की गई। एक नियंत्रित वर्ग भी बनाया गया। इन्हें उपर्युक्त औषध के क्वाथ की 5, 10, 20, 50 ग्रा./कि. ग्रा. शरीर भार मात्रा (अपरिष्कृत औषध भार के रूप में) दी गई। चिकित्सा किए गए चूहों में 10 वें दिन भ्रूण पूर्णतः विकसित पाए गए और उनमें आरोपणरोधी सक्रियता का अभाव पाया गया। शुक्राणु-जनन पर औषध का प्रभाव संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण कार्य प्रगति पर है।

एकक ने निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन कार्य करने के लिए "जे" कैप्सूल के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया है। "जे" कैप्सूल को कांजिकम का उपयोग कर तैयार करने का लक्ष्य है।

प्रकाशन/सहयोग

प्रकाशन/सहयोग

क्र.सं.	लेखक/भागी	शोध पत्र	प्रकाशन/संगोष्ठी	प्रकाशन तिथि
1	2	3	4	5
क.	**निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान**			
1.	डोनेटा, सर. केसवन, एम. कुरीन, पी.सी. श्रीकुमार, आर. जोपी, पी. पद्मन, एम.वी.	अर्बुद पर आयुर्वेदीय औषधियों का प्रभाव	आमला कैंसर चिकित्सालय अनुसंधान पत्रिका	मार्च, 85
2.	डोनेटा, सर. केसवन, एम. श्रीकुमार, आर. पद्मन, एम.वी.	कैंसर से अधिग्रस्त रोगियों में रससिंदूर का प्रारम्भिक अध्ययन	कैंसर संगोष्ठी, मद्रास	—
3.	गुप्ता, ओ.पी. तालुकदार, टी.के. शर्मा, बी.एन.	ग्रहणी-चयापचयी विकार का प्रमुख केन्द्र	अकोला में ग्रहणी रोग पर आयोजित अखिल भारतीय संगोष्ठी	मार्च, 85
4.	जैन, जे.पी.	वर्तमान रोग-निदान कारणों का अध्ययन	प्रकाशनार्थ प्रस्तुत	
5.	जैन, जे.पी. खन्ना, एन.के.	कुत्तों में प्लेटलेट काउण्ट क्लोटिंग टाइम, प्रोथ्रोम्बिन टाइम एवं क्लोट	करट मेडिकल प्रेक्टिस	नवम्बर, 84

1	2	3	4	5
		रिक्ट्रेशन प्रतिशत पर हाइपर थेरमिया का प्रभाव		
6.	केसवन, एम. डोनेटा, सर. श्रीकुमार, आर.	विषमज्वर पर इन्दु-कांतघृत का प्रभाव अध्ययन	आमला कैंसर चिकित्सालय अनुसंधान पत्रिका	मार्च, 85
7.	कुरियन, पी.चाकू. डोनेटा, सर. केसवन, एम. श्रीकुमार, आर.	एक रुग्ण पर आई.टी.पी. अध्ययन	आमला कैंसर चिकित्सालय अनुसंधान पत्रिका	मार्च, 85
8.	पाठक, एन.एन. बन्सल, एन.के.	आयुर्वेदीय वाङमय में कण्डू का विवेचनात्मक अध्ययन	त्वक्रोग संगोष्ठी गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय	मार्च, 84
9.	प्रेम किशोर चतुर्वेदी, एम.के.	जीर्णश्लीपद की चिकित्सा में औषधियों पर निदान-चिकित्सात्मक मूल्यांकन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनु. पत्रिका में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
10.	प्रेम किशोर एवं चतुर्वेदी, एम.के.	श्लीपद के प्रचण्ड रोगियों में आयुष-64 के प्रभाव का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन	—उपर्युक्त—	
11.	प्रेम किशोर एव पाधी, एम.एम.	गृध्रसी की चिकित्सा में हिंगुत्रिगुण तैल की भूमिका	आयु. एवं सिद्ध अनु. पत्रिका में प्रकाशनाधीन	

1	2	3	4	5
12.	प्रेम किशोर एवं पाधी, एम.एम.	पक्षाघात की चिकित्सा-में हिंगुत्रिगण तैल की भूमिका	—उपर्युक्त—	
13.	प्रेम किशोर, पाधी, एम.एम. एवं बनर्जी, एस.	आमवातज सधिशोथ की चिकित्सा में कतिपय पादप औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण	तंजौर में चिकित्सा एवं आयुर्विज्ञान अनुगामी संगोष्ठी में प्रस्तुत	
14.	रामचन्द्रन, नायर, पी. विजयन, एन.पी. माधवीकुट्टी, पी. इन्दिराकुमारी, बी.	खंज एवं पंगु में सहचर तैल एवं निर्गुण्डी तैल का तुलनात्मक अध्ययन	प्रथम योग एवं आयुर्वेद महासम्मेलन सेन मरीनो (इटली)	8 से 11 जून 1985
15.	रामचन्द्रन, नायर, पी. विजयन, एन.पी. इन्दिराकुमारी, एस. माधवीकुट्टी, पी. प्रभाकरण, बी.ए.	गृध्रसी में भद्रदार्वादि तैल का स्नेहपान प्रभाव	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रस्तुत	
16.	रामचन्द्रन, पी. नायर, विजयन एन.पी. माधवीकुट्टी, पी. प्रभाकरण, बी.ए. इन्दिरा कुमारी, एस.	सहचरादि तैल एवं भद्रदार्वादि तैल से गृध्रसी का तुलनात्मक निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रस्तुत	

1	2	3	4	5
17.	रामचन्द्रन, नायर, विजयन एन.पी. भागवती, के.सी. माधवीकुट्टी, पी.	खंज एवं पंगु में सहचरादि योग का प्रभाव	एंसिएंट साईन्स आफ लाईफ भाग-4 (I): 20–27	1984
18.	रामू, एम.जी.	प्रवाहिका विषयक संगोष्ठी में भाग लिया	राष्ट्रीय आयुर्वेद अकादमी एवं भा.चि॰ प. उद्योग, बंगलौर द्वारा आयोजित	जुलाई 1985
19.	रामू, एम.जी.	मानसरोग संगोष्ठी में भाग लिया	एन.आर.एस.आयु- वेदिक महाविद्यालय, विजयवाडा द्वारा आयोजित	मई, 1984
20.	रामू, एम.जी. वेंकटराम, बी.एस.	मनोविकार एवं आयुर्वेद	एंसिएंट सांईसआफ लाइफ भाग-4 (3) 165-173	जनवरी, 85
21.	रामू, एम.जी. जानकीरमैया, एन. मुकुन्दन, एच. शंकर, एम.आर. लीलावती, एस. नरसिंह मूर्ति, एन.एस. वेंकटराम, बी.एस.	चितोद्वेग में क्षीरधार पर एक प्रारंभिक अध्ययन	भाग-3 (3 व 4) : 126-132	1981
22.	(श्रीमती) रावल, जे. एच.	गर्भावस्था में पाण्डु रोग	निरामय (गुज.) मासिक पत्रिका	जुलाई, 84

1	2	3	4	5
23.	शेषगिरी राव टी. विश्वनाथन, पी. कुसुम कुमारी, के. नेताजी, सी. निस्तेश्वर, के. राजा राजेश्वर शर्मा, सी.	श्लीपद में आयुष-64 का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण	आयु.एवं सिद्ध अनु. पत्रिका, भाग-3 (1 व 2) : 9-12	1982
24.	शेषगिरी राव, टी. प्रत रेड्डी, के. विश्वनाथ राव, पी. सुभक्त, पी.के.जे.पी.	तमकश्वास के रोगियों में एल.एच. औषध का योग निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
25.	सिंह, बी.के. सिंह, ए.के.	आमवात व्याधि परिचयात्मक अध्ययन (प्रथम भाग)	आयुर्वेद विकास	1985
26.	तिवारी, वी.पी. जोशी, पी.	श्लीपद की चिकित्सा हेतु औद्भिद द्रव्यों का चयन	सचित्र आयुर्वेद	1985
27.	त्रिवेदी, वी.पी. अन्सारी, जेड	आधिज चण्डता और देशी औषध चिकित्सा	कामविभानीय अंतर्रा-ष्ट्रीय आयुर्वेद अनु-संधान संगोष्ठी, जामनगर	मार्च, 85
28.	त्रिवेदी, वी.पी. निषामणि, एस. शर्मा, वी.के.	भारतीय हृद्वाहिका बल्य औषधियों का अध्ययन	भा.औ.वा.अनु.पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रस्तुत	1982
29.	त्रिवेदी, वी.पी. निषाणि, एस. शर्मा, वी.के.	कास एवं श्वास के रोगियों में विभीतकफलचूर्ण का श्वासहर प्रभाव सम्बन्धी नियन्त्रित-चिकित्सात्मक अध्ययन	आयु. एवं सिद्ध अनु. पत्रिका भाग-3 (1 व 2) : 1-8	1982

1	2	3	4	5
30.	त्रिवेदी, बी.पी. दीक्षित, बी.एस.	योनिकण्डू से गर्भावस्था पर प्रभाव तथा इसकी स्वदेशी औषधियों से चिकित्सा	प्रसूति एवं बालरोग में आयुर्वेद की भूमिका सम्बन्धी संगोष्ठी, आयु. संस्थान, का.हि. वि.वि, वाराणसी	1985
31.	वासुदेवन, डी.एम. डोनेटा, सर जोपी, पी.जे. मोहम्मद, कुन्जी	सरिवा का कोशिका विज्ञान सम्बन्धी अध्ययन	आमला कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान पत्रिका	अगस्त, 85
32.	वारियर, पी.के. भट्टश्रि, पी.पी.एन. राधाकृष्णन, पी.	सर्पदंश के रोगियों की आयुर्वेदीय औषधियों से चिकित्सा	के.आयु. एवं सि.अनु. पत्रिका में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
ख. I. स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान				
33.	जैन. पी.के. अनिल कुमार	शरीर रक्षा एवं घरेलू उपाय नामक लघु पुस्तिका		1984
34.	प्रेम किशोर	कामन हीलिंग हर्ब्स (लघु पुस्तिका)		अक्तूबर, 84
35.	प्रेम किशोर	रोगहर साधारण वनौषधियां (उड़िया) लघु पुस्तिका		मार्च, 85
36.	प्रेम किशोर	प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा में औषध पादपों के माध्यम से आयुर्वेदीय अभिगमन	तंजौर में चिकित्सा एवं आयुर्विज्ञान अनुगामी संगोष्ठी में प्रस्तुत	22 एवं 23 जनवरी, 1985

1	2	3	4	5
37.	पुष्पगंधन, पी. राजशेखरन, एस.	आयुर्वेद में प्रयुक्त औषध पादपों के उपयोग से प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा में एक नया अभिगम	प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा संबंधी (आयु. एवं सि.) कार्यशाला	20 से 28 अप्रैल, 84

ख. II. औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण

38.	शर्मा, पी.सी.	उड़ीसा की औषध सम्पदा-I त्वक्‌रोग	प्र.औ.वा.अनु. पत्रिका में प्रकाशनाधीन	
39.	सिंह, बी.के. सतीश कुमार	अरुणाचल प्रदेश के सुबनसीरी जनपद की कतिपय जनश्रुति औषधियां (भाग-1) पामा और विचर्चिका	सचित्र आयुर्वेद	अप्रैल, 85
40.	जोशी, एम.सी.	लोकगीत में कुमाऊं के प्रसिद्ध पादप	प्र.औ.वा.अनु.पत्रिका में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
41.	नायर, के.वी. योगनरसिंह, एस.एन. केशवमूर्ति, के.आर. शांता, टी.आर.	अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की आयुर्वेदीय औषधियां-I	एसिएंट साइंस आफ लाइफ 4(1) : 61-66	1984
42.	नायर, के.वी. योगनरसिंह, एस.एन. केशवमूर्ति, के.आर. शांता, टी.आर.	अण्डमान निकोबार द्वीप समूह के औषध पादपों पर विवेचन	जर.इक.टैक्स.वाट. 5(2) : 297-320	1984
43.	शर्मा, वी.एन. शर्मा, एल.	टोटलादोह क्षेत्र की परम्परागत उपयोगी वनौषधियां	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	

1	2	3	4	5
44.	शर्मा, बी.एन. मजूमदार, आर.	मेघालय की गेरो पहाड़ियों में विडंग के प्रचुर स्त्रोत	प्रकाशनाधीन	
45.	श्रीवास्तव, आर.एन. बडोला, डी.पी. गुप्ता, ओ.पी.	लद्दाख के पुष्प पादपों के नये रिकार्ड-2	इण्डियन जर.आफ फारेस्ट्री, भाग-7(41)	1984
46.	तिवारी, वी.पी. तिवारी, आर. जोशी, पी.	मिर्जापुर (उ.प्र.) के आदिवासियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली कतिपय औषधियां	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
47.	त्रिवेदी, वी.पी.	भारत के हिमालय क्षेत्र में प्रचलित कतिपय अनु-चिकित्सीय विधियां	तृतीय यूरोपीय एक्यूपंचर एवं चिकित्सा संगोष्ठी, स्वीडन	1 से 3 जून, 84
48.	" " "	कोलार जनपद, कर्नाटक की औषध सम्पदा का अध्ययन-आयुर्वेद औषध-I	एंसिएंट साइंस आफ लाइफ में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
49.	" " "	आयुर्वेदीय औषधियां-II	—उपर्युक्त—	
50.	त्रिवेदी, बी.पी.	चिकमगलूर जनपद, कर्नाटक के औषध पादपों की वृद्धि	जर.इको.सै.वाट. 5(1) : 55-63	1984
51.	" " "	तालुक कनकपुरा बंगलौर जनपद की औषध-वनस्पतियां एवं उनका आर्थिक विकास तथा उपयोग	जर.इको.सै.वाट	1985

1	2	3	4	5
52.	त्रिवेदी, वी.वी.	चिकमगलूर जनपद, कर्नाटक की 5 पंचशत महाकषाय की औषध वनस्पतियां	एंसिएंट साइंस आफ लाइफ में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
53.	बालकृष्ण के. नटराजन, पी.के. पुरुषोत्तमन्, क.के.	"देवदारु" हिमालय का अद्भुत वृक्ष	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	

ग भेषज अभिज्ञानीय एवं रासायनिक अनुसंधान

54.	आचार्य बी.एम.	"फाइकस हिस्पिडा बार्क" का रासायनिक परीक्षण एक प्रारम्भिक टिप्पणी	करेंट साइन्स 53,1035	1984
55.	बागची, ए. नियोगी, पी. सहाय, एम. राय, एम.बी. हिकीनो, एच. ओशीमा, वाई.	फिसालिस पेरुवियाना एवं निकाण्ड्रा फिसालाइड से बिभापेरुवीन ई. निकाण्ड्रीन बी	पादप रसायन विज्ञान 23(4):853-56	1984
56.	बारीक, बी.आर. डे.ए.यू. दास, पी.सी. कुण्डू, ए.बी. चटर्जी, ए.	फाईरिडीनियम क्लोराइड एवं ट्रिफ्ल्यूरोएसिटिक एसिड से ओस्कोल इपोसाइड की मौलिक्यूलर पुनर्व्यस्था	इण्ड.जर.ड्रग, 236, 223-226	1984
57.	भीमराव, आर. नट्राजन, एम. पुरुषोत्तमन्, के.के.	रसयोग का विश्लेषण	अखिल भारतीय आयु. भेषज निर्माता सम्मेलन, बंगलौर	13.10.84

1	2	3	4	5
58.	बृन्दा, पी. शशिकला, ई. रुक्मणि, एस. पुरुषोत्तमन्, के.के.	मदनफल का वनस्पति विज्ञानीय एवं रासायनिक अध्ययन	—उपर्युक्त—	—उपर्युक्त—
59.	बृन्दा, पी. शशिकला, ई. रुक्मणि, एस. पुरुषोत्तमन, के.के.	पोगेस्टेमोन हैनिनस लिन का भेषज-अभिज्ञानीय अध्ययन	पंचम अंतर्राष्ट्रीय औषध एवं सुगंधित पादप संगोष्ठी, दार्जिलिंग	23 से 26 फरवरी, 1985
60.	दासगुप्ता, बी. सेठ, के.के. पाण्डे, वी.बी. रे.ए.बी.	फुमारिया इण्डिका के अल्केलाइड एवं नर्लु-मिडीन का प्रगामी अध्ययन	प्लाण्टा मेडिका	1984
61.	डे.डी. दास.एम.एन.	वरनोनिया सिनेरिया की भेषज अभिज्ञानीय विश्लेषण से औषध विशिष्टता	प्रथम विश्व योग एवं आयुर्वेद महासम्मेलन, इटली में	जनवरी, 85
62.	डे.डी. दास. एम.एन.	भा.चि.प. की प्रवाहिका-रोधी औषधियों का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन	भा.चि.प.अनु. एवं शिक्षा पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेषित	
63.	डे.डी. दास, एम.एन.	पुनस सेरासाइड्स डीडान की छाल की भेषज अभिज्ञानीय विश्लेषण से औषध पहचान	36वां भारतीय भेषज-निर्माता सम्मेलन	फरवरी,85
64.	डे.डी. दास, एम.एन.	वर्नोनिया सिनेरिया का भेषज अभिज्ञानीय मूल्यांकन	—उपर्युक्त—	

1	2	3	4	5
65.	डे. डी. दास, एम. एन.	उडफोर्डिआ फ्रुटिकोसा के पुष्प की पहचान	5वीं अंतर्राष्ट्रीय औषध सु. पादप बानवानी संगोष्ठी	फरवरी,85
66.	डे. डी. दास, एम. एन.	परम्परागत चि. प. के. फलों का भैषजअभिज्ञानीय विश्लेषण से औषध पहचान	राष्ट्रीय औषध पादप सुगंधित काष्ठ अनुप्रयुक्त जीव तकनीकी संगोष्ठी	1984
67.	डे. डी. दास. एम. एन.	एरिका कैप्चू का भेषज-अभिज्ञानीय पहलू	72वां भारतीय विज्ञान सत्र महासम्मेलन	1985
68.	डे. डी. दास, एम. एन.	नाइजिलिया सटाइवा का भेषज अभिज्ञानीय मूल्यांकन	-उपर्युक्त-	1985
69.	गोपाल, एच. पुरुषोत्तमन, के.के.	श्लित्र अध्ययन में रक्त स्कन्दन पर वियुक्तिकरण का प्रभाव	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
70.	गोपाल, आर, एच. पुरुषोत्तमन, के.के.	एलस्टोनिया पादपजाति से प्राप्त अल्केलाइड की विषमज्वर रोधी सक्रियता	अखिल भारतीय भेषज निर्माता सम्मेलन, बंगलौर	13.10.84
71.	हेमसावेनो, आर. पुरुषोत्तमन, के.के.	एलस्टोनिया स्कोलेरिस से प्राप्त इंचितामान अल्केलाइड की विषम ज्वररोधी सक्रियता	भा. भेषजनिर्माता महासम्मेलन, बंगलौर	9 से 11 फरवरी 1985
72.	कुण्डू, ए. बी. रे, एस. चटर्जी, ए.	एफानारिन, एफानामिक्स पोलिस्टेचिर्या का एक सी - 30 - टर्पीनोइड	पादप रसायनविज्ञान	1985

1	2	3	4	5
73.	कुण्डू, ए. बी. रे, एस.	एफानामिक्स पेलिस्टे- चिया का एक नया प्रमुख सिद्धांत	72वां भारतीय विज्ञान महा- सम्मेलन सघ	उद्धरण सं. -176 III, 1985
74.	कुण्डू, ए.बी. रे.एस. चक्रबर्ती, आर. नायक, एल. चटर्जी, ए.	सी$_{26}$ टर्पीनोइड्स के रसायनशास्त्र में आधुनिक विकास (टेट्रानोर ट्राइटर्पीनाइड्स)	जर.सां.इण्ड.रिस (प्रेस में)	1984
75.	नियोगी, पी. सहाय, एम. रे.ए.बी.	विथापेरुवीन एफ. एवं जी. दो नये विथनो- लाइड फिसालिस पेरु- वियाना मूल से प्राप्त	जादवपुर विश्व- विद्यालय रजत जयन्ती समारोह	14-19 अक्तू. 1984
76.	पाण्डेय, वी.एल. बिश्वास, एम. दास. के.पी.	कुटज का रोगक्षमता विज्ञानीय प्रयोगात्मक अध्ययन	तंजौर में चिकित्सा एवं आयुर्विज्ञान अनुगामी सगोष्ठी	22-23 जनवरी, 85
77.	पाठक, एन.के.आर. बिश्वास, एम. सेठ, के.के. द्विवेदी, एस.पी.डी. पाण्डेय, वी.बी.	स्वर्णक्षीरी का रासायनिक अन्वेषण	डाई फर्माजी 40 (3) : 202	1985
78.	पाठक, एन.के.आर. बिश्वास, एम. नियोगी, पी. फ्रोटन, एम.एच. आचार्य एस.बी.	सिम्प्लोकस स्पाइकॉटा के तने की छाल से प्राप्त स्पाईनेस्टरोल एवं उसका प्रारम्भिक भेषजगुण कर्म-विज्ञानीय अध्ययन	प्र.औ.वा.अनु.पत्रि. प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	—

1	2	3	4	5
79.	पुरुषोत्तमन्, के.के. शारदा, ए. माथुरम, वी. एन.	आबोट्रिसटिसलिन से प्राप्त आर्बोट्रिटिसाइड ए एवं बी दो नये इरीड्वाइडग्लोकोसाइड्स	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
80	पुरुषोत्तमन, के.के. शारदा, ए. बालकृष्णन, एम. साथुरम, वी.एन. बालकृष्ण के.	रोक्स वर्जीडिओल ए एवं बी संरचना का अध्ययन	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
81.	पुरुषोत्तमन् के.के. कल्याण, डी.	इलईगनस लैटिफोलिया लिन्न से प्राप्त टर्पीन्स	भारतीय भेषज निर्माता सम्मेलन, बंगलौर	9 से 11 फरवरी, 85
82.	पुरुषोत्तमन, के.के.	मेलियासी के कैमोटैक्सोनामिक मार्करस	पंचम अंतर्राष्ट्रीय औषध पादप एवं सुगंधित पादप संगोष्ठी, दार्जिलिंग	23-26 फरवरी, 85
83.	पुरुषोत्तमन, के.के. माथुरम, वी. शारदा, ए.	हेनिया ट्राइगुजा राक्सब से प्राप्त एक नया टेट्रानोरट्राइरपीनॉयड	भारतीय भेषज निर्माता सम्मेलन, बंगलौर	9 से 11 फरवरी, 85
84.	पुरुषोत्तमन, के.के. माथुरम, वी. शारदा, ए.	नाइक्थैन्थेस आर्बोर्टरिस्टिस लिन्न में इरिड्वाइड्स का अध्ययन एवं इसकी व्यवस्थित स्थिति का अध्ययन	5 वां अंतर्राष्ट्रीय औषध पादप एवं सुगंधित पादप संगोष्ठी, दार्जिलिंग	23-26 फरवरी, 85
85.	रमैया, एन. नायर, जी.ए.	बेरिया अमोनिला के पत्रों का रासायनिक अध्ययन	प्रकाशनाधीन	—
86.	रावल, जे.एच.	घरेलू औषधियों की पहचान	ज्योतिष दीप	1984

1	2	3	4	5
87.	सहाय, एम. नियोगी, पी.	फिसालिस पेरुवियाना के रासायनिक घटक	जर. इण्ड, कैम. सो.61, 171	1984
88.	शशिकला, ई. बृन्दा, पी. भीमराव, आर. पुरुषोत्तमन, के.के.	नाइक्टेन्थेस आर्बोरि-स्टिस लिन्न के पत्रों एवं बीजों का भेषज-अभिज्ञानीय अध्ययन	5वां अंतर्राष्ट्रीय औषध पादप एवं सुगधित पादप संगोष्ठी, दार्जिलिंग	23-26 फरवरी, 1985
89.	वासुदेवन, के. योगनरसिंह,एस.एन. गोपकुमार, के. केशवमूर्ति, के.आर. शांता, टी.आर.	दक्षिण भारत की आयुर्वेदीय औषधियों के कतिपय बाजारी नमूनों का अध्ययन-3	एंसिएंट साईस आफ लाइफ 3 (4) : 188-192	अप्रैल, 84
90.	वासुदेवन, नायर, के. होला, बी.वी. योगनरसिंह, एस.एन.	बृहत्रयी में एला का उल्लेख	एंसिएंट साईन्स ऑफ लाइफ 4 (2): 129-131	अक्तूबर, 84
91.	वासुदेवन नायर, के. योगनरसिंह, एस.एन. गोपकुमार, के. केशवमूर्ति, के.आर.	दक्षिण भारत की आयुर्वेदीय औषधियों के कतिपय बाजारी नमूनों का अध्ययन	एंसिएंट साईस आफ लाईफ 4 (4): 211-216	अप्रैल, 85
92.	,, ,, ,,	तक्कोल के सूक्षम, सूक्षम-दर्शीय एवं शरीरवृत्त रासायनिक विवरण एवं पहिचान	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
93.	,, ,, ,,	पद्मक के बाजारी नमूनों का सूक्षम, सूक्षमदर्शी एवं शरीरवृत्त रासायनिक विवरण	इंडि. जर. आफ. फारे. में प्रकाशन हेतु स्वीकार	1985

1	2	3	4	5
94.	वासुदेवन नायर, के. योगनरसिंह, एस.एन. गोपकुमार, के. केशवमूर्ति, के.आर.	फ्लेगिलेरिस इंडिका लिन्न का भेषजअभिज्ञानीय अध्ययन	जर. इको. टैक्स. बाट. प्रकाशनार्थ स्वीकार	1985
घ.	**भेषजगुणकर्म विज्ञान**			
95.	आलम, एम. सुसन, टी. पुरुषोत्तमन, के.के.	धवल चूहों में धातकी पुष्प का ज्वरहर-अध्ययन	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
96.	आलम, एम. रुकमणि, बी. आनन्दन, टी.	सिद्ध चिकित्सा पद्धति में सोरियासिस में प्रयुक्त 777 तैल पर रोधन का प्रभाव	एंसिएंट साईंस आफ लाईफ 5(1): 17-20	1985
97.	आनन्दन, एम. अग्रवाल, सी. सिंह, एस.पी. वर्मा, एम., शंकर, के. सिंह, एन., रे.पी.के.	जीवनाशी एक डिम्बाणु सीरोटोनिन का एवं परिहृद बंधक कुत्तों में में ई.सी.जो. अध्ययन	इ.डि. जर. हैरी. रिस. 2,40	1985
98.	भास्करन नायर, आर., रविशंकर, बी. त्रिजयन, एन.पी. सरस्वती, बी.पी शशिकला, सी.के.	स्ट्रोविलैथिस हैनियस का शोधजरोधी प्रभाव-एक जीव-विज्ञानीय अध्ययन	36 वां इपका महा-सम्मेलन, बंगलौर	9 से 11 फरवरी, 85
99.	दधीच, ए.पी. खन्ना, एन.के. व्यास, डी.एस.	बीकानेर (राज.) भारत के विद्यार्थियों में औषध दुरुपयोग का प्रचलन	भेषजगुणकर्मविज्ञा-नीय एशियाई सम्मेलन	जनवरी, 85

1	2	3	4	5
100.	दास, पी.सी. सरकार, एस. दास, ए. इस्लाम, सी.एन. दत्ता, एम.के. पात्रा, बी.बी. सकधर, एस.	आम और श्वेत चिरायता की शोधजरोधी सक्रियता	5 वां अंतर्राष्ट्रीय औषध पादप एवं सुगंधित पादप संगोष्ठी, बंगलौर	1985
101.	डेन्नीस, टी.जे.	एकटिलिन इण्डिकम-1 पर प्रारंभिक भेषजगुणकर्म विज्ञानीय अध्ययन तथा वेदनाहारी सक्रियता	इण्डियन ड्रग्स 22,2	1985
102.	दीक्षित, के.एस. श्रीवस्तव, ए.के. श्रीवास्तव, एम. सिंह, एस.पी. सिंह, एन. कांहली, आर.पी.	एच-53 नामक एक आयुर्वेदीय औषधयोग का हृदयवाहिनी संबधी प्रभाव पर प्रयोगात्मक मूल्यांकन	इण्डियन जर. फार्माकोलोजी	1985
103.	खन्ना, एन.के. सक्सेना, आर.एन. पेण्डसे, वी.के.	आयुसोलिथूसिन की शोधजरोधी सक्रियता का अध्ययन	एशियन कांग्रेस ऑफ फार्माकोलोजी, नई दिल्ली	जनवरी, 85
104	पिल्लै, एन.आर. शांता कुमारी, जी.	निम्बीडीन का विषाक्तता अध्ययन	प्लांटा मेडिका 50(2) : 140	1984
105.	पिल्लै, एन.आर. शांता कुमारी, जी.	प्रयोगात्मक प्राणियों में तीव्र एवं जीर्णजठर व्रण 50(2) में निम्बीडीन का प्रभाव	50(2) : 143	1984

1	2	3	4	5
106.	पिल्लै, एन.आर. शांता कुमारी, जी.	निम्बडीन का भेषज गुणकर्मविज्ञानीय प्रभाव प्रभाव	एंसिएंट साइंस आफ लाइफ 4(2) : 88-95	1984
107.	" " "	जठर अम्लस्राव में निम्बीडीन का पभाव	एंसिएंट साइंस आफ 5(2) : 91-97	1985
108.	पिल्लै, एन.आर. विजयम्मा, एन.	कार्डियोस्परमम हेलिकाकाबुम लिन का भेषज गुण कर्म विज्ञानीय अध्ययन	एंसिएंट साइन्स आफ लाइफ 5(1) : 32-36	1985
109.	रविशंकर, बी. भास्करन नायर, शशिकला, सी.के.	निर्गुण्डी का भेषजगुण-कर्म विज्ञानीय अध्ययन	36वां इपका कांग्रेस, बंगलौर	9 से 11 फरवरी, 85
110.	रविशंकर, बी. भास्करन नायर, शशिकला, आर.	स्ट्रोविलैथिम हैनीकस नीस का भेषजगुणकर्म-विज्ञानीय अध्ययन	इडि.जर. आफ फार्मा-कोलोजी, जम्बू-तवी	दिसम्बर, 1984 में मस्तुत
111.	रविवंकर, बी. भास्करन, एन.आर. विजयन, एन.पी. पंकजावल्लै, पी.टी, सुलोचना, एस.	स्ट्रोविलैथिस हैदीनस (तना) का वेदनाहारी, शोथजरोधी एवं प्रति-रक्षा रोधी प्रभाव	एशियन कांग्रेस आफ फार्माकोलोजी, नई दिल्ली	15 से 19 जनवरी,85
112.	सक्सैना, आर.सी. दीक्षित, के.एस. सिंह, एन.	मोरिंगा टेरिगोस्पमा एवं कनाविस इण्डिका	एशियन कांग्रेस आफ फार्माकोलोजी	जनवरी,85
113.	सक्सैना, आर.एन. पेण्डसे, वी.के. खन्ना, एन.के.	चार अमिनो एसिडों की शोथजरोधी एवं वेदनाहारी सक्रियता	इंडियन जर. फिजि. फार्मा.	अक्तूगर,84

1	2	3	4	5
114.	शेषाद्रि, सी. सीतारमन, आर. रेवते, आर. राधाकृष्ण पिल्लै, एस. वेंकटराघवन, एस.	आयुष-64 आयुर्वेदीय विषमज्वररोधी औषध का चूहों पर मध्य-तीव्र विषाक्तता अध्ययन	आयु. एवं सि.अनु. पत्रिका भाग-2 सं. 4 : 357-363	दिसम्बर,81
115.	शुक्ला, बी. खन्ना, एन. के. दधीच, ए. पी.	नए इंसुलित	करेंट मेडिकल प्रेक्टिस	
116.	शुक्ला, वी. पेन्डसे, वी. के. खन्ना, एन. के.	दोविटा-एड्रिडोसेप्टर रोधक तत्वों में ट्रोपोलोल और नोडोलाल का उत्तालता विकाररोधी स्थानीय वेदनाहर आक्षेपक रोधी सक्रियता अध्ययन	एशियन मेडिकल जरनल	फरवरी,85
117.	सिंह, एन. सिंह, एस. पी. व्रत, एस. मिश्रा., एन. दीक्षित, के. एस. किशोर, आर. पी.	कोसीनियां इंडिका का कुत्तों में मधुमेहरोधी अध्ययन	इंडियन जर. मेडि. सां. 39(2) : 27	1985
118.	सिंह, एन. सिंह, एस. पी. नाथ, आर. सिंह, डी. आर.	धवल चूहों में विथेनियां सोम्नीफेरा (ड्यूनाल) का फुफ्फुसीय रोम निवारण अध्ययन	इंटरनै. कूड ड्रग रिसर्च य्. एस. ए.	प्रेस में

1	2	3	4	5
119.	सिंह, एन. सिंह, एस. पी. दीक्षित, के. एस. कोहली, आर. पी. भार्गव, के. पी.	क्रोटवैनम न्युत्पन्न बिषाक्तता में कन्नाविष सटाइवा का प्रभाव	9वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस भेषजगुण कर्म विज्ञानीय (यू. के.)	अगस्त, 84
120.	सिंह, एन. सिंह, एस. पी. कोहली, आर.पी.	नीरियम इंडिकम मूल के ग्लोकोसाइड,प्लूमाइराइड की प्रबलरोधी सक्रियता	इंडि. जर. फार्मा, 17(1) : 56	1985
121.	सिंह, एन. सिंह, एस.पी. शुक्ला, जे.एन. कोहली, आर.पी.	बी एड्रिनोसेप्टर्स का कुत्तों में हृद् वाहिनी संबंधी विशिष्ट अध्ययन	इंडि.जर.हार्ट रिस. 2, 31	1985
122.	सिंह, एन. सिंह, एस.पी. कोहली, आर.पी. भार्गव, के.पी.	प्रतिबल रोधी औषध पादप	भेषजगुणकर्म विज्ञान विशेषज्ञों की चतुर्थ दक्षिण एशियाई पश्चिमी प्रशांत क्षेत्रीय बैठक	उद्धरण संख्या सी. 8,5 मई, 1985
123.	सिंह, एस.पी. मिश्रा, एन. दीक्षित के.एस. सिंह, के.एस. सिंह, एन कोहली, आर.पी.	सीसस क्वाइड्रेंगुलेरिस की वेदनाहारी सक्रियता का प्रयोगात्मक अध्ययन	फार्मा टिण्डसचिफ्खूर बेल्जिया (3) : 319	1984
124.	सिंह, एस.पी. दीक्षित, के.एस. सिन्हा. जे. एन. सिंह, एन. कोहली, आर.पी.	अर्जुन का केन्द्रीय हृद्वाहिनी प्रभाव	एशियन कांग्रेस फार्मा. लखनऊ	जनवरी, 85

1	2	3	4	5
125.	सिंह, एस.पी. माथुर, ए.के. सिन्हा, जे.एन. सिंह, एन. भार्गव, के.पी.	केन्द्रीय तंत्रिकातंत्र एवं डेस्लानोसाइड हृद् अतालता	जर.हार्ट.रिस. 2, 31	1985
126.	सुमन, टी. आलम, एम.एम. तुरुषोत्तमन, के.के.	धवल चूहों में आर्बोट्री स्टोसाइड-ए का अर्बुदरोधी प्रभाव	कैंसर कार्यशाला. मद्रास में प्रस्तुत करने के लिए भेजा गया	
127.	सुसन, टी. आलम, एम.एम. पुरुषोत्तमन, के.के.	विकोलाइड-बी की प्रजननरोधी एवं गर्भ-स्राव संबंधी प्रभाव	एशियन कांग्रेस आफ फार्मा, नई दिल्ली	15 से 19 जनवरी 1985
इ—औषध मानकीकरण				
128.	आलम, एम.एम. देसन, के.के. एस. हंसावेणी, सी, रुक्मणि, एस. पुरुषोत्तमन, के.के.	पिप्पल्यासव का तुलनात्मक संधान अध्ययन	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
129.	" " "	अरविन्दासव के संधान पर प्रयोगात्मक अध्ययन	—उपर्युक्त—	
130.	आलम, एम.एम. देशन, के.के.एस. पुरुषोत्तमन, के.के.	पिप्पल्यासव के विशिष्ट संदर्भ में आसवों एवं आरिष्टों में धातकी पुष्प की भूमिका	अखिल भारतीय आयुर्वेद भेषज निर्माता सम्मेलन, बंगलौर	13.10.84

1	2	3	4	5
131.	चोपड़ा, के.के. मालवीय, एन. के. जोशी, एस.बी.	आयुर्वेदीय औषध योगों पर एक भिन्न अभिगम	सचित्र आयुर्वेद 37 (9) : 563-64	1985
132.	पुरुषोत्तमन, के.के. शन्मुगदासन, के.के. आलम, एस. एम.	आसवों एवं अरिष्टों में धातकी-पुष्प की कीटाणुनाशक एवं ज्वरहर सम्बन्धी भूमिका	हरि ओम् आश्रम प्रेरित स्व.झंडु भट्टजी स्मारक आयु.अनु. न्यास द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान करने हेतु प्रस्तुत	
133.	सक्सैना, आर.बी. ढोलाकिया एम.वी. शाह, एच.सी.	लैक्टाइल लैक्टिक एसिड का अध्ययन	"आयु" जामनगर सं. 5(9) : 1-11	सितम्बर,84
134.	सक्सैना, आर.बी. ढोलाकिया, एम.वी. मेहता, एच.सी.	अशोकारिष्ट का शरीर पर रासायनिक अध्ययन	आयु.एवं सि.अनु. पत्रि. भाग 2(3): 279-285	सितम्बर, 81
135.	सक्सैना, आर.बी. ढोलाकिया, एम.वी.	लोहासव में लौह की भूमिका	"आयु" जामनगर सं. 5(15) : 1-5	मई,84
136.	सक्सैना, आर.बी. मेहता, एच.सी दासवानी, एम.टी.	सारस्वतारिष्ट की जलीय हाइड्रोक्लोरिक एसिड में चिपचिपाहट पर यध्ययन	जर.आफ एडीएफआई भावनगर भाग 1 सं. 3:23	मार्च, 84
137.	सक्सैना, आर.बी. मेहता, एच.सी. ढोलाकिया, एम.वी.	कुटजारिष्ट का शरीर पर रासायनिक अध्ययन	जर. आफ ए.डी.एफ. आई. भावनगर, भाग-1 सं. 2 : 29	1984

1	2	3	4	5
ई.	**परिवार कल्याण**			
138.	गीता, ए. अन्नादावलीम्मा, एच. नायर, सी.पी.आर. सुभद्रा, नायर एन.	एक सफल आयुर्वेदीय गर्भ निरोधक औषध	वागभट्ट भाग–3 (4-5) : 19-24	1985
139.	पुरुषोत्तमन, के.के. आलम एम.एम. वसन्त, एस. गोपाल, आर.के. थामस, एस.	गर्भनियंत्रण में बंझौरी की भूमिका	हरि ओम आश्रम स्व. झण्डू भट्टर्जी स्मारक आयु. अनु. न्याय द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान करने हेतु प्रस्तुध	
140.	रावल, जे.एच.	आयुर्वेद में वर्णित परिवार नियोजन	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
च.	**वाङ्मय अनुसंधान**			
141.	हुसैन, एस.ए.	निजाम 4,5 एवं 6 काल में हैदराबाद के यूनानी चिकित्सक	भा.आयु.इति.पत्रि.	मार्च में प्रेस में भेजा गया
142.	रामराव, बी.	भारत में चिकित्सकों की ऐतिहासिक विचारधारा	—उपर्युक्त—	,,
143.	रामराव, बी. रेड्डी एम.वी.	तेलगु साहित्य में नाथयोग का प्रभाव	—उपर्युक्त	,,
144.	रामराव, बी.	विशाखपत्तनम एवं काकिनाडा में आयुर्विज्ञान पाण्डुलिपियों की सूची	—उपर्युक्त—	,,

1	2	3	4	5
145.	रामराव, वी.	आयुर्विज्ञान इतिहास की प्रगति एवं विकास	—उपर्युक्त—	
146.	तिवारी, वी.पी. लाल, वी.के.	अथर्ववेद में वर्णित औषध पादप	प्रकाशन हेतु प्रस्तुत	
छ.	**विविध**			
147.	कपूर, एम.एल. साम्ही, सी.एस.	नीम-आधुनिक वैज्ञानिक कसौटी पर (हिन्दी)	व्याख्यान् भाग-3	1984
148.	पाठक, एन.एन.	व्यायाम	आयुर्वेद विकास 23(2): 38-40	फरवरी, 84
149.	प्रसाद, आर.ए. गुज्जर, जी.के.	समुद्र मन्थन का रहस्य एवं आयुर्वेद	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका	फरवरी, 85
150.	पुष्पगंधन, पी. राजशेखरन, एस. अटल, सी.के.	आयुर्वेद एवं योग के विशिष्ट संदर्भ में प्राचीन भारत में स्वास्थ्य संबंधी पर्यावरण तथा मानव-जाति कल्याण और इसकी वर्तमान समस्याएँ	प्रथम विश्व सम्मेलन सेन मरिनो (इटली) के लिए स्वीकार	8.11.85
151.	रावल, जे.एच.	आप अपनी वसा कम करना चाहेंगे?	निरामय (गुज.) मासिक पत्रिका	अगस्त, 84
152.	,, ,,	बाल स्वास्थ्य	-उपर्युक्त-	सितंबर, 84
153.	,, ,,	आयुर्वेद नस्य	-उपर्युक्त-	अक्तूबर, 84
154.	,, ,,	सूतिका चर्या	-उपर्युक्त-	दिसम्बर, 84
155.	,, ,,	आयुर्वेद का विशिष्ट पहलू (हिंदी)	विश्व चिकित्सा	—

1	2	3	4	5
156.	रावल, जे. एच.	बाजीकरण के संदर्भ में पथ्य-अपथ्य के आयुर्वेदीय पहलुओं का अध्ययन	कामशास्त्र संगोष्ठी, जामनगर के लिए प्रस्तुत	—
157.	त्रिवेदी, वी.पी. सिंह, जे.	कतिपय सौन्दर्य प्रसाधक पादप औषधियों का समीक्षात्मक अध्ययन	विश्व एक्यूपंचर एवं प्राकृतिक चिकित्सा महासम्मेलन, कोलम्बो	19 से 24 अक्तूबर, 84
158.	त्रिवेदी, वी.पी. सिंह, जे.	कतिपय वैकल्पिक शृंगार प्रसाधक औषधियों की समीक्षा	विश्व लेसीसो चिकित्सा एवं चुम्कीय चिकित्सा महासम्मेलन, डेनमार्क	5 से 7 जून, 1984
159.	वासुदेवन नायर, के. योगनरसिंह, एस.एन. केशवमूर्ति, के. आर. होला, बी.वी.	प्रगतिरोधक आयुर्वेदीय औषध निघण्टु को उत्कृष्ट बनाने की संकल्पना	एंसिएंट सां. आफ लाइफ 5(1) : 4-53	1985

सिद्ध
तकनीकी प्रतिवेदन

संस्थानों/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर चिह्न

क्र.सं.	संस्थान/एकक का नाम	संकेताक्षर चिन्ह
1.	केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, मद्रास	के.अनु.सं.म.
2.	क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी	क्षे.अनु.सं.पां.
3.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टई	नि.चि.अनु.ए.पला.
4.	निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, नई दिल्ली	नि.चि.अनु.ए.न.दि.
5.	चल-निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, मद्रास	च.नि.चि.अनु.ए.म.
6.	औषध अनुसंधान परियोजना (बहु-पद्धतीय), मद्रास	औ.अनु.परि.म.
7.	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम	औ.मा.अनु.ए.त्रि.
8.	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, मद्रास	औ.मा.अनु.ए.एम.
9.	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, बंगलौर	औ.मा.अनु.ए.बं.
10.	औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण एकक, पलायमकोट्टई	औ.वा.स.ए.पला.
11.	वाङ्मय अनुसंधान एवं प्रलेखन विभाग, मद्रास	वा.अनु.प्र.वि.म.

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् ने निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान, प्रायोगिक औषध अनुसंधान अध्ययन आधुनिक तकनीकों तथा संबद्ध चिकित्सा पद्धतियों की तकनीकों को सिद्ध चिकित्सा पद्धति के मौलिक सिद्धान्तों की उपेक्षा किये बिना उपयोग करते हुए किया।

इस कार्यक्रम में सिद्ध चिकित्सा पद्धति के शास्त्रीय आधार पर चिकित्सा प्रभाव का अध्ययन किया गया और इस चिकित्सा प्रभाव अध्ययन में एकाकी औषधियों, साधारण मिश्रण एवं औषध योगों पर कतिपय चयन किये गये नैदानिक लक्षणों में अध्ययन किया गया। वलिगुन्मम (पेष्टिक व्रण), पुत्रुनोई (कैंसर), मंजलकामलाई (विसर्गी-यकृतशोथ), संधिवातशूलाई (आमवातजसंधिशोथ), कलंजपादाई (चर्मरोग), वेल्लाईनोई (श्वेतप्रदर), करप्पन (त्वक रोग), वेल्लुप्पुनाई (पाण्डु), कक्काई विलिप्पु (अपस्मार), कफिचल (पाचन विकार), वेंकुट्टम (श्वित्र) एवं नीरभिवु (मधुमेह) का सिद्ध चिकित्सा में वर्णित औषधियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की दृष्टि से निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया।

वलिगुन्मम :

सिद्ध चिकित्सा पद्धति में आठ प्रकार के गुन्ममों का उल्लेख है जिनमें वलिगुन्मम भी सम्मिलित है। तांवीरम् (ताबा) को करुन्थुलसी चारु (तुलसीस्वरस) का प्रयोग करके चेन्दूरस के रूप में तैयार किया और पी-6 कूटवद्ध औषध के रूप में परीक्षण किया गया। अन्त में जो उत्पाद्य प्राप्त हुआ जिसका रंग भूरा-काला होत है उसे रासायनिक विधि से विश्लेषण किया गया और यह पाया गया कि अन्य तत्वों के साथ तांबीरम् (तांबा) क्यूपरिक ऑक्साइड के रूप में विद्यमान था। अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट सभी रोगियों को वेल्लाई एलाई का मृदुविरेचक के रस में चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व प्रयोग किया गया। परीक्षण औषधि को 45 सिलीग्राम की औषध मात्रा में दिन में दो बार भोजन के पश्चात शहद के साथ पांच दिन दिया गया और क्रमश: अर्सथैलम के साथ ओमम एवं तैल स्नान क्रमशः छठे और सातवें दिन कराया गया। दो और चिकित्सा प्रयोग 21वें दिन कराया गया और तत्पश्चात रोगियों को अन्तरंग रोगी विभाग से विमुक्त कर दिया गया।

इस वर्ष में 20 से 80 वर्ष आयु वर्ग के 63 रोगियों को अन्तरंग रोगी विभाग मेंप्रवेश किया गया जिनमें महिलाएँ एवं पुरुष दोनों सम्मिलित हैं। यह रोग सामान्यतः 20 से 50 वर्ष के आयु वर्ग के पूरुषों में अधिक पाया जाता हैं। अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट 63 रोगियों में 24 रोगियों को पूर्ण लाभ एवं 31 रोगियों को विशेष लाभ मिला तथा शेष आठ रोगी चिकित्सक की राय बिना ही छोड़ कर चले गये। निदान-चिकित्सात्मक मूल्यांकन के अनुसार 87% रोगियों को पूर्ण लाभ मिला। वलिगुन्मम (पेप्टिक व्रण) के पश्चात शल्य चिकित्सा योग्य रोगियों में भी यह औषध गुणकारी पाई गई। चिकित्सा अवधि में कोई भी अनुषंगी प्रभाव नहीं पाया गया।

पुत्रुनोई (कैंसर)

पुत्रुनोई को अगस्थियार विराननूल, अगस्थियार गुणवगडम, पुल्लिप्पानि एवं थेरियार 1001 जैसे सिद्ध चिकित्सा ग्रंथों में अर्बुद के समरूप वर्णित किया गया है, इसका उल्लेख विराननोइगल के अन्तर्गत किया गया है। इस रोग में जिन औषधियों का प्रयोग किया जाता हैं उनमें रसम (पारा), गंधगम (गंधक), सेरन्कोट्टाई, थुथुवलाई, वेन्कोडिवलि युक्त होता है। सिद्ध चिकित्सा ग्रन्थों में वर्णित कतिपय औषधियों के नाम रसगंधि मेभ्गु, गंधम, गुरु, लिंग परपम, चन्द्रस परपम, थुरसगुरु, नवरंथिना कल्पम, निथियकल्याणी करकम, एवं सम्बूरण नाथू चर्णम् हैं।

पुत्रुनोई के जिन रोगियों का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया वे 10 से 70 वर्ष आयु वर्ग के थे। अवलोकन किया गया कि यह रोग 40-60 वर्ष की आयु वर्ग में अधिक विद्यमान पाया जाता है। एक्स-रे, जीवउति परीक्षण भी किये गये और रोगियों की परीक्षा करने में सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वर्णित विधियों का अनुपालन भी किया गया। संस्थान ने आर जी एक्स नामक एक कूट बद्ध औषध का निर्माण किया है जिसे कैप्सूलों में एक ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार कम से कम 60 दिन की अवधि तक दिया गया। इस कूट-बद्ध औषध आरजीएक्स में रसम् (पारा), गंधगम् (गंधक) एवं सेरन्कोट्टाई मुख्य घटक हैं। इस औषध का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण उत्साहवर्धक रहा। एसटीजी जो कि एक कूटवद्ध औषध है का रोगियों की प्रचंड वेदना को कम करने में प्रयोग किया गया। इस औषध योग से रोगियों के लक्षणों में उल्लेखनीय सुधार पाया गया। प्रारंभ में सियोम्यकोयड स्तर में शीघ्र ह्रास पाया गया। कुछ सुधार के पश्चात सियोम्यकोय अपरिवर्तनशील रहा। प्रतिक्रमण की प्रक्रिया को तीव्र करने और रोग निवारण में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से एक अन्य औषध वीके-2 का भी प्रयोग किया गया जिसमें वेंकोडिवेल्लि प्रमुख अवयव के रूप में विद्यमान था। सेरन्कोट्टाई के भुने हुए चूर्ण के अतिरिक्त एसकेएक्स नामक एक कूटबद्ध भेषज

को भी चिकित्सा के लिए प्रारंभ किया गया। इन औषधियों को रोगियों के रोग संलक्षणों की प्रबलता को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त मात्रा में प्रयोग में लाया गया। इसके अतिरिक्त लिंगचेन्दूरम (चिन्नाबार से निर्मित चेन्दूरम्) का भी वेदनाहर औषध के रूप मे प्रयोग किया खया। बाह्य व्रणों एवं अर्बुदों को पञ्चाईएनाई एवं थुरुसु (तैल) जिसे उमाथाई एनाईचूरू नारियल तैल एवं कारसल्फेट से निर्मित किया गया और तिथियाकल्याणी एल्लाई कलकम का प्रयोग कर मरहमपट्टी की गई।

इस वर्ष में कुल 48 रोगियों को संस्थान के अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया। इन रोगियों में कपाल, गला, उदर गुदा, शिस्न, ऊरु, वृषणकोश, ग्रसनी, गर्भाशयग्रीवा इत्यादि के पुत्रुनोई के रोगी सम्मिलित हैं जिन्हें अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया। इन रोगियों के व्रण के आकार में ह्रास पाया गया।

मंजलकामलाई

मंजलनोई या मंजलकामलाई को विसर्गी यकृतशोथ के नाम से जाना जाता है। इस पर निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन-सिद्ध चिकित्सा पद्धति तथा आधुनिक चिकित्सा पद्धति के परिमापों के आधार पर किया गया है। के-3 नामक कूटबद्ध भेषज को संस्थान द्वारा तैयार किया गया है। इसका प्रयोग चुने हुए रोगियों में पांच ग्राम की औषध मात्रा सें दिन में दो बार जल के साथ 21 दिन तक किया गया। यह कूटबद्ध भेषज कीझानेल्लि एवं कोरिसलाईएलाई के योग से निर्मित औषध है। इस वर्ष में मंजलकामलाई के 33 रोगियों को निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन के लिए अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया जिसमें से 16 रोगियों को पूर्ण लाभ और 20 रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा छः रोगी चिकित्सक की सलाह के विपरीत छोड़ कर चले गये और एक रोगी पर इस औषध से कोई भी प्रभाव नहीं पाया गया। अवलोकन किया गया कि कामलाई की उत्पत्ति दुर्दमता के कारण हुई है।

संधिवातशूलाई (आमवातजसंधिशोथ)

अगस्थिआर नाड़ी में वर्णित वातरोगांगल के आठ प्रकारों में से संधिवातजशूलाई भी एक रोग है, जिसे आमवातजसंधिशोथ के समतुल्य माना जाता है। इस रोग में गौरीचिंतामणि एवं लिंगचेंदूरम का अंतः प्रयोग किया गया। दोनों ही औषध योगों में रसम् (पारा) मुख्य अवयव के रूप में विद्यमान होता है। प्रत्येक औषध की 300 मिलीग्राम की औषध मात्रा दिन में दो बार शहद के साथ तथा ग्रिकडुगु चूर्णम् का 30 से 40 दिन तक रोगीयों की रोग तीव्रता के आधार पर दिया गया। कुक्किल तैलम (के-2) एवं माइनातैलम् का प्रभावी भागों पर बाह्य प्रयोग किया गया।

इस वर्ष में 24 रोगियों को अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया जिनमें से पांच रोगियों को पूर्ण लाभ एवं 16 रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा शेष तीन रोगी चिकित्सा परामर्श के विपरीत छोड़ कर चले गये। निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण के फलस्वरूप देखा गया कि संधियों के शोथ में इस चिकित्सा के फलस्वरूप 15 दिन की अवधि में लाभ पाया गया। चिकित्सा अवधि में एवं चिकित्सा के पश्चात इस औषध से कोई अनुषंगी प्रभाव नहीं पाया गया।

कलंजपादाई

कलंजपादाई सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वर्णित सरमरोगागल (त्वकविकारों) में से एक है जिसे चर्म रोग के नाम से जाना जाता है। संस्थान द्वारा निर्मित 777 तैल का इस रोग में परीक्षण किया गया। इस तैल का वेलपलाई एल्लाई चारु एवं नारियल तैल को एक तथा 1/2 के अनुपात में मिलाकर तैयार किया गया और इसे सूर्य की रोशनी में तीन दिन तक रखा गया। तत्पश्चात तैल को निथारकर बोतल में प्रयोग के लिए बन्द कर दिया गया। इस 777 नामक औषधि को 10 मिलीग्राम की औषध मात्रा में दो में भागों में बांट कर दूध के साथ प्रयोग किया गया। इस तैल का बाह्य प्रयोग भी कराया गया। रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखते हुए यह औषध 30-40 दिन तक प्रयोग कराई गई। इस वर्ष में 20 रोगियों को अतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया। इन 20 रोगियों में से एक रोगी के उसके रोग संलक्षण में पूर्ण लाभ मिला तथा 16 रोगियों में विशिष्ट सुधार पाया गया। तीन रोगियों ने चिकित्सा-क्रम बंद कर दिया और चिकित्सक परामर्श बिना ही छोड़ कर चले गये। परीक्षण अवधि में औषध से कोई भी अनुषंगी प्रभाव नहीं देखा गया। अंतरंग रोगी विभाग से विमुक्त करने के पश्चात रोगियों का छः माह तक अनुशीलन अध्ययन किया गया। कतिपय रोगियों में कुछ अल्प रोग पुनरावृत्ति पाई गई।

वेलुप्पुनोई

सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वेलुप्पुनोई को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के पाण्डुरोग के समतुल्य वर्णित किया गया है। वेलुप्पुनोई के पांच प्रकार वर्णित किए गये हैं, यथा वात, पित, कप, मुकुत्र एवं विदावेलुप्पुनोइगल। इसका निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी एवं निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टाई में किया गया।

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी ने औषधि को तीन वर्गों में प्रयोग कर निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया यथा-आया भृंगराज कर्पम्, कठचेन्दूरम एवं इन दोनों औषधियों का मिश्रण।

आया भृंगराज कर्पम की 260 मिलीग्राम की औषध मात्रा तीन बार शहद के साथ 34 रोगियों को 21 दिन तक दी गई। 12 रोगियों को पूर्ण लाभ और 17 रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा पांच रोगियों ने चिकित्सा सलाह के विपरीत अध्ययन बंद कर दिया।

कठचेन्दूरम

कंठचेन्दुरम की 250 मिलीग्राम की औषध मात्रा चयन किये गये 30 रोगियों में दिन में दो बार 21 दिन तक परीक्षण हेतु दी गई। इन 30 रोगियों में से 12 रोगियों को पूर्ण लाभ और 13 रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा पांच रोगियों ने चिकित्सा सलाह के विपरीत परीक्षण बंद कर दिया। 11 रोगियों को मिश्रित चिकित्सा प्रदान की गई। आयाभृंगराज कंठचेन्दूरम की उपयुक्त मात्रा रोगियों की रोग अवस्था को ध्यान में रखते हुए दी गई। 12 रोगियों में से केवल दो रोगियों को पूर्ण लाभ मिला। पांच रोगियों को विशिष्ट लाभ मिला तथा पांच रोगियों ने चिकित्सा सलाह के विपरीत परीक्षण बंद कर दिया। अध्ययन के लिए चूने गये समस्त रोगियों को परामर्श दिया गया कि वे सामान्य आहार एवं विशेष शाक- सब्जियों का प्रयोग करें जैसे सिरुकीरई, मुलागी, नीरमुतिलप्पों, पीरक्कुपुडल, कथिरिपिचु एवं मनथकलिकीरई। इसके साथ ही पथ्य इत्यादि के प्रयोग की भी संस्तुति की गई। निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण के फलस्वरूप करपम से चिकित्सा किये गये रोगियों में उत्साहवर्द्धक परिणाम पाया गया। इसके साथ ही यह भी देखा गया कि यह दोनों औषधियां इरम्बूसथू कुराइवना वेलुप्पुनाई अर्थात लघुलोहित-कोशिका अल्पकोमी पाण्डु रोग में बहुत अधिक गुणकारी है। इसके साथ ही यह भी अवलोकन किया गया कि यह रोग अधिकांशत: 20-50 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्तियों में पाया जाता है और पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक होना है। चिकित्सा अवधि में इन औषधियों से कोई विषाक्तता या अनुषंगी प्रभाव नहीं पाया गया।

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टाई ने अन्नावेदी चेंदूरम का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण प्रारम्भ किया गया है। परीक्षण औषध की 250 मिलीग्राम औषध मात्रा दिन में तीन तीन बार शहद के साथ रोगियों को उनकी रोग अवस्थानुसार 40–50 दिन तक दी गई। अन्तरंग रोगी विभाग में 76 रोगियों को प्रविविष्ट किया गया। इन 76 रोगियों में से 35 रोगियों को पूर्ण लाभ, 12 रोगियों को विशिष्ट लाभ एवं 10 रोगियों को मध्यम लाभ प्राप्त हुआ तथा 19 रोगियों ने चिकित्सा सलाह के विपरीत औषध लेना बंद कर दिया। चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व तथा 10 दिन के अन्तराल पर तथा चिकित्सा मुक्त होने पर रक्त में हीमोग्लोबिन

की मात्रा का परीक्षण किया गया। निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण से ज्ञात होता हैकि अन्नावेदि चेंदूरम, इरम्बुसथुकुराइवना वेलप्पुनोई के रोगियों में लाभप्रद है। चिकित्सा अवधि में रोगियों में प्रवाहिका सम्बन्धी विकार एवं उदर विकृति का भी अवलोकन किया गया। इस वर्ष में 3,593 रोगियों ने बहिरंग रोगी विभाग में चिकित्सा प्राप्त की जिनमें से 655 नये रोगी थे।

वेल्लाईनोई

वेल्लाईनोई या वेल्लाईथीथू (श्वेत प्रदर) का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन दो वर्गों के रोगियों में किया गया। एक वर्ग को पडिक्कारा परपम् एवं दूसरे कडुक्काई कुडिनीर औषध दी गई।

पडिकारा परपम् की 300 मिलीग्राम औषध मात्रा दूध के साथ दिन में तीन बार 15 दिन तक 30 रोगियों को दी गई। उनमें से 20 रोगियों को पूर्ण लाभ एवं शेष 10 रोगियों को उल्लेखनीय लाभ प्राप्त हुआ। दूसरे वर्ग में 21 रोगी सम्मिलित हुए जिन्हें कुडिनीर पिचु के रूप में 15 दिन तक दी गई। इन 21 रोगियों में से 14 रोगियों को पूर्ण लाभ एवं सात रोगियों को विशिष्ट लाभ हुआ। अधिकांश रोगी 20-40 वर्ष आयु वर्ग के थे। अधिकतर रोगी में योनि-कण्डु, मूत्रदाह, एवं कष्ट-पीड़ित थे परन्तु इस चिकित्सा के फलस्वरूप उपर्युक्त संलक्षों में लाभ हुआ। अध्ययन अवधि में किसी प्रकार की विषाक्तता या अनुषगी प्रभाव नहीं पाया गया।

करप्पन

करप्पन त्वक् रोगों के अनेक प्रकारों में से एक है जिसका क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी में अध्ययन किया गया। परीक्ष्य औषध परंगिपट्टाई पथगम की 200 मि.ग्रा. औषध मात्रा दिन में दो बार पन्नाईवेलम् के साथ अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किये गये समस्त 24 रोगियों को 15 दिन तक दी गई। इन 24 रोगियों में से 12 रोगियों को पूर्ण लाभ एवं 12 रोगियों को विशेष लाभ प्राप्त हुआ। अधिकांश रोगियों में दाह-संवेदना, जल-स्फोट, कण्डु एवं जलास्राव लक्षण पाये गये और अन्तरंग रोगी विभाग से विमुक्त के समय यह लक्षण समाप्त पाए गए। अध्ययन के फलस्वरूप यह अवलोकन किया गया कि यह रोग महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिक पाया जाता है और 50-60 वर्ष के आयु वर्ग में सामान्य रूप से पाया जाता है। अन्तरंग रोगी विभाग से रोगियों को विमुक्त करने के पश्चात् उनका बहिरंग रोगी विभाग में अनुशीलन अध्ययन किया गया।

गुन्मम

गुन्मम का अध्ययन तीन औषध वर्गों में किया गया अर्थात् वर्ग "अ" में गुन्माकुडारि मेभृगु, वर्ग "ब" में उप्पुचेंदूरम् एवं तृतीय वर्ग में उपर्युक्त दोनों औषधियों के मिश्रण का परीक्षण किया एया। वर्ग "अ" के रोगियों को गुन्माकुडारि मेभृगु की एक ग्रा. की औषध माया दिन में तीन बार दी गई। परीक्षण के लिये 33 रोगियों को प्रविष्ट किया गया जिसमें से 17 को पूर्ण लाभ तथा नौ रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ। शेष सात रोगी चिकित्सा परामर्श के विपरीत बीच में ही छोड़ कर चले गये।

वर्ग "ब" के रोगियों को उप्पुचेंदुरम् संख्या-1 की 250 मि.ग्रा. की औषध मात्रा दिन में दो बार जल के साथ दी गई। इस वर्ग में 32 रोगियों का अन्तरंग रोगी विभाग में अध्ययन किया गया जिनमें से नौ रोगियों को पूर्ण लाभ और 16 रोगियों विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा शेष सात रोगियों ने चिकित्सा परामर्श के विपरीत औषध परीक्षण बंद कर दिया। 10 रोगियों को उपर्युक्त औषध वर्ग की मिश्रित चिकित्सा प्रदान की गई। इस वर्ग में तीन रोगियों को पूर्ण लाभ और चार रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा शेष रोगियों ने चिकित्सा बन्द कर दी। निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन के फलस्वरूप अवलोकन किया गया कि यह रोग महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में सामान्य रूप से अधिक पाया जाता है। इसके साथ ही यह भी ज्ञात किया गया कि उपचेंदूरम् संख्या-1 की अपेक्षा गुन्माकुडारि मेभृगु अधिक गुणकारी है। निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन अवधि में कोई भी अनुषंगी प्रभाव एवं विषाक्तता सम्बन्धी प्रभाव नहीं देखा गया।

ऊथलनोई

ऊथलनोई के 20 रोगियों की माम्मदूरथिअदाई कुडिनीर की 60 मि.ग्रा. औषध मात्रा दिन में तीन बार दी गई जिनमें से नौ रोगियों को पूर्ण लाभ एवं पांच रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ तथा छः रोगियों को किन्हीं कारणों से विमुक्त कर दिया गया। चिकित्सा अवधि में विषाक्तता सम्बन्धी तथा कोई अनुषंगी प्रभाव नहीं पाया गया।

पेरुवईरुनोई

पेरुवईरुनोई के रोगियों की वेदिउप्पुचुन्नम् की 130 मि.ग्रा. की औषध मात्रा दिन में तीन बार करम्बुचारु (इक्षु रस) के साथ देकर चिकित्सा की गई। इस वर्ग में आठ रोगियों को अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया जिनमें से दो रोगियों को

पूर्ण लाभ एवं एक रोगी को विशिष्ट लाभ हुआ तथा पांच रोगियों को अन्य कारणों से विमुक्त कर दिया गया। चिकित्सा अवधि में कोई भी अनुषंगी प्रभाव या विषाक्तता सम्बन्धी प्रभाव नहीं पाया गया। इसका निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन प्रगति पर है।

कम्भिचल

कम्भिचल आधुनिक चिकित्सा पद्धति में वर्णित जठर-व्याधि के समतुल्य है। इसका निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी एवं निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टई में किया गया। सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वर्णित विधि से रोगियों का चयन एवं निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण मूल्यांकन किया गया। निदान-चिकित्सात्मक अध्ययनों की संपुष्टि के लिये विकृतिविज्ञानीय एवं जीव-रासायनिक परीक्षण भी किये गए। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पांडिचेरी ने थेरचुंडि-चूरणम् की प्रभाव क्षमता का मूल्यांकन रोगियों को इस औषध की दो मिलीग्राम की औषध मात्रा दिन में दो बार उष्ण जल के साथ सात दिन तक देकर की गई। इस वर्ष में 20 रोगियों को अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया जिनमें से 16 रोगियों को पूर्ण लाभ एवं चार रोगियों को विशिष्ट लाभ प्राप्त हुआ।

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टई द्वारा पड़िगालिग थुअर की 500 मि.ग्रा. औषध मात्रा दिन में तीन बार इलुमिचम पझाचारू (नीबू-स्वरस) के साथ देकर कम्भिचल का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया। इस वर्ष में अध्ययन के लिए 16 रोगियों को अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया जिनमें से 11 रोगियों को पूर्ण लाभ प्राप्त हुआ तथा पांच रोगी चिकित्सा परामर्श के विपरीत अंतरंग रोगी विभाग छोड़कर चले गये। एकक के बहिरंग रोगी विभाग में 615 रोगियों की चिकित्सा की गई जिनमे से 154 नये रोगी थे। निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण अवधि में कोई भी अनुषगी प्रभाव नहीं पाया गया।

कक्काई वलिप्पू

कक्काई वलिप्पु को अपस्मार के समतुल्य माना गया है जिस पर निदान-चिकित्सा-त्मक अनुसंधान एकक, पलायमकोट्टई में अध्ययन किया गया। पचोंदीसुदर तैलम् की पाँच से दश बूंदे दिन में दो बार दूध के साथ 40 से 50 दिन तक दी गई। अंतरंग रोगी विभाग में निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण के लिए 20 रोगियों को प्रविष्ट किया गया जिनमें से दस रोगियों को पूर्ण लाभ एवं चार रोगियों को अल्प लाभ प्राप्त हुआ तथा शेष छः रोगी चिकित्सा सलाह के विपरीत अपनी इच्छा के अनुसार चिकित्सा छोड़ कर चले गये। एकक के बहिरंग रोगी विभाग में निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण में 782

रोगियों में से 72 रोगी नये थे। परीक्षण अवधि में कोई भी अनुषंगी प्रभाव नहीं पाया गया।

मुराईज्वरम

सिद्ध चिकित्सा वाङ्मय में मुराईज्वरम् को आधुनिक चिकित्सा पद्धति में ऋतुजन्य ज्वर के समतुल्य माना गया है। इसका निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन करने के लिए जिन रोगियों का चयन किया गया उन्हें लिगचेंदूरम् की 250 मि.ग्रा. औषध मात्रा दिन में तीन बार शहद के साथ दी गई। तीन रोगियों को अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किया गया जिनमें से दो रोगियों को पूर्ण लाभ प्राप्त हुआ। एक रोगी को इस चिकित्सा से कुछ भी लाभ नहीं मिला।

वेंकुट्टम

वेंकुट्टम का वर्णन कुट्टानोइगल के अन्तर्गत किया गया है जिसका कुछ प्रमुख सिद्ध औषधियों द्वारा निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया। इस चिकित्सा में निम्न-लिखित औषध योग सम्मिलित हैं—

क.स.	औषध योग	परीक्षित रोगी संख्या
1.	पोन्निमिलाई चेंदूरम्	43
2.	पोन्निमिलाई चेंदूरम्+चिराथई तैलम्	6
3.	पोन्निमियाई चेंदूरम्+करबोगी लेप	3
4.	आयाचेंदूरम्+चिराथई तैलम्	3
5.	कंडनकथरी पभा चूर्णम्+कंडनकतरीपभा इन्नाई	34

43 रोगियों को पोन्निमिलाई चेंदूरम् की औषध मात्रा शहद के साथ दी गई और इससे दो रोगियों को मध्यम लाभ एवं आठ रोगियों को अल्प लाभ प्राप्त हुआ तथा 25 रोगियों को इस चिकित्सा से कोई लाभ नहीं मिला। आठ रोगियों को औषध परीक्षण में सहयोग न देने के कारण चिकित्सा परीक्षण से विमुक्त कर दिया गया। वेंकुट्टम के छ: रोगियों को पोन्निमिलाई चेंदूरम् का अंत:प्रयोग एवं चिराथई तैलम् का बाह्य प्रयोग कराया गया। इससे दो रोगियों को विशिष्ट लाभ एवं एक रोगी को मध्यम लाभ प्राप्त हुआ तथा शेष तीन रोगियों को इससे कोई लाभ नहीं मिला। वेंकुट्टम के तीन रोगियों को पोन्निमिलाई चेंदूरम् (अंत: प्रयोग) एवं करबोगी लेप (बाह्य प्रयोग) द्वारा चिकित्सा

प्रदान की गई। इससे एक रोगी को मध्यम लाभ एवं एक रोगी को अल्प लाभ प्राप्त हुआ तथा एक रोगी को इससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ।

वैंकुट्टम् के 34 रोगियों को कंडनकथरी पभा चूर्णम् का अंतः प्रयोग एवं कंडन-कथरी पभा इन्नई (बाह्य प्रयोग) द्वारा चिकित्सा प्रदान की गई। इससे चार रोगियों को मध्यम लाभ तथा आठ रोगियों को अल्प लाभ मिला। 15 रुग्णों में कोई प्रभाव नहीं देखा गया और सात रुग्ण चिकित्सा विमर्श के विपरीत छोड़कर चले गये।

नीरझिवु

नीरझिवु (मधुमेह) को सिद्ध चिकित्सा पद्धति में सरुनीरपेर्कुक्कुताइगल में से एक माना गया है। नीरझिवु का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन निम्नलिखित औषधियों से, निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (सिद्ध) औषध अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत मद्रास में किया गया। निदान-चिकित्सात्मक परीक्षणफलों का उल्लेख निम्नलिखित तालिका में किया गया हैं —

क्र.सं.	औषध	पूर्ण लाभ	वि.ला.	म.ला.	अ.ला.	शू.ला.	योग
1.	लवग पीथरी चूर्णम्	—	—	—	—	2	2
2.	अब्रक चेंदूरम्	—	—	—	1	1	2
3.	अवराई चूर्णम्	—	—	—	11	4	15
4.	कोइय्या एयाई चूर्णम्	—	—	—	1	15	16

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (सिद्ध), नई दिल्ली में नीरझिवु पर अब्रक चेंदूरम् औषध का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया। औषधियों के परीक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन मधुमेहरोधी ज्ञात औषध डेवनिल से किया गया।

इस चयन में 40 रोगियों को सम्मिलित किया गया जिनमें से 15 रोगियों को मधुमेह नियंत्रण में रखा गया और उन्हें प्रतिदिन 18,000 कैलोरी आहार दिया गया। शेष 25 रोगियों को दो वर्गों में विभक्त किया गया। 14 रोगियों को अब्रक चेंदूरम् की 200 मिलीग्रा. की औषध मात्रा दिन में दो बार दी गई। इन 14 रोगियों में से जिन्हें अब्रकचेंदूरम् दिया गया था पांच रोगियों को विशिष्ट लाभ एवं सात रोगियों को मध्यम लाभ प्राप्त हुआ तथा दो रोगियों ने चिकित्सा बंद कर दी। जिन 11 रोगियों को डेवनिल औषध दी गई थी उनमें से छः रोगियों को विशिष्ट लाभ एवं चार रोगियों को

मध्यम लाभ प्राप्त हुआ तथा एक रोगी को कुछ भी लाभ नहीं मिला। अन्नक चेंदूरम् से चिकित्सित रोगियों के रक्त-शर्करा स्तर में कोई वृद्धि नहीं पाई गई जबकि औषधियां भी बंद कर दी गई थीं। इस वर्ष में 204 पुराने रोगियों ने भी एकक में चिकित्सा प्राप्त की।

तालिका

क्र. सं.	रोगी	कुल रोगी संख्या	परीक्षण औषध संख्या	अनुसंधान परियोजना
1.	वलिगुन्मम	63	1	के.अनु.सं. (सि.), मद्रास
2.	पुत्रुनोई	48	1	" " " "
3.	मंजलकामलाई	43	1	" " " "
4.	संधिवात शूलाई	24	1	" " " "
5.	कलंज पादाई	20	1	" " " "
6.	वेल्लाईनोई	51	2	क्षे.अनु.सं.(सि.) पाण्डिचेरी
7.	वेल्लुप्पुनोई	152	4	" " " "
8.	कक्काई वलिप्पु	20	1	नि.चि.अनु.एकक(सि.)पलायम,
9.	कभिचल	36	2	" " " " " क्षे.अनु.सं (सि.) पाण्डिचेरी
10.	मुराई ज्वरम	3	1	नि.चि.अनु.एकक. (सि.) पलायमकोट्टई
11.	वेंकुट्टम	89	5	नि.चि.अनु.एकक.ओ.मा.अनु.प. (व.प.), मद्रास
12.	नीरभ्विु	75	4	" " " " " " नि.चि.अनु.एकक(सि.), नई दिल्ली
13.	करप्पननोई	24	1	क्षे.अनु.सं. (सि.), पाण्डिचेरी
14.	गुन्मम्	75	1	" " " "
15.	ऊथलनोई	20	1	" " " "
16.	पेरुवायुरूनोई	8	1	" " " "

तालिका

अंतरंग रोगी विभाग/बहिरंग रोगी विभाग की उपस्थिति

क्र. सं.	संस्थान/एकक	उपस्थित रोगियों की संख्या			अंतरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट किए गए रोगियों की संख्या
		नये	पुराने	योग	
1.	के.अनु.सं. (सि.), मद्रास	10,436	13,002	23,438	327
2.	क्षे.अनु.सं. (सि.), पाण्डिचेरी	5,653	14,503	20,156	322
3.	नि.चि.अनु.ए. (सि.), पलायमकोट्टई	5,535	14,933	20,468	155
4.	वि.चि.अनु.ए. (सि.), औ.अनु.परि. (व.प.), मद्रास	124	—	124	—
5.	नि.चि.अनु.ए. (सि.), नई दिल्ली	75	204	279	—

तालिका

चिकित्सा—परिणाम 1984-85

क्र.सं.	रोग	पूर्ण लाभ	वि. लाभ	मध्यम लाभ	अल्प लाभ	अध्ययन विमुक्त	योग
1.	वलिगुल्मम	24	31	—	—	8	63
2.	पुत्रुनोई	—	—	48	—	—	48
3.	मंजलकामलाई	16	20	—	—	7	43
4.	संधिवात शूलाई	5	16	—	—	3	24
5.	कलंज पादई	1	16	—	—	3	20
6.	वेल्लुप्पुनोई	61	47	10	—	34	152
7.	करप्पन नोई	12	12	—	—	—	24
8.	गुल्मम	29	29	—	—	17	75
9.	ऊथल नोई	9	5	—	—	6	20
10.	पेरुवाईरुनोई	2	1	—	—	5	8
11.	कभिचल	27	4	—	—	5	36
12.	कक्काई वलिप्पु	—	10	—	10	—	20
13	मुराई ज्वरम्	—	2	—	—	1	3
14.	वॅकुट्टम	—	2	8	20	59	89
15.	नीरकिवु	—	11	11	5	32	59
16.	वेल्लाईनोई	34	17	—	—		51

तालिका

भाग—I अन्तरंग रोगी विभाग में अध्ययन किए गए रोग

क्र. सं.		के.अनु.सं.(सि.) मद्रास, दिसम्बर, 1971	क्षे.अनु.सं.(सि.) पाण्डिचेरी, अगस्त, 79	नि.चि.अनु.ए. (सि.) पलायमकोट्टई फरवरी, 80	प्रारम्भ से वर्ष 1983-84 तक रोग क्रम अनुसार उपस्थिति	योग
1	2	3	4	5	6	7
1.	वेलिगुम्मम	133	—	—	934	1067
2.	पुन्नोई	55	—	—	592	647
3.	मंजलकामलाई	63	—	—	320	383
4.	संविवात शूल्लाई	43	—	—	113	156
5.	कलंज पादाई	31	—	—	139	170
6.	वेल्लाईनोई	—	51	—	537	588
7.	करप्पन नोई	—	24	—	298	322
8.	वेल्लुप्प नोई	—	76	76	526	678

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7
9.	कक्काई वलिप्पु	—	—	20	33	53
10.	गुल्मम	—	75	—	4	79
11.	ऊयलनोई	—	20	—	1	21
12.	कम्मिचल	—	20	16	15	51
13.	मुराई ज्वरम्	—	—	3	1	4
14.	पेरुवाईरु नोई	—	8	—	—	8

तालिका

भाग—II बहिरंग रोगी विभाग में अध्ययन किए गए रोग

क्र.सं.	परियोजना की स्थापना तिथि	परियोजना का नाम	नीरभिबु	वेंकुट्टम	सामान्य बहिरंग रोगी विभाग में उपस्थिति
1.	दिसम्बर, 1971	कें.अनु.सं. (सि.), मद्रास	—	—	23,438
2.	अगस्त, 1979	क्षे.अनु.सं. (सि.), पाण्डिचेरी	—	—	20,156
3.	फरवरी, 1980	नि.चि.अनु. एकक (सि.), पलायमकोट्टई	—	—	20,468
4.	जनवरी, 1981	नि.चि.अनु. एकक (सि.), नई दिल्ली	75	—	269
5.	अक्तूबर, 1979	सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण परि., मद्रास	—	—	3,012
6.	अगस्त, 1979	—उपर्युक्त— पाण्डिचेरी	—	—	1,057
7.	नवम्बर, 1979	नि.चि.अनु.ए. (सि.) औ.अनु.परि. (व.प.), मद्रास	35	89	124
			110	89	68,624
	रोग क्रमानुसार उपस्थिति		4,328	4,582	5,43,885
	स्थापना से लेकर वर्ष 1984-85 तक		4,438	4,671	6,12,509

तालिका

भाग III चिकित्सा परिणाम (प्रारंभ से लेकर वर्ष 1984—85 तक)

वर्ष	वलिगुन्मम			पुत्रुनोई			मंजल कामलाई			संधिवात		
	पूर्ण लाभ	उ. लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	उ. लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	उ. लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	उ. लाभ	विमुक्त
1972-73	22	10	6	—	—	5	—	—	—	—	—	—
1973-74	34	25	2	—	1	6	—	—	—	—	—	—
1974-75	30	9	7	—	—	3	—	—	—	—	—	—
1975-76	25	11	4	—	1	13	15	21	16	—	—	—
1976-77	38	26	12	—	—	25	20	20	—	—	—	—
1977-78	62	20	35	—	5	48	12	7	11	—	—	—
1978-79	79	19	45	—	1	64	13	9	18	—	—	—
1979-80	105	26	26	—	6	76	27	8	23	—	6	6
1980-81	49	65	5	—	104	—	19	5	9	—	5	3
1981-82	29	61	4	—	109	—	6	12	16	1	16	15
1982-83	4	72	2	—	64	—	17	19	15	—	18	16
1983-84	47	—	3	—	54	—	28	—	11	14	—	9
1984-85	24	31	8	—	48	—	16	20	7	5	16	3

तालिका

वर्ष	कलंज पादाई एवं शर्मनोईगल			बेल्लोई नोई			वेल्लुप्पु नोई			कक्काई वलिप्पु		
	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	बि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1972-73	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1973-74	—	—		—	—	—	—	—	—	—	—	—
1974-75	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1975-76	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1976-77	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1977-78	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1978-79	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1979-80	1	13	14	—	—	—	—	—		—	—	—
1980-81	15	9	24	103	23	19	108	38	24	—	4	—

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1981-82	—	4	4	45	10	26	53	27	19	—	10	—
1982-83	—	13	4	54	12	26	31	41	21	—	4	3
1983-84	—	—	10	31	18	20	61	21	50	—	8	—
1984-85	1	16	3	34	17	—	61	57	34	—	10	10

तालिका

वर्ष	करप्पन			कझिचल			गुन्मम			ऊथल नोई		
	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1971-72	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1972-73	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1973-74	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1974-75	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1975-76	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1976-77	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1977-78	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1978-79	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1979-80	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1980-81	21	9	15	—	—	—	—	—	—	—	—	—

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1981-82	45	13	16	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1982-83	66	11	17	7	1	—	—	—	—	—	—	—
1983-84	50	16	19	17	—	—	1	2	1	—	1	—
1984-85	12	12	—	27	4	5	29	29	17	9	5	6

तालिका

वर्ष	मुराई ज्वरम्			बेंकट्टम			नीरभिवु			पेरुवायुरु		
	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त	पूर्ण लाभ	वि.लाभ	विमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1971-72	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1972-73	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1973-74	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1974-75	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1975-76	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1976-77	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1977-78	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1978-79	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1979-80	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1980-81	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
1981-82	—	—	—	—	—	1892 (ब.रो.वि.)			1950 (ब.रो.वि.)	—	—	—

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1982-83	—	—	—	—	19	—	—	77 (ब.गो.वि.)		—	—	—
1983-84	1	—	—	2	26	44	—	33	101	—	—	—
1984-85	2	—	1	2	25	63	11	16	32	2	1	5

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

यह कार्यक्रम केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), मद्रास एवं क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), पाण्डिचेरी द्वारा चल-चिकित्सा अनुसंधान दल के माध्यम से चलाया गया।

चल-चिकित्सा अनुसधान कार्यक्रम के अन्तर्गत चिन्नासेक्कडु एवं अन्य नौ आदिवासी ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया। जिन आदिवासी ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया उनमें पेरियाकाडु चमन्थम, कराडियाउर, चेन्नालथुवाडो, मंगलम, वेपदी, नथजेदु, पुलियर, कावेरीपीक सम्मिलित हैं। इस अध्ययन दल द्वारा सर्वेक्षण की अवधि में जिन आंकड़ों को घर-घर जाकर एकत्र किया गया उनमें आयु, लिंग, वैवाहिक स्तर, शिक्षा स्तर, प्रति व्यक्ति आय, व्यवसाय नशीले पदार्थों का सेवन इत्यादि हैं। इस सर्वेक्षण की अवधि में सर्वेक्षण दल द्वारा आवश्यक आकस्मिक चिकित्सा भी प्रदान की गई। इस दल द्वारा 3,012 लोगों की चिकित्सा की गई। इस क्षेत्र में पाये जाने वाले मुख्य रोग मूलम, इरिगुन्मम्, कफिचल, शूरी, कुडर पुझुर्नाइगल, वेप्पुनोई, नीरकोवाई, मुत्तुवली हैं।

इस प्रतिवेदित वर्ष में क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पाण्डिचेरी के चल-चिकित्सा एकक दल द्वारा इम्बालम एवं सेम्बीयामप्पालम ग्राम का सर्वेक्षण किया गया। इस दल द्वारा (77 बार भ्रमण की अवधि में) 1,599 लोगों का आयु, लिंग, प्रति व्यक्ति आय, वैवाहिक स्तर, शिक्षास्तर, व्यवसाय, नशीले पदार्थों के सेवन आदि से संबंधित आंकड़े एकत्र किए गये। इस दल द्वारा 1,051 व्यक्तियों को सामयिक चिकित्सा भी प्रदान की गई। इस क्षेत्र में पाये जाने वाले सामान्य रोगों में ततपट्टा पुन, थोलपिगल, वेल्लुप्पुनोई, कुडरपुझुनोइगल, वेप्पुनोई, जिन रोगियों को चिकित्सालय सुविधा की आवश्यकता थी उनको केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), मद्रास तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), पाण्डिचेरी से संपर्क स्थापित करने हेतु कहा गया।

औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण

औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण

पलायमकोट्टई में कार्यरत् वानस्पतिक सर्वेक्षण एकक द्वारा सिद्ध चिकित्सा पद्धति से संबंधित औषध पादपों के सर्वेक्षण के लिए पाण्डिचेरी क्षेत्र में स्थित वनों का सर्वेक्षण इस उद्देश्य से किया जिससे वनों से उपलब्ध ओषधियों की मात्रा ज्ञात हो सके। 3,465 वानस्पतिक नमूने, तीन खनिज ओषधियों के नमूने एवं सात जांगम औषध नमूनों का संग्रह किया गया। 4,004 वानस्पतिक नमूनों की सीटें तैयार की गई और 1635 संकेत कार्ड भी तैयार किए गए। संग्रहालय के लिए 422 कच्ची ओषधियों के नसूने भी एकत्रित किये गये। 2,050 हरबेरियम शीट्स की पहिचान की गई और उन्हें अंकित किया गया। 125 वानस्पतिक कुलों के 600 वंशों के 1050 नमूने एकत्रित किए गए।

इस प्रतिवेदित वर्ष में निम्नलिखित स्थानों का सर्वेक्षण किया गया।

1. कन्निकाट्टी वन क्षेत्र
2. आशाम्बा पर्वतीय क्षेत्र
3. तलयानी वन क्षेत्र
4. कडायम वन क्षेत्र
5. नाडूकानी पर्वतीय क्षेत्र
6. सांगलधारी वन क्षेत्र
7. मरान्थई पर्वतीय क्षेत्र
8. मेलापुडुकुडी क्षेत्र।

इस प्रतिवेदित वर्ष में इस सर्वेक्षण एकक द्वारा 314 हरबेरियमों के नमूने एकत्रित किए गए।

इस एकक द्वारा जिन पादपों को एकत्र किया गया उनमें से निलापनाई कोल्थामराई, कुरथिपू, सथा कुपाई, पेरियाकोवई किझंकु, वान्दा, तेहलकादि पाल्थीलाई, नारिवेंगयम नेईकाडुगु, निलावेम्बा, मिलगईपाण्डु, ओटटुथुथई, कराई विलि, कट्टवकोडी, विष्णुकिरंथी, मारुवोमथाई इत्यादि मुख्य हैं।

इस प्रतिवेदित वर्ष में 994 हरबेरियम के नमूनों को माउन्ट (आरोपित प्रतिदर्श) किया गया। 94 कुलों एवं 265 वंशों के 337 नमूने एकत्र किए गए। संग्रहालय हेतु 23 कच्ची ओषधियों के नमूने एकत्रित किए गए। बच्चों में पाये जाने वाले रोग मंजलकामलाई एवं श्वंगुसोबाई रोग के उपचार हेतु लाभप्रद नौ जनश्रुति पर आधारित औषध दावों को भी एकत्रित किया गया। परिवार नियोजन में सहायक जनश्रुति औषध

दावों को भी एकत्र किया गया तथा पुरुष एवं स्त्री बंध्यताजन्य औषध दावों को भी एकत्र किया गया। 63 किलो विभिन्न औषध पादपों के उपयोगी भाग भी एकत्रित किए गए। इन औषध पादपों में मुख्य रूप से सुरुटट्टुक्कोडई एवं कक्कट्टन को एकत्रित करके परिषद् के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों को इसकी आपूर्ति की गई।

233 एकाकी औषधियों के औषध पादपों की वानस्पतिक पहचान करके परिषद् को इसकी आपूर्ति की गई जिनमें से 85 एकाकी औषधियां सिद्ध भेषजकीय भाग-1 के पहचान के आधार पर उलोगम, पंचासेथाम, पडान्नगल करासरम, नवामनी, उपरासम, विला गिना पेरुलाल नामक थीं।

भैषज अभिज्ञानीय अध्ययन

भैषज अभिज्ञानीय अध्ययन

इस प्रतिवेदित वर्ष में भैषज अभिज्ञानीय अनुसंधान के अंतर्गत सिन्डिल एवं अदिगम औषधियों का अध्ययन किया गया। इसके अंतर्गत उनकी वानस्पतिक पहिचान प्राप्ति स्थान, स्थूल एवं सूक्ष्मदर्शीय औषध अध्ययन सम्मिलित हैं।

1. सिन्डिल (तना) (गुडूची)

इस पादप की बहुवर्षीय उगने वाली जाति भारत के प्रायः सभी उष्णकटिबन्धीय भागों में असम से कन्याकुमारी तक पाई जाती है। इसका तना मोटा, पत्र रहित तथा इसकी शाखाएँ विशेष प्रकार की उभार लिए हुए तथा चोंच की आकृति की नुकीली होती है जिसमें से जटा मूल निकलते हैं। इसके पुष्प छोटे तथा हरे पीत वर्ण के होते हैं। इसके तने में गांठदार कन्द होते हैं जो कि कार्ड के समान लेन्टीसैल (वातरन्ध्र) बनाते हैं।

सूक्ष्मदर्शीय अध्ययन करने पर इसके तने में गोलाकृति की बाह्य त्वचा पाई जाती हैं जिसमें वातरन्ध्र होते हैं। इसकी कार्क वाला भाग बाह्य मोटी दीवार वाले लहरदार दबी हुई आकृति के तथा आंतरिक भाग 3-4 शृंखलाओं में लगी हुई लम्बीकार संकुचित कोशाओं का बना हुआ होता है। कार्क के ऊतक वातरन्ध्र के खोलने के कारण कई स्थानों पर टूटा हुआ दिखाई पड़ता है। काटेक्स के भाग में सुचारू रूप से उपस्थित क्लोरनकाइमैटस क्षेत्र दिखाई पड़ता है तथा इसकी बहुत पतली दीवारों वाली कोशाएँ जिसमें गोलाकृति स्टार्चकण भरे होते हैं, पाये जाते है। वाहनी ऊतक जिसमें 10 अथवा उससे अधिक फावड़े के आकार की लंबाकार पट्टियां पाई जाती हैं, जाइलम का भाग बनाते हैं। उनके सिरों पर इसके अंत में अर्धगोलाकृति की पट्टियाँ फ्लोयम कोशाएं बनाती हैं। फ्लोयम के भागों को मध्य रश्मियां अलग-अलग करती हैं। मध्य भाग की कोशाएं बड़ी पतली दीवारों वाली तथा बिखरे हुए स्टार्च कणों से भरी होती हैं।

2. अदिगम (पत्र)

इसका पौधा काष्ठ युक्त क्षुप होता है जो कि भारत के सभी भागों में पाया जाता है। इसकी पत्तियाँ खुरदरी 10-18 × 4.3-7.5 सें.मी. लेन्स के आकार की तथा लम्बी होती हैं। इसके पुष्प गंधयुक्त, श्वेत तथा तने के ऊपरी भाग में सुसज्जित कोमल

रामयुक्त मंजरी में पाये जाते हैं। इसका बाह्य दल कुंज सत्व रखने वाला होता है। इसकी पंखुड़ियां बाह्य दलकुंज से दुगने आकार की होती हैं, इनकी ऊपरी सतह गोलाकार होता है। इस पौधे को बगीचे में इसके आकर्षक पुष्पों के कारण लगाया जाता है। इसकी कलम काटकर अथवा बीजों द्वारा सरलता से उगाया जा सकता है। इसके पौधे का उपयोग त्वक् विकारों में किया जाता है। इसके पत्तों का स्वरस कीटनाशक गुणों वाला होता है। इसका उपयोग कण्डु पर लगाने में किया जाता है। इस पौधे का उपयोग जीर्ण आमवात तथा श्वास रोग में भी किया जाता है।

सूक्ष्मदर्शीय अध्ययन किए जाने पर इसके पत्तों को अधोपृष्ठीय प्रकृति का पाया गया। इसके रोम अतिविशिष्टतायुक्त तथा एक कोषीय ट्राइकोम से युक्त होते हैं जिसमें समान्यतः दो अथवा इससे कम लम्बाकार भुजाएं पौधे से लगी हुई तथा एक टोटी अथवा लम्बी ऊपर उठी हुई डण्ठल पाई जाती है। अन्तः त्वचा की कोशिकाएं छोटी तथा पर्णमध्यक से भरी हुई होती हैं।

रासायनिक अध्ययन

रासायनिक अध्ययन

औषध अनुसंधान परियोजना (बहु-पद्धति), मद्रास के रासायनिक अनुसंधान अनुभाग के द्वारा रासायनिक अध्ययन कार्य किए गए। प्रतिवेदित वर्ष के अंतर्गत किए गए कार्य का विवरण इस प्रकार है।

1. सिरुकान्जन (जिमिना सिल्वेस्ट्र, आर. बी. आर.)

इस पौधे के दो किलोग्राम भार को शीतल हैक्सेन द्वारा निष्कासित किया गया। इसके पूर्ण सत्व को सिलिकाजैल स्तम्भ वर्ण लेखन करने से हैक्सेन द्वारा एक मोम जैसा पदार्थ प्राप्त हुआ तथा पुनः इसको हैक्सेन: बैन्जीन (4 :1) द्वारा परिष्कृत करने पर ट्राइटरपीन प्राप्त हुआ।

इस प्रकार प्राप्त ट्राइटरपीन का शोधन करके पुनः सिलिकाजैल द्वारा वर्णलेखन किया गया तथा हैक्सेन एवं हैक्सेन बैन्जीन मिश्रण (4:1) का प्रयोग किया गया। इसे एसीटोन द्रवणांक 192 द्वारा स्वीकृत किया गया। सूक्ष्मस्तरातलीय वर्ण लेखन विधि में हैक्सेन—बैन्जीन (1:1) का प्रयोग किए जाने पर केवल एक चिह्न दिखाई पड़ा जिसका अपवर्तनांक 0.74 था। इस बाह्य को लूपीअल ऐसीटेट के अनुकूल पाया गया।

इस पौधे का क्लोरोफार्म के साथ सत्व निकालकर अध्ययन किए जाने पर ट्राईटरपीन पाया गया। इस सत्व को सांद्रित करके सिलिकाजैल पर स्तम्भ वर्ण लेखन अध्ययन किया गया। यह कार्य प्रगति पर है।

2. कडल्जहिन्जिल (प्रोलेक्स स्कैन्डेन)

मूराथूर से संग्रहीत कडल्जिहिन्जिल का शीतल क्लोरोफार्म द्वारा सत्व निकाला गया। इसका वर्ण परीक्षण किए जाने पर स्टीरॉयड और ट्राईटरपीन की उपस्थिति पाई गई। सूक्ष्मतलीय वर्ण लेखन परीक्षा में बैन्जीन—इथाईल एसीटेट का प्रयोग किए जाने पर सत्व द्वारा पांच चिह्न दर्शाए गए हैं। फिलहाल पूर्ण सत्व का सिलिका जैल स्तम्भ वर्ण लेखन द्वारा परिष्कृत करके हैक्सेन बैन्जीन (1:1) से एक मिश्रण प्राप्त हुआ जिसके द्वारा बेंजीन का वर्ण लेखन किए जाने पर दो चिह्न दर्शाए गए हैं। इस यौगिक का विभिन्नीकरण करना अभी शेष है।

3. **अदिगम**

इस पौधे के शुष्क तने एवं त्वक् का चूर्ण 2 किलोग्राम लेकर शीतल हैक्सेन और क्लोरोफार्म के साथ 48 घंटे तक परिष्कृत करके सत्व निकाला गया। सूक्ष्मतयीय वर्ण लेखन के अंतर्गत (घोलक-बेंजीन : इथाईल एसीटेट 2:2) तथा बेंजीन मिश्रण का प्रयोग किया किया गया। इस संयुक्त सत्व को पुनः 2% नमक के अम्ल (2×500 मि.ली.) के साथ परिष्कृत करके सत्व निकाला गया तथा इस अम्लीय जल सत्व को बर्फ में एकत्रित करके अमोनिया के साथ परिष्कृत करके उसका पी. एच. 10 निर्धारित किया गया। इसका पुनः ईथर के साथ निष्कासन किया गया। ईथर को वाष्पित करके एल्कलायड मिश्रण (भार 0.75 मि.ग्रा.) प्राप्त किया गया। ड्रैगन-ड्रोफ प्रतिक्रमक (गोलक-बैन्जीन ईथाईल ऐसीटेट 9:1) द्वारा वर्ण लेखन अध्ययन किए जाने पर दो निश्चयात्मक चिन्ह प्राप्त हुए। इन एल्कलॉयड का पृथकीकरण करना अभी शेष है। एल्केलॉयड रहित भाग को सिलिकाजैल पर वर्ण लेखन अध्ययन हेतु प्रवाहित किया गया। इसमें हैक्सेन : बैन्जीन, 1:1 का प्रयोग किए जाने पर ट्राईटरपीन स्वीकृत कर हैक्सीमन द्रवणांक 2.60 डिग्री सेंटीग्रेड से प्राप्त हुआ। इसके द्वारा सिलिकाजैल परीक्षण में एक चिन्ह प्राप्त हुआ (प्रवर्तनांक= 0.64—घोलक बैंजीन) शोधित नमूनों के साथ तुलना किए जाने पर इसे फाइडेलीन पहचाना गया। इन घोलक माध्यमों का प्रयोग करके एसीटोन (द्रवणांक 275 डि. से.ग्रे.) द्वारा एक अन्य ट्राइटरपीन स्वीकृत किया गया।इसके द्वारा सूक्ष्मतलीय वर्णलेखन अध्ययन करके सिलिकाजैल (प्रवर्तनांक=0.55, घोलक माध्यम : बैन्जीन) से परिष्कृत करने पर एक पहिचान प्राप्त हुई इसका बैन्जीन के साथ तुलनात्मक अध्ययन किए जाने पर इसकी पहिचान करेकेटाकोसानोल (द्रवणांक 83 डि. से.ग्रे.) पर किया गया जिसकी बाद में शोधिग नमूनों के साथ तुलना करके इसकी निश्चयात्मक पहचान की गई।

स्वर्णमाक्षिक भस्म का रासायनिक विश्लेषण करके इसमें 63.15 प्रतिशत फेरिक आक्साइड तथा 3792 प्रतिशत सल्फेट की उपस्थिति पाई जाने की सूचना दी गई है।

लवंङ पट्टई चूर्णम् का रासायनिक विश्लेषण करके इसमें लौह, कैल्शियम कार्बोनेट, फास्फेट तथा क्लोराइड की उपस्थिति की सूचना दी गई।

अभ्रग चिन्दूरम का रासायनिक विश्लेषण करके इसमें लौह तथा एल्म्यूनियम की उपस्थिति की सूचना दी गई।

अदिगम का पादप रासायनिक अध्ययन किए जाने का भी प्रावधान किया गया।

भेषजगुण कर्म विज्ञानीय अध्ययन

भेषजगुण कर्म विज्ञानीय अध्ययन

प्राणियों पर भेषजगुण कर्म विज्ञानीय अध्ययन, औषध अनुसंधान में एक आवश्यक भूमिका निभाता है और इससे नवीन औषध द्रव्यों का विकास होता है। इस प्रकार के अध्ययन के अन्तर्गत मुख्यतः एकाकी औषध अनुसंधान तथा उससे प्राप्त घटक द्रव्यों का अध्ययन होता है। सिद्ध औषधियों के योगिक द्रव्यों का जीव विज्ञानीय अध्ययन करके उसका नैदानिक मूल्यांकन किया गया। इस प्रकार के अध्ययन के अन्तर्गत कण्डनकथीरी, पुवरासु तथा कोया जो कि पारंपरिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है अध्ययन किया गया। एन्नईचूर्णम् की विभिन्न प्रक्रियाओं का अध्ययन भी चल रहा है। भेषजगुण कर्मविज्ञानीय अध्ययन के अन्तर्गत अभ्रक चूर्ण, गौरी चिंतामणी चूर्णम् तथा पूनीमिलाई चूर्णम् का अध्ययन भी किया गया।

प्रतिवेदित वर्ष के अन्तर्गत किये गये कार्यों का विवरण निम्नलिखित है :

(1) अभ्रक चूर्णम

(अ) धवल चूहों में तीव्र विषाक्तता अध्ययन

अभ्रक चूर्णम् औषध को 0.5 प्रतिशत कार्बोक्सी मिथाईल सेलिलोज के घोल में मिश्रित करके 8,000, 9,000 तथा 10,000 मिली ग्राम/किलोग्राम शरीर भार की मात्रा में मुख द्वारा दिया गया। एक वर्ग को नियंत्रित वर्ग समूह के रूप में अध्ययन किया गया। इन प्राणियों का 72 घण्टे तक अध्ययन करके उन पर होने वाले विषात्तता के प्रभाव एवं उनकी मृत्यु दर का विवरण लिपिबद्ध किया गया। इस औषधि द्वारा किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव, किसी भी प्राणी की मृत्यु किसी भी औषध मात्रा में नहीं पाई गई।

(ब) धवल चूहों में अल्प-तीव्र विषाक्तता अध्ययन

अभ्रक चेंदूरम औषध को 0.5 प्रतिशत कार्बोक्सी मिथाईल सैल्यूलोज में घोलकर मुख द्वारा दिन में एक बार लगातार 30 दिन तक दिया। इस औषधि की की मात्रा 1,000 तथा 3,000 मिलीग्राम /कि.ग्रा. शरीर भार के अनुसार दी गई।

प्रतिदिन उसके शरीर भार, आहार, जल-ग्रहण तथा सामान्य लक्षणों का अध्ययन करके इसके आंकड़े एकत्रित किये गये। इनमें से एक समूह को नियंत्रित समूह वर्ग में रखा गया। सभी प्राणियों को 21 वें दिन मार दिया गया। हृदय रक्त को रुधिर विज्ञानीय परीक्षण के लिए एकत्रित किया गया तथा हृदय फुफ्फुस, यकृत, वृक्क जैसे मर्म-स्थानीय अंगों को एकत्रित कर ऊतक विकृति विज्ञानीय अध्ययन हेतु रखा गया। यह अध्ययन कार्य भी प्रगति पर है।

(2) कोया इल्लाई चूर्णम्

धवल चूहों पर तीव्र विषाक्तता अध्ययन

कोया इल्लाई चूर्णम् औषधि को 0.5 प्रतिशत कार्बोक्सी मिथाईल सेल्यूलोस में घोलकर मुख द्वारा 1,000, 5000 तथा 10,000 मिलीग्राम/किलोग्राम शरीर भार की मात्रा में दिया गया। एक समूह को नियंत्रित समूह वर्ग के रूप में रखा गया। इन प्राणियों को किसी भी प्रकार की विषाक्तता द्वारा उत्पन्न लक्षणों द्वारा उनकी होने वाली मृत्यु का 72 घण्टे तक अध्ययन किया गया। इस औषधि द्वारा किसी भी प्रकार का कोई दुष्प्रभाव अथवा मृत्यु किसी भी मात्रा के दिये जाने पर नहीं देखी गई।

(3) गौरी चिंतामणि चेन्दूरम

(अ) धवल चूहों में शोध रोधी सक्रियता का अध्ययन (कणिका गुल्म कोष्ठ विधि)

90 से 120 ग्राम शरीर भार के धवल चूहों में 25 मिलीलीटर वायु एवं 0.5 प्रतिशत तक जमालगोटा तैल, अवत्वक् के 1 मिलीलीटर प्राणियों के पार्श्वभाग में लगाकर कणिकागुल्म कोष्ठ उत्पन्न किया गया। गौरी चिंतामणि औषधि को शहद में घोलकर 1,000 तथा 2,000 मिलीग्राम/कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में मुख द्वारा लगातार 7 दिन तक दिया गया। जब कि अन्य समूह के प्राणियों को फिनाईल ब्यूटाजोन की 10 मि. ग्रा./कि. ग्रा. मात्रा मुख द्वारा दी गई तथा नियंत्रित समूह को तुलनात्मक अध्ययन के लिए रखा गया। इन प्राणियों को मारकर उनके विभिन्न आंकड़ों को आठवें दिन एकत्रित किया गया। इस औषधि द्वारा शोथरोधी सक्रियता दर्शाई गई जो कि 1,000 मि. ग्रा./कि. ग्रा. की मात्रा दिये जाने पर थी जबकि 2,000 मि. ग्रा./कि. ग्रा. की मात्रा दिये जाने पर व्युत्पन्न प्रभाव सांख्यकीय महत्व का था।

(ब) **धवल चूहों में शोफ रोधी सक्रियता अध्ययन** (कपास टिक्की कणिका गुल्म विधि)

गौरी चिंतामणि औषध को शहद में घोलकर इसकी 1,000 मि.ग्रा. तथा 2,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा को लगातार सात दिन तक मुख द्वारा दिया गया। एक समूह को केवल शहद देकर ही नियंत्रित समूह वर्ग के रूप में रखा गया। अन्य समूहों को फिनाइल ब्यूटाजोन की 100 कि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा पर रखा गया तथा ये मानक नियंत्रिक समूह का कार्य कर रहा था। जीवाणु हीन कपास टिक्की को शल्यकर्म द्वारा बक्षण तथा कक्षवर्ती भागों में रखा गया। आठवें दिन में इन चूहों को मार दिया गया। इन कपास टिक्कियों को चीर-फाड़कर निकाल कर 60 डि.सें.ग्रे. पर सुखाया गया जब तक कि इन टिक्कियों का भार स्थिर नहीं हो गया। दोनों औषध मात्राओं में किसी भी प्रकार की शोथ प्रतिरोधी सक्रियता नहीं पाई गई।

(स) **मूसों में वेदनाहर अध्ययन** (हाटप्लेट विधि)

गौरी चेन्दूरम औषधि को शहद में घोलकर मुख द्वारा इसकी 100, 250, 500, 1,000 तथा 2,000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा नर-मूसों में जिनका भार 20 तथा 30 ग्राम था दी गई विशेषकर हाटप्लेट के प्रयोग में शीघ्र प्रभाव आदि पाया गया। औषध दिये जाने से पूर्व तथा उसके प्रत्येक आधे घण्टे के पश्चात इसकी प्रतिक्रिया का हाटप्लेट पर जो कि 55 डि.सें.ग्रे. $\pm$0.5 डि.सें.ग्रे. पर नियंत्रित थी, अध्ययन किया गया। एनलजीन की 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा मुख द्वारा देकर मानक नियंत्रक समूह वर्ग का अध्ययन किया गया। इस औषध द्वारा मुख्य रूप से वेदनाहर सक्रियता सभी मात्राओं के दिये जाने पर उल्लेखनीय रूप में इसकी तीव्रता सर्वाधिक पाई गई।

4. **कण्डनकथीरी पाजा इन्नई**

अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (मूसों में)—औसत कण्डनकथीरी पाजा इन्नई को इसी रूप में 10 मि. ली. तथा 50 मि. ली./कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में मुख द्वारा मूसों को दिया गया एक समूह को केवल नारियल का तैल देकर इस नियंत्रण समूह वर्ग के रूप में प्रयोग किया गया। इन प्राणियों को 72 घंटे तक निरीक्षण हेतु रखकर उन पर होने वाले किसी भी प्रकार के विषाक्तता कुप्रभाव तथा मृत्यु आदि का विवरण अंकित किया गया। इस औषध द्वारा 10 मि. ली./कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा दिये जाने पर किसी प्रकार का कुप्रभाव तथा प्राणी की मृत्यु नहीं हुई। जबकि इस औषध की 50 मि. ली./कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दिए जाने पर 50 प्रतिशत मृत्युदर पाई गई।

5. **औषधि ए. एफ. डी.**

तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहों एवं मूसों में)—औषध ए. एफ. डी. को 0·5 प्रतिशत कार्बोक्सी मिथाईल सैल्यूलोज में घोला गया तथा इसकी 100, 250, 500 तथा 1000 मि. ग्रा./कि. ग्रा. की मात्रा शरीर भार के अनुसार मुख द्वारा दी गई। एक समूह को नियंत्रण वर्ग में रखा गया। इन प्राणियों में किसी भी प्रकार की विषाक्तता उत्पत्ति का निरीक्षण किया गया तथा उनकी मृत्यु दर का 72 घंटे तक का विवरण अंकित किया गया। इस औषध को किसी भी मात्रा में दिये जाने पर कोई दुष्प्रभाव तथा मृत्यु नहीं हुई।

6 **कण्डनकथीरी**

अ) वेदनाहर गुण अध्ययन—कण्डनकथीरी औषध की 50, 100, 500 तथा 1000 मि. ग्रा./कि. ग्रा. की मात्रा शरीर भार के अनुसार मुख द्वारा दी गई। एक अन्य समूह को वाष्पित जल पिलाया गया तथा इसका नियंत्रित वर्ग समूह के रूप में अध्ययन किया गया। वाष्पीकृत जल में एनलजीन मिलाकर इसकी 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा मुख द्वारा देकर इसका मानक नियंत्रण के रूप में अध्ययन किया गया। वजर्नसंलक्षण उत्पन्न करने हेतु अधोत्वचीय मार्ग द्वारा सूचीका से 3% ऐसेटिक एसिड की 300 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा दी गई। इस औषध की 50 तथा 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा दिये जाने पर क्रमशः 11.54 प्रतिशत तथा 52.85 प्रतिशत सक्रियता पाई गई। किंतु इस औषध की 500/1000 मि.ग्रा/कि.ग्रा. की मात्रा दिये जाने पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया।

7. **हॉट प्लेट विधि**

कण्डनकथीरी औषध की 50, 500 तथा 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा शरीर भारानुसार उन धवल चूहों को मुख द्वारा दी गई तथा औषध प्रभाव को हॉट प्लेट पर जो कि 55 डि. से. ग्रे $\pm$ 0.5 डि. सें.ग्रे. पर रखा गया था, अवलोकन किया गया। एनलजीन की 500 मि. ग्रा./कि.ग्रा. भार की मात्रा को नियंत्रित मानक के रूप में प्रयोग किया गया। यह अध्ययन अभी चल रहा है।

ब) शोथ प्रतिरोधी अध्ययन

1.) **चूहों में फार्मेलिन द्वारा व्युत्पन्न ग्रामवात**

कण्डनकथीरी औषधि 50, 500 तथा 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार के अनुसार मुख द्वारा दी गई तथा एक अन्य समूह को अनुपान पर रखा गया और

एक अन्य समूह का पिडनीसीलोन देकर नियंत्रिक मानक समूह के रूप में अध्ययन किया गया। आमवात उत्पन्न करने हेतु 2 प्रतिशत फार्मेलिन घोल की 0.1 मि.ली. की मात्रा दाहिने पिछले पंजे पर प्रथम एवं दूसरे दिन दी गई। इस औषध की 50 तथा 500 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा से क्रमशः 6.8 प्रतिशत सक्रियता तथा 12.77 प्रतिशत सक्रियता दर्शायी गयी। किन्तु इस औषध की 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा दिये जाने पर कोई भी विशेष प्रभाव नहीं पाया गया।

2. कपास टिक्की कणिका गुल्म विधि

कण्डनकथौरी औषध का अल्प तीव्र शोथज अध्ययन करने हेतु कपास टिक्की तकनीकी का प्रयोग किया गया। इसके लिए 100 से 120 ग्राम शरीर भार वाले धवल चूहों को लिया गया। इस औषध की 25, 100, 200 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा सात दिन तक दी गई। इसी प्रकार अन्य दो समूह जिनमें से एक को अनुपान दिया गया तथा एक अन्य को फिनाइल ब्युटाजोन 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा क्रमशः देकर नियंत्रित वर्ग के रूप में प्रयुक्त किया गया। आठवें दिन इन प्राणियों को मार दिया गया और कपास टिक्की को निकालकर उनके शरीर के मुख्य अंग जिनमें फुप्फुस, हृदय, यकृत, वृक्क सम्मिलित हैं उनको निकालकर उनका भार अंकित किया गया। इस औषध द्वारा 21 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा दिये जाने पर विशिष्ट प्रभाव दर्शाया गया किंतु उसकी 100 तथा 250 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा पर कोई प्रभाव नहीं दर्शाया गया।

7. पेन्नीमिल्लई चेन्दूरम

अ) चूहों में फार्मेलिन आमवात का अध्ययन

इस औषध को दुग्ध में घोलकर इसकी 250 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा एक समूह के प्राणियों को दी गई तथा एक समूह को केवल अनुपान ही दिया गया। एक अन्य समूह को प्रिडनीसीलोन देकर नियंत्रित मानक समूह के रूप में तुलनात्मक अध्ययन हेतु रखा गया। दो प्रतिशत फार्मेलिन की 0.1 मात्रा देकर आमवात व्युत्पन्न किया गया तथा इसे सूचिका द्वारा अधोत्वचीय मार्ग से पिछले पंजे में प्रथम और दूसरे दिवस को दिया गया। प्राणी का शरीर भार तथा गुल्म संधि का अनुप्रस्थ आछेद काटकर इसके आंकड़े एकत्रित किये गये। यह कार्य प्रगति पर है।

ब) कणिका गुल्म कोष्ठ विधि

धवल चूहों जिनका 120 से 150 ग्रा. शरीर भार था, चयनकर उनमें कणिका-गुल्म उत्पन्न करने हेतु प्राणी के शरीर के अधोभाग 25 मि.ली. वायु तथा 0.5 प्रतिशत

जमाल गोटा तैल अधोत्वचीय मार्ग द्वारा दिया गया। पुन्नामिल्लेई चेन्दूरम को दूध में घोलकर इसकी 500 तथा 1000 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा एक समूह को दी गई जबकि नियंत्रित वर्ग के प्राणियों को फिनाईल ब्यूटाजोन की 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा की मात्रा तथा दुग्ध पर क्रमशः रखा गया। इन प्राणियों को मारकर उनके कोष्ठ थाईलम, प्लीहा एवं अधिवृक्क जैसे महत्वपूर्ण अंगों को निकाल लिया गया। इसके साथ ही उनका भार मापकर अंकित किया गया। यह कार्य प्रगति पर है।

स) **अल्पतीव्र विषाक्तता अध्ययन**

दोनों ही लिंगों के धवल चूहों को उपर्युक्त अध्ययन हेतु लिया गया जिनका शरीर भार 100 ग्रा. था, उनका अध्ययन किया गया। पोन्नीमिल्लई चूर्णम् को दुग्ध में घोलकर इसकी 100 मि.ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा को दिन में एक बार, 30 दिन तक लगातार धवल चूहों को दिया गया तथा इसका तुलनात्मक अध्ययन केवल दुग्ध अनुपान कराये गये चूहों के साथ किया गया। प्रतिदिन उनके शरीर भार, आहार व जलग्रहण के विवरण अंकित किए गए।

8. **पूवारासू**

अ) **चूहों में तीव्र विषाक्तता अध्ययन**

पूवारासू लेईचेन्दूरम औषध की 50, 100, 250, 1000, 2000 तथा 3000 मि.ग्रा./कि.ग्रा की मात्रा धवल चूहों को मुख द्वारा दी गई। इन प्राणियों का 72 घंटे तक उनपर होने वाले दुष्प्रभाव अथवा उनकी मृत्यु आदि के लिए निरीक्षण किया गया। इसे सभी मात्रा में दिये जाने पर इस औषध को विषाक्तता रहित पाया गया।

ब) **मूसों पर तीव्र विषाक्तता अध्ययन**

इस औषध की 50, 100, 200 तथा 600 मि.ग्रा./कि.ग्राम की मात्रा प्राणियों को दी गई। इस औषध को सभी मात्राओं में दिए जाने पर विषाक्तता रहित पाया गया। इस औषध की और अधिक मात्रा देकर प्राणियों पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है।

स) **चूहों में अल्प तीव्र विषाक्ता अध्ययन**

इस औषध को कार्बोक्सी मिथाईल सैल्यूलोज में घोलकर इसकी 100 तथा 1000 मि. ग्रा./कि.ग्रा. की मात्रा 30 दिन तक दी गई तथा इसका तुलनात्मक अध्ययन

नियंत्रित वर्ग समूह के साथ किया गया जिनको केवल अनुपान दिया जा रहा था। उनका प्रतिदिन शरीर भार, आहार तथा जल ग्रहण का विवरण अंकित किया गया। 31वें दिन इन प्राणियों को मार दिया गया और उनका हृदय रुधिर परीक्षण किया गया। इसके मुख्य अंगों को निकालकर उनका कोशा-विकृति विज्ञानीय तथा जीव-रासायनिक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

औषध मानकीकरण अनुसंधान

औषध मानकीकरण अनुसंधन

अनुसंधान के परिणाम चाहे वे निदान-चिकित्सात्मक हों अथवा प्रायोगिक, पूर्णतः विशुद्ध एवं प्रामाणिक औषधियों की सुलभता पर निर्भर करते हैं। निदान-चिकित्सात्मक एवं अन्य अनुसंधान कार्यक्रमों में प्रयुक्त औषधियों की गुणवत्ता एवं समरूपता को बनाए रखने के उद्देश्य से यह नितान्त आवश्यक है कि औषधियों के उपयुक्त मानक निर्धारित किए जाएं जिससे कि उपयुक्त औषधियां प्राप्त की जा सकें। अतएव मानकीकरण के क्षेत्र में अनुसंधान करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एकाकी औषधियों, निर्मित औषधियों, औषध निर्माण विधियों एवं विभिन्न प्रकार के औषध योगों के विश्लेषणात्मक मानक निर्धारित करने तथा इनसे संबद्ध अध्ययन करने के विषय पर प्राथमिकता दी गई।

औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, मद्रास, प्रारंभिक औषध मानकीरण अनुसंधान एकक, बंगलौर और प्रारंभिक औषध मानकीरण अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम के द्वारा औषध मानकीकरण किया जा रहा है।

यह अध्ययन एकाकी औषधियों जैसे ककिझम, पेयथि, अलिजिल विडई, अलिमुदक्करुथन, कुदसाप्पालाई, पेइपुदल, नीरड़ीमधु, कण्डुपरंगी, अमापाचारिषी इत्यादि पर किया गया। इसके साथ ही इन एकाकों ने राष्ट्रीय सिद्ध भेषज संहिता भाग-1 में सम्मिलित विभिन्न प्रकार की औषधियों का विश्लेषणात्मक मानक निर्धारण करने का कार्य भी किया है। इसके अतिरिक्त एककों ने एकाकी औषधियों जिनका प्रयोग औषध योगों के संघटकों के रूप में किया जाता है इसका भेषज अभिज्ञानीय तथा पादप-रसायन विज्ञानीय अध्ययन भी किया है।

(1) निम्नलिखित एकाकी औषधियों का विश्लेषणात्मक मानकीकरण अध्ययन किया यथा :—

1. मकिझम (पत्ते, फल, छाल एवं फूल) 2. पेयथी 3. अलिजिल विडई 4. पेयथ्थी (फिकस हिस्पीडा डी (फल) 5. कुडक्कुरुथन (तना, पत्ते) औ.मा.अनु.ए. (सि.) मद्रास 6. कर्कडगा श्रृंगी (कर्कटश्रृंगी) 7. कुदसाप्पालाई (कुटज) 8. पिपुडल (संपूर्ण पादप) 9. नीरदी मुत्थ, (बीज) 10. मुथियार कुन्थाल (संपूर्ण पौधा)

11. कण्डूपरगी (जड़) 12. आल्लि (संपूर्ण पौधा) 13. अम्मान पचारासी (संपूर्ण पौधा) प्रा.मा.अनु.ए. (सि.) म.

(2) **विश्लेषणात्मक मानक (भेषज संहिता मानक)**

1. पतिककल्पंम 2. कुवक्कुटोरी मत्तिराई 3. चिरकवकुरनम 4. चितिल चूर्णम 5. केठकेपिरक्कुतंमपु 6. सिन्टोलिनी

(3) **पादप रासायनिक अध्ययन**

1. कण्डुबरंगी 2. कट्टुमिलाकू (अप्रमाणित सिद्ध औषध)

3. किलियुरपत्ताई (अप्रमाणित सिद्ध औषध) 4. अडुतिनपिल्लई

राष्ट्रीय सिद्ध भेषज संहिता भाग-1 में सम्मिलित निम्नलिखित एकाकी औषधयों का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन कर उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया—

1. मरमंजल 2. निलाक्कुमिल 3. मरुक्कुराई 4. पयप्पुडल-औ.मा.अनु.ए. (सि.), मद्रास, 5. अल्लि 6. कंडुबरंगी 7. नीरडिमुथु 8. निलविला, प्रा.मा.अनु.ए. (सि.), म., 9. कुडसप्पलाई 10. पयकुमत्ती 11. नीरडीमुथुसु 12. कर्कटश्रृंगी 13. पेईपुडल 14. मुथीयर्कुन्थल-प्रा. मा. अनु. ए. (सि), म.।

वाङ्मय अनुसंधान

वाङ्मय अनुसंधान

वाङ्मय अनुसंधान कार्य वाङ्मय अनुसंधान और प्रलेखन विभाग (सिद्ध), मद्रास में किया जा रहा है। इस विभाग द्वारा मरुथुवा एलिया वेभक्कुमुरईगल का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया। यह पुस्तिका सामान्य घरेलू रोगों के उपचार में सहायक है।

अगस्तियार पंच काव्य निघण्टु—800 पुस्तक का सम्पादन कार्य पूर्ण किया जा चुका है। यह पुस्तक सिद्ध चिकित्सा के मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित है जो चिकित्सा एवं औषध निर्माण विज्ञान में सहायक है। 250 श्लोकों की व्याख्या का कार्य पूरा हो चुका है एवं संपादन का कार्य प्रगति पर है। अगस्तियार पुरनम-205 का टंकण एवं सुधार कार्य पुरा हो चुका है। संगमुनि विष वैद्यम—100 का अनुवाद कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। मचामुनि—800 पुस्तक को प्रकाशन के लिये लिया गया है जिसमें 385 श्लोकों के प्रूफ का सुधार कार्य किया जा चुका है।

प्रकाशन/संगोष्ठी

तालिका

प्रकाशन/संगोष्ठी

क्र.सं.	लेखक का नाम	शोधपत्र का शीर्षक	पत्रिका/संगोष्ठी	प्रकाशन की तिथि
1	2	3	4	5
1)	**निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान**			
1.	सुरेश, आर. आनन्दन, टी. शिवनन्दम्, जी. वेल्यूचामी, जी.	नायुरुवि कुज्मी तैलम की इरईपुनोई पर एक प्रायोगिक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका	प्रकाशन हेतु प्रेषित
2.	कृष्णमूर्ति, जे.आर. कलावती, के राव, कालामिमनी, एस. वेल्यूचामी, जी.	केचर कुट्टम की सिद्ध चिकित्सा	,,	हरिओम आश्रम ट्रस्ट गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर को प्रेषित
3.	थिरुनेवेकरसु, एस. गनपतिरमन, के. सुब्बालक्ष्मी, वी.	सिद्ध चिकित्सा पद्धति द्वारा वात व्याधि की निदान-चिकित्सा	जरनल ऑफ रयूमैटिज्म	प्रकाशन हेतु प्रेषित

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5
4.	जयकरन, आई.एस. मीनाक्षीनाथन, ई. गोपकुमार, के.	पाण्डुरोग में अन्नावेदी चेन्दूरम	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका	प्रकाशन हेतु प्रषित
5.	जयकरन, डी.एस. मीनाक्षीनाथन, ई. गोपकुमार, के.	कच्चिचल में पडिगालिगथुवर और अमाई ओडु पर्पम	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका	" " "
6.	आनन्दन, टी.	वलिनोईगल प्रकार के आमवात की सिद्ध औषधि द्वारा निदान-चिकित्सा मूल्यांकन	रोगों पर 10 वीं संगोष्ठी एम.एम.एल. सेन्टर	25 फरवरी, 1985
7.	शिवप्रकाशम, के. आनन्दन, टी. कलावती, के.राव. यशोदा, आर. वेल्यूचामी, जी.	त्रिफला चूर्णम् का प्रभाव ज्ञात करने हेतु निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका	प्रकाशन हेतु प्रेषित

तालिका क्रमश:

1	2	3	4	5
8.	शिवप्रकाशम, के. यशोदा, आर. आनन्दन, टी. कलावती, के. राव. वेल्यूचामी, जी.	मधुमेह रोग पर सिद्ध औषधि के प्रभाव का निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका	प्रकाशन हेतु प्रेषित
2)	**औषध वानस्पतिक अनुसंधान**			
9.	वेल्लादुरई, वी,	कुरोथोट्टी (ट्यूमफेटर दुन्डीफोलिया लिन) "वला मूल" का वानस्पतिक स्रोत्र	एंसिएंट साइन्स ऑफ लाइफ	प्रकाशन हेतु प्रेषित
3)	**रासायनिक अध्ययन**			
10.	नटराजन, आर, के रघोथमन, पी. वेल्यूचामी, जी.	पिसोनिया ग्रेंडिस लटचाई (क्ट्टाई कीरई) क रासायनिक अध्ययन	36वां आई. सी. ए. कांग्रेस, बंगलौर	9.11.1985
4)	**भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन**			
11.	बृन्दा, पी. शशिकला, ई.	मदन फल का वानस्पतिक एवं रासायनिक मानकीकरण	ए. आई. सी. ए. पी., बंगलौर	प्रस्तुति हेतु स्वीकृत

तालिका क्रमशः

1	2	3	4	5
12.	शशिकला, ई. वृन्दा, पी.	बंभौरी (विकोआ इंडिका) डी. सी.-ए. आदिवासी औषध का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन	आई. पी. सी. बंगलौर	प्रकाशन हेतु स्वीकृत
13.	शशिकला, ई. वृन्दा, पी. भीमराव, आर. पुरुषोत्तमन, के.के.	निकटनेथस अरबोरटरिस्टस के पत्तों और बीजों का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन	आई. एस. एच. एस.	23-26, फरवरी, 1985
14.	वृन्दा, पी. शशिकला, ई. भीमराव, आर.	पोगस्टेम हेइनौनस लिन पर भेषजगुनअभिज्ञानीय अध्ययन	—उपर्युक्त—	—उपर्यु—
5)	**भेषजगुणकर्म विज्ञान अध्ययन**			
15.	घोष, डी. तेजोमूर्ति, पी. वेल्यूचामी, जी.	गौरीचिन्तामणि सिद्ध औषधि का पीढ़ाहारी शोथजरोधी और विषाक्तता अध्ययन	एशियन कॉन्फ्रेन्स ऑफ फार्माकोलौजी	जनवरी, 1985

आभार

परिषद् का निदेशालय शासी-निकाय, वित्त-समिति एवं वैज्ञानिक सलाहकार समितियों के वर्तमान एवं निवर्तमान सदस्यों द्वारा की गई सेवाओं की अत्यधिक सराहना अंकित करते हुए, उनके द्वारा परिषद के कार्य संचालन में बहुमूल्य सहयोग, मार्गदर्शन और निरन्तर समर्थन देते रहने के लिए हार्दिक आभार प्रकट करता है।

परिषद उन विद्वानों और वैज्ञानिकों के प्रति भी कृतज्ञ है जिन्होंने उसकी सलाहकार समितियों एवं उप-समितियों की सदस्यता ग्रहण करने हेतु परिषद का निमन्त्रण स्वीकार किया और अनुसंधान योजनाओं के कार्य मूल्यांकन में अपना हार्दिक सहयोग और समर्थन प्रदान किया।

परिषद् इस अवसर पर भारत सरकार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का उसके निरन्तर समर्थन, सहायक दृष्ठिकोण और सहयोग के लिए धन्यवाद करती है, जिससे परिषद् को अनुसंधान क्षेत्र में अपने क्रिया-कलाप बढ़ाने में सहायता मिली और आशा करती है कि आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के समग्र विकास हेतु भविष्य में भी उनका निरन्तर समर्थन मिलता रहेगा।

परिषद अपने निवर्तमान अध्यक्ष श्री बी. शंकरानन्द को परिषद के विकास और उसकी उन्नति में उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और नेतृत्व के लिए हार्दिक धन्यवाद देती है।

परिषद का निदेशालय विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों एवं संबद्ध विज्ञानों के उन सभी वैज्ञानिकों एवं विद्वानों, विश्वविद्यालयों और सरकारी संस्थाओं जो इस परिषद के अनुसंधान कार्यक्रमों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबद्ध हैं, उनका तथा प्रमुख कार्यालय सहित सभी परियोजनाओं के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भी धन्यवाद करती है।